हमें तो मोहब्बत ले डूबेगा

सुबोध पाँडे

मेरा दोस्त आधा सेब मुँह में डालकर कहता है, "तो जाने दीजिए कोई और होंगी। आ जायँगे सिनेमा देखकर वे लोग।"

इस बातचीत के बाद मेरा दोस्त नाशपाती काटने में तल्लीन हो जाता है और मेरी पत्नी मायके जाने के लिए सामान बांधने में लग जाती है। थोड़ी देर के बाद उसकी सिसकियों की धीमी-धीमी आवाज मेरे दोस्त के कानों में पड़ती है और आप बड़ी प्रसन्नता और निश्चिन्तता से सान्त्वना देने लगे हैं :

"घबराइए नहीं भाभी, जीवन में ऐसा ही होता है।"

"भाड़ में जाय ऐसी जिन्दगी !"

"सम्भव है भाभी, मुझे धोखा हुआ हो।"

"नहीं जी ! मैं सब समझती हूँ; वह हैं ही ऐसे।"

"मान लीजिए कि ऐसे ही हैं भाभी, फिर भी उन्हें सन्मार्ग पर लाना आपका काम है।"

"यहाँ मैंने कोई स्कूल नहीं खोल रखा है।"

"भाभी, आप भी गजब करती हैं। आप ही ने उन्हें इतनी ढील दे रखी है, वरना वह यों उच्छृंखल न होते। सच कहता हूँ भाभी, जब तुम्हारी सूरत देखता हूँ तो कलेजा मुँह को आता है। कहने को तो वह मेरा दोस्त है, मगर मैं उसका यह अत्याचार नहीं देख सकता। मैं उसको हजार बार समझाता हूँ, लेकिन क्या करूँ

२१५
कहानी
२०७६३
१३.३.६८

कृश्न चन्दर

२१५
कहानी

२००६३
१३.३.६८

पुलिन्दे के नग

अखबारी ज्योतिषी
मेरा दोस्त
अखिल भारतीय हिरोइन्स कान्फ्रेन्स
सेठ जी
जनतन्त्र दिवस
साहब
मूँग की दाल
हिन्दी का नया कायदा
मंत्रियों का क्लब
बचनसिंह
बिल्ली और वजीर
हम तो मोहब्बत करेगा

अखबारी ज्योतिषी

जब से हिन्दुस्तानी राजाओं को पेन्शन मिली, राज-ज्योतिषियों और नाचने वालियों का भाव मन्द पड़ गया। इससे पहले नाचने वालियों और विशेषकर राज-ज्योतिषियों की रियासतों में बड़ी पूछ थी। राजा लोग इन्हें सिर-आँखों पर बिठाते थे और रेशमी चिलमन (परदा) की ओट से महारानियाँ इन्हें अपना हाथ दिखाती थीं—वे नरम और नाजुक हाथ जिनकी सुडौल और कोणाकार अँगुलियों पर नीलम, पुखराज, याकूत (माणिक) और लाल बदहशाँ चमकते थे। एक बार बचपन में मैंने भी अपना हाथ एक राज-ज्योतिषी को दिखाया था। राज-ज्योतिषी ने मेरा हाथ देखकर कहा था—"यह बालक बड़ा ज्ञानी होगा।" और मैंने राज-ज्योतिषी की मोटी तोंद, उसकी रेशमी अचकन और सोने के बटन देखकर सोचा था कि बड़ा होकर यदि मैं ज्ञानी हुआ तो इस राज-ज्योतिषी की तरह ज्ञान-ध्यान हासिल करूँगा, वरना जीने का कुछ मजा नहीं है।

अब मैं रेलवे में क्लर्क हूँ और मेरा सारा ज्ञान-ध्यान इसी में खर्च होता है कि किस तरह पुरानी फाइलों को छः महीने तक दबाये रखूँ और नई फाइलों को खोलने से इन्कार करता जाऊँ। यह बड़ा मुश्किल काम है। और मैं इसे करता ही रहता, लेकिन इस साल चूंकि महँगाई ने बिलकुल कमर तोड़ दी, इसीलिए मुझे रेलवे की

अखबार के कितने ग्राहक बढ़ाता है।"

मैंने कहा—"आप फ़िक्र न कीजिए। दूसरे सप्ताह में ही आपके अखबार की बिक्री पचास हज़ार न बढ़ जाय तो मेरा नाम पण्डित थपकीराम वसुन्धा नहीं कुछ और रख दीजिएगा।"

प्रधान सम्पादक पेंसिल के पिछले सिरे पर लगा हुआ रबर चबाते हुए बोले—"क्या आप रेस का ज्योतिष भी जानते हैं ?"

मैंने मेज पर से गीला स्पञ्ज उठाकर उसे खाते हुए जवाब दिया—"जी हाँ, जी हाँ, विधावा के स्वर्गीय महाराजा को मैं ही 'टिप' निकालकर दिया करता था। हद तो यह है कि 'रेसकोर्स' पर लोगों के अलावा खुद घोड़े मुझसे पूछने लग पड़े थे कि बताओ, मैं इस बार रेस जीतूँगा या नहीं! इसके अलावा मैं चाँदी, सोने, लोहे, तेल और रुई का ज्योतिष भी जानता हूँ।"

प्रधान सम्पादक ने खुश होकर कहा—"तब तो आप हमारे 'वाणिज्य और व्यवसाय' पृष्ठ के लिए भी उपयुक्त हो सकेंगे।"

"आपकी कृपा है", मैंने खुश होकर स्याही गले में उंडेल ली और होंठों को ब्लाटिंग पेपर से साफ करते हुए कहा।

शनिवार का दिन सर पर आ गया, पर मैंने तब तक अपनी रिपोर्ट तैयार करके प्रेस में नहीं दी थी। प्रधान सम्पादक ने दो-तीन बार याद दिलाई। मैंने कहा—"आप अखबार रोककर रखिए। मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। पूरा 'मैटर' तैयार होने में थोड़ी-सी

क्लर्की छोड़कर 'देशभक्त' अखबार में अखबारी ज्योतिषी के पद पर नौकर हो जाना पड़ा। आजकल हर बड़े दैनिक पत्र में एक ज्योतिषी है, जो सण्डे-के-सण्डे अखबार में ज्योतिष से हिसाब लगाकर अखबार के पाठकों के भाग्य का अनुमान लगाता है। इससे कांग्रेस और सोशलिस्ट अखबारों में ज्योतिषी नहीं हुआ करते, लेकिन पन्द्रह अगस्त के बाद इन लोगों को भी ज्योतिषियों की ज़रूरत पड़ गई। जब मैंने 'देशभक्त' अखबार का विज्ञापन देखा तो तत्काल अरज़ी दे दी, जो मंजूर भी हो गई। तीन सौ ज्योतिषयों में मैं ही प्रथम आया। दुर्भाग्य से मुझे इस निर्वाचन पर प्रसन्न नहीं होना चाहिए था; लेकिन सोचा कि जब बड़े राज-ज्योतिषी ने कहा था—'बेटा, बड़े होने पर ज्ञानी हों', इसलिए आज ज्ञानी बनने का अवसर हाथ आया है उसे क्यों छोड़ें; लगे हाथों इस काम को कर ही डालें और फिर रेलवे की क्लर्की के दिन-भर की घिस-घस के बाद मुश्किल से सत्तर-अस्सी रुपये मिलते हैं। इनसे क्या होता है? यहाँ हर माह साढ़े तीन सौ मिलेंगे और काम कुछ भी नहीं है। बस, प्रति सप्ताह सात दिन का भविष्य-फल तैयार करके अखबार में दे देना है, ताकि पढ़नेवाले उसे देखकर आगामी सप्ताह के लिए अपने भविष्य का अनुमान कर लें। बस यों समझिये कि हर महीने में सिर्फ चार भविष्य-फल और एक महीने के बाद पूरे महीने का मासिक भविष्य-फल खास तौर पर उन लोगों के लिए जो इस महीने में पैदा हुए हों।

मैंने अखबार के प्रधान सम्पादक से पूछा—"इसके सिवा और कोई काम भी होगा?"

प्रधान सम्पादक बोले—"पहले हम यह धन्धा नहीं करते थे; सिर्फ देश के लड़नेवाले सेवकों की खबरें छापते थे। अब वे लड़नेवाले ही नहीं रहे तो हम लोग क्या करें? इधर 'देश-सेवक' अखबार ने एक भारी ज्योतिषी रखा है, जिससे उस अखबार की बिक्री दस हजार बढ़ गई है। अब आप का काम देखते हैं कि यह हमारे

अखबार के कितने ग्राहक बढ़ाता है।"

मैंने कहा—"आप फिक्र न कीजिए। दूसरे सप्ताह में ही आपके अखबार की बिक्री पचास हजार न बढ़ जाय तो मेरा नाम पण्डित चपकीराम वसुन्धा नहीं कुछ और रख दीजिएगा।"

प्रधान सम्पादक पैंसिल के पिछले सिरे पर लगा हुआ रबर चबाते हुए बोले—"क्या आप रेस का ज्योतिष भी जानते हैं?"

मैंने मेज पर से गीता स्यम्त्र उठाकर उसे खाते हुए जवाब दिया—"जी हाँ, जी हाँ, बिधावा के स्वर्गीय महाराजा को मैं ही 'टिप' निकालकर दिया करता था। हद तो यह है कि 'रेसकोर्स' पर लोगों के अलावा खुद घोड़े मुझसे पूछने लग पड़े थे कि बताओ, मैं इस बार रेस जीतूँगा या नहीं। इसके अलावा मैं चाँदी, सोने, लोहे, तेल और रुई का ज्योतिष भी जानता हूँ।"

प्रधान सम्पादक ने खुश होकर कहा—"तब तो आप हमारे 'वाणिज्य और व्यवसाय' पृष्ठ के लिए भी उपयुक्त हो सकेंगे।"

"आपकी कृपा है", मैंने खुश होकर स्याही गले में उँड़ेल ली और होठों को ब्लाटिंग पेपर से साफ करते हुए कहा।

शनिवार का दिन सर पर आ गया, पर मैंने तब तक अपनी रिपोर्ट तैयार करके प्रेस में नहीं दी थी। प्रधान सम्पादक ने दो-तीन बार याद दिलाई। मैंने कहा—"आप अखबार रोककर रखिए। मैं कड़ी मेहनत कर रहा हूँ। पूरा 'मैटर' तैयार होने में थोड़ी-सी

पाले, हर तरह से लाभ-ही-लाभ है।

इस सप्ताह के छः दिनों में कारखानों में हड़ताल रहेगी, सातवाँ दिन रविवार का होगा, जिस दिन छुट्टी रहती है। लेकिन इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। स्टाक एक्सचेंज के बाहर घूमने वाले

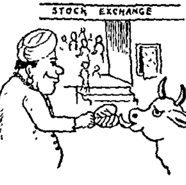

साँडों की पूजा करने से और उनके मुँह में तम्बाकूवाला पान डालने से यह संकट जाता रहेगा।

रेस के टिप् (लेखक—रेस का रसिया)

इस सप्ताह का 'लकी' दिन पाँचवाँ है इसलिए आँखें बन्द करके पाँचवीं 'रेस' खेलिये और इस पाँचवें नम्बर के घोड़े पर अपनी सारी जायदाद लगा दीजिए।

तीसरी और आठवीं 'रेस' बिलकुल न खेलिए, सब घोड़े और सब 'जाकी' निकम्मे हैं, और घोड़ों के मालिक एक-दूसरे से मिले हैं, पब्लिक को उल्लू बनायेंगे और लाखों रुपये लूट लेंगे।

चौथी रेस में ग्वालियर और कश्मीर दौड़ रहे हैं, लेकिन ये सफल नहीं हो सकते। जीत सेठ मोंदूलाल के घोड़े 'टामी' की होगी। और अगर, 'टामी' न जीता तो 'हरामी' तो अवश्य जीतेगा। दोनों खेलिए—'विन' और 'प्लेस'।

पहली और दूसरी 'रेस' के सब घोड़े अच्छे हैं। कोई किसी दूसरे को हरा नहीं सकता। आप कोई-सा घोड़ा खेल ...

सुसंवाद सुनेंगे।

मंगलवार—कोई गुप्त खजाना मिलेगा। बीवी से लड़ाई होगी। मैटिनी शो में आप एक खूबसूरत लड़की को देखेंगे, जिसके साथ उसका पति होगा और आप उससे कोई बात नहीं कर सकेंगे और कलेजा पकड़ेकर रह जायेंगे। रात को घर लौटते समय ट्राम का कण्डक्टर आपकी बेइज्जती करेगा। सुबह चाय के साथ आलू की भाजी मिलेगी; रात को उपवास होगा, मगर बीच के दिन का वक्त बड़े आनन्द में व्यतीत होगा।

बुधवार—आपका चेक 'डिसआनर' होगा। पुलिस हिरासत में रखेगी। शाम को आप की बीवी का भाई, यानी साला, जमानत देकर छुड़ाकर लायेगा। यह बहुत बुरा दिन है आपके लिए, लेकिन रात बहुत अच्छी गुजरेगी। घर में खाना भी अच्छा मिलेगा; सिर में मैं तेल की मालिश भी होगी। इस दिन यदि आप घर से बाहर न निकलें तो अच्छा है। वरना आपकी मरजी!

बृहस्पतिवार—राज-दरबार में सम्मान होगा। कोई नई प्रेमिका मिलेगी। दोपहर के समय आप बाजार में ताश लेने के लिये जायेंगे और फिर किसी मोटर के नीचे आकर मर जायेंगे।

शुक्रवार—बृहस्पतिवार को यदि आप नहीं मरे तो आज के दिन सुबह नाश्ते पर तीतर खायेंगे और अगर आप शाकाहारी हैं तो मूंग की दाल के कोफ्ते! अखबार में आप अवश्य कोई बुरी खबर पढ़ेंगे, जिसे पढ़कर आप को बड़ा सदमा होगा, जो एक 'पेग' ब्रान्डी से दूर हो जायेगा। इस दिन आपके छोटे बच्चे की टाँग टूट जायेगी। आपकी पत्नी एक नई साड़ी का तकाजा करेगी।

शनिवार—आप सवेरे राशन लेने जायेंगे, लेकिन दुकान बन्द मिलेगी; कपड़े के कूपन लेने जायेंगे, सेकिन दफ्तर बन्द रहेगा; रेस खेलने जायेंगे और बहुत रुपये हारकर आयेंगे। थर्ड क्लास का टिकट खरीदकर फर्स्ट में बैठेंगे और टिकट चेकर आकर चालान कर देगा, लेकिन आप पैसे अदा करके छूट जायेंगे। इस दिन पड़ोसियों

से लड़ाई का खतरा है, लेकिन हाथ जोड़ देने से यह खतरा जाता रहेगा। बिजनेस में लाभ होगा। दिल खोलकर सट्टा खेलिए और ब्लैक मार्केट कीजिये। यह दिन ब्लैक-मार्केट के लिये बहुत अच्छा है।

रविवार—आपको अचानक दफ्तर में बुला लिया जायेगा और अपनी छुट्टी के सारे प्रोग्राम खत्म हो जायँगे। आप दफ्तर में सड़ेंगे और घर पर बीवी-बच्चे आपको गालियाँ दे रहे होंगे। शाम को घर जाते हुए बच्चों के लिए दो केले, दो अमरूद और एक सन्तरा खरीदेंगे और कोई मनचला आपकी जेब कतर लेगा। लेकिन जो लोग रविवार के दिन जन्मे हों उनके लिये यह दिन अच्छा है। वे सौ साल तक जियेंगे। इससे पहले पचास बरस घर में और दफ्तर में और अगले पचास बरस पागलखाने में··।

'देश-भक्त' अखबार जब रविवार के दिन जब प्रकाशित हो कर बाजार में आया तो दस मिनट में सब बिक गया। एक कापी भी बाकी न रही। दूसरे दिन अखबार के दफ्तर के बाहर अखबार पढ़ने वालों की भीड़ जमा थी। वे लोग दफ्तर को आग लगाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन पुलिस की सहायता ने स्थिति पर काबू किया गया। प्रधान सम्पादक और अन्य सम्पादकों ने मिलकर मेरी पिटाई की। इसलिए यह सब अस्पताल में बैठा लिख रहा हूँ। आप समझते होंगे कि मेरा ज्योतिष गलत निकला। मेरा ज्योतिष शत-प्रतिशत सच निकला—इतना सच है कि लोग इसे सहन न कर सके। लोग अखबारी ज्योतिषी के पास सच्चाई ढूंढने नहीं जाते हैं। अपने झूठे सपने देखने जाते हैं। यही मैंने समझी थी।

हमारा स्कूल

[वही स्कूल है, जिसमें हम और आप पढ़ते रहे हैं। वही जाने-
पहचाने मास्टर जी हैं, जिनके तमाचे और छड़ियाँ हम लोग खाते
रहे हैं। वही अपने बचपन के प्यारे खेलण्डे (खिलाड़ो) लड़के हैं,
जिनके मुक्त मन हमेशा स्कूल की चहारदीवारी के बाहर भागते
रहते हैं। वही पुराने कमरे हैं, जिनकी दीवारों पर किसी ने सफेदी
नहीं कराई है। दीवारों पर बादशाह जार्ज पंजम और महारानी
मेरी और विक्टोरिया महारानी की तस्वीरें हैं। हर चीज बदस्तूर
ठी॰ उसी तरह नजर आती है जिस तरह आज से तीस साल पहले
थी। सिर्फ किताबें बदल गई हैं, क्योंकि देश स्वतन्त्र हो गया है।
पढ़ने और पढ़ाने वाले और उनके स्कूल का वातावरण वही
है, लेकिन किताबें बदल गई हैं। आइए, हम भी नया कोर्स पढ़ें।
यह पहली क्लास का कमरा है।]

मास्टर—बच्चो! यह हिन्दी की पहली किताब है। इसके पहले
पृष्ठ पर माँ बच्चे को गोद मे लिए बैठी है। पढ़ो माँ-बच्चे
को गोद में लिए बैठी है।

बच्चे—(दोहराते हुए) माँ-बच्चे को गोद में लिए बैठी है।

मास्टर—बच्चा अँगूठा चूस रहा है।

बच्चे बच्चा अँगूठा चूस रहा है।

एक बच्चा—मास्टरजी, बच्चा अँगूठा क्यों चूस रहा है ? दूध क्यों नहीं पीता ?

दूसरा बच्चा—(डपटकर) अरे, दूध कहाँ से आयेगा ? दूध आजकल रुपये का सेर बिकता है; वह भी आधा पानी और आधा दूध। अब बच्चा अगर रुपये का सेर दूध पियेगा तो बच्चे के माँ-बाप क्या खायँगे; तेरा सिर ?

तीसरा बच्चा—हाँ, ठीक है ! आजकल के बच्चे दूध नहीं पी सकते, सिर्फ अँगूठा चूस सकते हैं। ठीक है मास्टरजी !

दूसरा बच्चा—ठीक है मास्टरजी, पढ़ाइए ! माँ-बच्चे को गोद में लिए बैठी है।

चौथा बच्चा—माँ-बच्चे को गोद में कहाँ लिये बैठी रहती है ? हमारी माँ तो नहीं बैठती। दिन-भर काम करती रहती है। बच्चा खटिया पर पड़ा रहता है। मास्टरजी, कभी हमें सँभालना पड़ता है, कभी हमारे भाई को; कभी मँझली बहन को। मगर वह भी काम करती है ?

मास्टर—क्या काम करती है ?

चौथा बच्चा—मेरी माँ और मेरी बहन, वे दोनों मिल में काम करने जाती हैं। नया बच्चा घर पर रोता है। माँ सुबह खाना पकाती हैं, दिन-भर मिल में मजदूरी करती हैं। बच्चे को गोद में नहीं लेती। (चिल्लाकर) मास्टर जी, इस किताब में झूठ लिखा है। माँ-बच्चे को गोद में नहीं लेती। मास्टर जी, (आँखों में आँसू भरकर) मेरी माँ छोटे भाई को गोद में नहीं लेतीं !

मास्टर—चुप रहो !

पाँचवाँ बच्चा—(निहायत साफ-सुथरा)—यह झूठ बोलता है मास्टर जी ! माँ-बच्चे को गोद में लेती है। जब हम घर पर जाते है तो माँ हमे गोद में उठा लेती है। जब हम घर जाते हैं हमारी माँ हमसे बहुत प्यार करती है।

चौथा बच्चा—तुम्हारा घर कहाँ है ?

पाँचवाँ बच्चा—मालाबार हिल पर।

[एक कहकहा लगता है। सभी बच्चे हँसते हैं।]

मास्टर—चुप-चुप ! आगे पढ़ो ! (जल्दी-जल्दी पढ़ाता है) माँ-बच्चे को गोद में लिये बैठी है। बच्चा अँगूठा चूस रहा है। बाप भंग घोट रहा है।

सलीम—(खड़ा होकर)—मास्टरजी, एक सवाल है।

मास्टर—सलीम, तुम अपने बेहूदे सवालों के लिए पिछले साल फेल हो चुके हो; बैठ जाओ आगे पढ़ो।

सलीम—मास्टरजी, एक सवाल है। पिछले साल मैंने पढ़ा था, बाप हुक्का पी रहा है। इस साल वह भंग घोट रहा है। ऐसा क्यों है ?

तीसरा बच्चा—अबे बुद्धू ! किताब बदल गई है ना ! आजादी से पहले वह हुक्का पीता था ; अब भंग घोटता है।

चौथा बच्चा—अगले साल चरस पीयेगा।

मास्टर—नहीं बच्चो ! यह इसलिए बदल गया है कि मुसलमान हुक्का पीते हैं, हिन्दू भंग घोटते हैं।

तीसरा बच्चा—मेरा बाप तो मुसलमान नहीं है; फिर वह हुक्का क्यों पीता है ?

चौथा बच्चा—और मेरा बाप चार मीनार के सिगरेट पीता है। वह भी तो तम्बाकू है। मास्टरजी, इसमें होना चाहिए कि बाप चार मीनार के सिगरेट पी रहा है।

दूसरा—नहीं ! मेरा बाप बीड़ी पीता है। इसमें होना चाहिए, बाप बीड़ी पीता है।

पहला—मेरा बाप तो गाँजा पीता है।

सलीम—हमारा बाप अफीम खाता है।

चौथा—(पाँचवें से) क्यों बी, तुम्हारा बाप क्या पीता है ?

खालिस विलायती शराब पीता है।

[कहकहा—साथी बच्चे हँसते हैं।]

—चुप रहो! अब कोई बोला तो बेंत लगाऊँगा।

[बच्चे चुप हो जाते हैं।]

..र—(बच्चों से)—पढ़ो! माँ बच्चे को गोद में लिये बैठी है। बच्चा अँगूठा चूस रहा है। बाप भंग घोट रहा है। कपड़े अलगनी पर टँगे हैं। माँ बच्चे को नई कमीज पहना रही है।

सलीम—कहाँ से पहनाती है? हमारी तो एक साल से यही कमीज है।

मास्टर—चुप रहो।

सलीम—हत तो एक साल से यही फटी कमीज पहन रहे हैं। अब्बा से कहते हैं तो वह कहते हैं कि नई कमीज नहीं मिल सकती। बाजार में आजादी के बाद कपड़ा बहुत महँगा हो गया है।

मास्टर—(सलीम को तमाचे मारता है) चुप रहेगा कि नहीं?

सलीम—(रोकर)—यही एक फटी-पुरानी कमीज़ है। घर में अब्बा से कहते हैं तो वह मारते हैं; यहाँ कहते हैं तो मास्टर जी मारते हैं। हम कहाँ जायँ? बोलो, हम कहाँ जायँ? किससे फरियाद करें? किताबें नई हैं, लेकिन पाठ वही हैं, चाँटे वही हैं, कमीज वही है! (गुस्से में फटी कमीज और फाड़ देता है और मुट्ठी भींचकर कहता है) मुझे यह स्कूल नहीं चाहिए।

[चला जाता है। कमरे में सन्नाटा है।]

मास्टर—यह लड़का कभी पास नहीं हो सकता। आगे बढ़ो : माँ बच्चे को नई कमीज पहना रही है।

[कमरे में सन्नाटा है। कोई नहीं बोलता।]

मास्टर—(गुस्से में मेज पर हाथ मारकर) पढ़ो! पढ़ते क्यों नहीं? माँ बच्चे को नई कमीज पहना रही है और गीत गा रही है।

एक लड़का—(गाता है) मिलके बिछुड़ गईं अँखियाँ, बिछुड़ गईं अँखियाँ, बिछुड़ गईं अँखियाँ···

सब बच्चे—हाय रामा।

[घण्टी बजती है परदा गिरता है।]

दूसरी क्लास का कमरा

[बच्चे बैठे शोर मचा रहे हैं। गांधी की टोपी पहने हुए एक मास्टर अन्दर प्रवेश करता है। बच्चे खड़े हो जाते हैं।]

मास्टर—बच्चो ! आज से हम आजाद हैं। आज से हम अपने जीवन की नई पोशाक पहन रहे हैं।

एक लड़का—तभी आज आपने हैट उतार कर गांधी टोपी पहन ली है।

मास्टर—गुस्ताख ! कमरे से बाहर चले जाओ। (शान्ति) बच्चो ! आज से हिंदुस्तान आजाद है। आज हम अपना राष्ट्रीय गीत गायेंगे।

दूसरा लड़का—गॉड सेव दी किंग—जो आप रोज गवाते थे।

मास्टर—यह कौन बोला, मोहन ?

मोहन—जी, आप ही तो रोज यह गीत हमसे गवाते थे और हम नहीं गाते थे तो आप हमें मारते थे। ये देखिए, मार के निशान !

मास्टर—आगे आओ ! (उसे थप्पड़ मारता है) निकल जाओ कमरे से।

ही नहीं, तो गायेगा क्या ? क्यों सुरेश चटर्जी ?

सुरेश—(बंगाली में)—ग्रो आशो। (यानी हमारा टैगोर, हमारी बंगला भाषा और बंगाल दुनिया में सबसे ऊँचा है।)

मास्टर—अच्छा, तो 'वन्दे मातरम्' गाओ।

दूसरा लड़का—मगर उसके गाने से तो एक सम्प्रदाय को दुख पहुँचता है और हिन्दुस्तान में तो सभी सम्प्रदाय के लोग हैं।

मास्टर—अच्छा, तो 'महा गुजरात' गाओ।

बापकर—'महा गुजरात' क्यों मास्टरजी ? हमारा 'महा महाराष्ट्र' क्यों नहीं ?

शमशेरसिंह—'महा पंजाब' क्यों नहीं ?

श्याम पल्ली—'महा मद्रास' क्यों नहीं ?

गोविन्द जी—'महा यू० पी०' क्यों नहीं ?

मास्टर—(डपटकर)—तो कुछ मत गाओ ! बैठ जाओ।

[लड़के बैठ जाते हैं—सिवाय एक के। सन्नाटा छाया रहता है। मास्टर किताब खोल रहा है। किताब खोलकर कक्षा के विद्यार्थियों की ओर देखता है तो एक लड़के को खड़ा पाता है।]

मास्टर—तुम क्यों नहीं बैठे ? सुना नहीं ? बैठ जाओ !

चौथा लड़का—मास्टर जी, मैं पूछता हूँ, हम आजाद हो गए हैं न ?

मास्टर—हाँ बेटा !

चौथा लड़का—आजाद हो गए हैं न ? तो हम अपने लिए एक छोटा-सा राष्ट्रीय गीत नहीं बना सकते ? मास्टर जी, यह कैसी आजादी है ?

मास्टर—कमरे से बाहर चले जाओ !

चौथा लड़का—क्यों ?

मास्टर—मैं आजादी के खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता ! चले जाओ।

[लड़का चला जाता है। निस्तब्धता।]

मास्टर—किताबें खोलो। [सब लड़के किताबें खोलते हैं; लेकिन

शमशेरसिंह के पास कोई किताब नहीं। वह अपने साथी की पर से देखने की कोशिश कर रहा है। दूसरा लड़का नहीं देता। शोर होता है। मास्टर की दृष्टि पड़ती है।]

—क्यों शोर मचा रहे हो ?

मोहन—मास्टरजी, यह मेरी किताब से देखना चाहता है।

मास्टर—क्यों वे, तेरी किताब कहाँ है ?

शमशेरसिंह—मेरे पास किताब नहीं है।

मास्टर—क्यों नहीं है ?

शमशेरसिंह—(चुप)

मास्टर—मैं पूछता हूँ तुम्हारे पास किताब क्यों नहीं है ?

शमशेरसिंह—मैं शरणार्थी हूँ।

मास्टर—परेशान कर दिया इन शरणार्थियों ने। इनके पास पढ़ने के लिए किताब नहीं, पहनने के लिए कपड़ा नहीं खाने के लिए रोटी नहीं, रहने के लिए घर नहीं। सब-कुछ हमसे माँगते हैं ये भिखमंगे। समझ में नहीं आता सरकार इन्हें जेल में क्यों नहीं वन्द करती !

शमशेरसिंह—मेरे पास किताबें भी थी, कपड़े भी थे, रोटी भी थी, घर भी था। फिर आजादी आई, मेरे पास कुछ न रहा।

मास्टर—तो वापिस चले जाओ।

शमशेर सिंह—कहाँ चला जाऊँ मास्टरजी ! पहले उन्होंने मेरे बाप को मार डाला, फिर मेरी माँ को, फिर मेरी बड़ी वहन को, फिर मेरे बड़े भाई को, फिर वे मुझे मारने लगे कि सईद रोता-रोता मेरे गले से लग गया।

मास्टर—सईद कौन है ?

शमशेरसिंह—सईद एक मुसलमान लड़का है। वह मेरा दोस्त है। हम कभी ... अलग नहीं हुए। जब सईद के पिता मुझे मारने ... ेता-रोता मेरे गले से लग गया।

बोला—'इसे न मारो ! यह तो मेरा दोस्त है, मेरा भाई है।' और उन्होंने मुझे छोड़ दिया। और वे लोग हमारे घर का सामान ले गए। और मैंने अपनी सारी किताबें सईद को दे दीं। वह लेता नहीं था। मैंने कहा—'तुम रखो; जब मैं फिर आऊँगा तो तुमसे ले लूँगा।' बड़ी-बड़ी तसवीरों वाली किताबें थीं। बड़े अच्छे-अच्छे खिलौने थे। एक नन्ही-सी मोटर थी, जो चाबी से चलती थी। एक हवाई जहाज था। एक लकड़ी का घोड़ा था। लोहे की प्यारी-सी रेलगाड़ी थी। परियों की कहानियाँ थीं किताबों में, जो माँ मुझे रात के समय सुनाया करती थी। और अब मेरी माँ भी मेरे पास नहीं है। मेरा बाप भी नहीं है। मेरा भाई, मेरी बहन, सब मर गए हैं, और इस देश में आज़ादी आ गई है।

मास्टर—तो तुम अपने देश चले जाओ न ?

शमशेरसिंह—अब मेरा कौन देश है मास्टरजी, मुझे बतला दो। कोई मुझे बता दे कि मेरा कौन देश है। पहले मेरा एक देश था। उसे लोग पंजाब कहते थे। और सईद और मैं और हमारे माँ-बाप और गिरधारी और शमशेरसिंह और गुलाम मुहमद सभी लोग पंजाबी कहलाते थे। फिर आज़ादी आ गई और हमारे देश के टुकड़े-टुकड़े हो गए। मैं जहाँ का था वहाँ का न रहा। मैं किस देश का रहने वाला हूँ, मास्टरजी ?

मास्टर—(चुप)

शमशेरसिंह—बतलाइए मास्टरजी, मैं किस घर का रहने वाला हूँ ? मेरे कौन माँ-बाप हैं ? मुझे शिक्षा कौन देगा ? कौन मेरे माथे पर अपना प्यार से भरा हाथ रखेगा ? रात को जब मैं अकेला सड़क के किनारे धरती पर सोने लगता हूँ मुझे क्यों अपनी बहन के नन्हे-नन्हे हाथ याद आते हैं ? अपनी माँ की मीठी-मीठी लोरियाँ क्यों सुनाई देती हैं ? माँ ! हाय मेरी मैया ! (सिसकियाँ लेता है।)

मास्टर—यह सब कुछ हम नहीं जानते। अगर तुम्हें पढ़ना है तो अपनी किताबें साथ लाओ, वरना इस स्कूल से बाहर निकल जाओ।

[शमशेरसिंह चारों तरफ सहमा-सा ताकता है। लड़के सिर झुकाये बैठे हैं। फिर वह धीमे-धीमे सिसकियाँ लेता हुआ कमरे से बाहर निकल जाता है।]

[सन्नाटा; फिर एक लड़का किताबें बस्ते में बन्द करके उठता है।]

मास्टर—तुम कहाँ जा रहे हो?

लड़का—मैं वहाँ पढ़ूंगा जहाँ शमशेरसिंह पढ़ेगा। यह स्कूल अब हमारे लिए नहीं है।

[शमशेरसिंह और उसका साथी चले जाते हैं। फिर धीरे-धीरे दूसरे लड़के उठने लगते हैं और क्लास खाली हो जाती है। सिर्फ एक लड़का रह जाता है।]

मास्टर—जाने दो, सबको जाने दो! (लड़के की ओर देखकर) तुम बहुत अच्छे लड़के हो। क्या नाम है तुम्हारा?

लड़का—रमणिकलाल समनिकलाल बाराभाई।

मास्टर—तुम वाकई बहुत अच्छे लड़के हो। हम तुम्हारे पिताजी को पत्र लिखेंगे। क्या करते हैं वह?

लड़का—जी, वह सरकार के मिनिस्टर हैं।

[घण्टी बजती है। परदा गिरता है]

तीसरी क्लास का कमरा

शिक्षक—बच्चो, अब तुम बड़े हो गए हो। आज हम तुम्हें नागरिक जीवन का पहला पाठ पढ़ायेंगे। यह पाठ इसलिए और भी आवश्यक हो गया है कि अब तुम पराधीन नहीं रहे हो; स्वतन्त्र देश [illegible] न्त्र नागरिक हो। तुम्हारे उत्तरदायित्व बढ़ गए हैं [illegible]

लड़का—उ[illegible] कहते हैं, मास्टरजी?

शिक्षक—जैसे माँ-बाप का अपने बच्चों के लिए उत्तरदायित्व होता है कि वे उनका लालन-पालन करें, उन्हें पढ़ाएँ, लिखाएँ, उनकी देखभाल करें, उसी तरह हर नागरिक का अपने शहर के प्रति उत्तरदायित्व होता है। और इस उत्तरदायित्व को कर्तव्य समझकर पूरा करना हर नागरिक के लिए आवश्यक है।

पहला लड़का—समझ मे नहीं आया।

शिक्षक—मैं समझाता हूँ। देखो, मैं तुम्हारे घर से आरम्भ करता हूँ। तुम्हारा घर जिस गली में है। उस गली की सफ़ाई में तुम्हारा भी हिस्सा है। तुम्हारे घर की गली बहुत साफ़-सुथरी होनी चाहिए।

पहला लड़का—हमारा घर गली में नहीं है।

शिक्षक—तो फिर कहाँ है?

पहला लड़का—हमारा घर तो चाल मे है; बत्तीस नम्बर की चाल में, जो सर्कारियाल की बगल में है।

शिक्षक—तो तुम उस चाल को साफ़-सुथरा रखने मे मदद करो।

दूसरा लड़का—कैसे रखें? यहाँ तो सबके पास एक-एक कमरा है। उसी में खाना, उसी में सोना, उसी में रहना, उसी में बीमार पड़ना, उसी में स्कूल का काम करना, उसी में रिश्तेदारों का आना-जाना। बस एक कमरा तो है हमारे पास। सबके पास एक कमरा है। और एक कमरे में दस-बारह आदमी रहते हैं। हमारी चाल की पाँच मंजिलें हैं। पाँच मंजिलों में दो सौ कमरे हैं। मगर टट्टियाँ सिर्फ तीन हैं और एक नल। बोलो मास्टरजी, चाल कैसे साफ रखें? पीने को तो पानी मिलता नहीं, सफाई के लिए कहाँ से लायें?

शिक्षक—यह मैं नहीं जानता। जिस तरह हो, चाल को साफ रखना तुम्हारा कर्तव्य है। ख़ैर, एक तुम चाल मे रहते हो, सभी लड़के तो चाल मे नहीं रहते।

दूसरा लड़का—जी हाँ, मैं चाल में नहीं रहता।

शिक्षक—शावाश ! तुम कहाँ रहते हो ?

दूसरा लड़का—जी, मैं रिफ्यूजी-कैम्प में रहता हूँ।

शिक्षक—शावाश ! अब तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम अपने कैम्प को साफ रखने में मदद करो। वहाँ पर किसी प्रकार का कूड़ा-करकट नहीं होना चाहिए।

दूसरा लड़का—यह कैसे सम्भव है मास्टरजी ? जहाँ हमारा कैम्प है उसके पास ही कमेटी के मेहतर शहर का सारा कूड़ा-करकट आकर फेंकते हैं। वह बदबू आती है कि क्या बताऊँ ?

शिक्षक—मगर तुम अपने कैम्प की चहारदीवारी के अन्दर तो सफाई रख सकते हो। उसके कमरे ··

दूसरा लड़का—वहाँ कमरे नहीं हैं।

शिक्षक—उसकी टट्टियाँ हैं ?

दूसरा लड़का—वहाँ टट्टियाँ भी नहीं हैं।

शिक्षक—स्नान-गृह ?

दूसरा लड़का—वहाँ पानी का नल भी नहीं है मास्टरजी ! आप कैसी बातें करते हैं ? वहाँ हमारे सिर पर छत तक नहीं है।

शिक्षक—(झुँझलाकर) खैर, वह रिफ्यूजी-कैम्प तो एक अस्थायी जगह है···

दूसरा लड़का—हमें कई साल हो गए आये हुए।

शिक्षक—चुप रहो। मैं नागरिक जीवन की बात कर रहा हूँ—नागरिक घरों की, नागरिक मकानों की, नागरिक बच्चों की। रिफ्यूजी लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ। (एक और लड़के से) तुम कहाँ रहते हो जी ?

तीसरा लड़का—मैं कहीं नहीं रहता हूँ।

शिक्षक—यह कैसे हो सकता है ?

तीसरा लड़का—जी, मैं बिल्कुल सच कहता हूँ; मैं कहीं नहीं रहता हूँ। हमें कोई घर नहीं मिला। हम लोग अहमदाबाद के रहने

वाले हैं। मेरे पिताजी वहाँ 'आधाभाई साराभाई पूराभाई' फर्म मे क्लर्क हैं।

चौथा लड़का—वह हमारे पिताजी का फर्म है। हमारी कम्पनी में इसका बाप क्लर्क है।

तीसरा लड़का—(गुस्से से उसे देखता है और उसे घूंसा दिखाता है।)

शिक्षक—ए-ए लड़ो मत ! दगा-मस्ती न करो। क्यों व्यर्थ का गुस्सा दिखलाता है ?… अच्छा, बोलो।

तीसरा लड़का—अब मेरे पिताजी की बदली हो गई है। हम लोग अहमदाबाद से अपना मकान छोड़कर यहाँ चले आए है। अब यहाँ पर हमें कोई जगह नही मिलती। और अगर मिलती है तो वे चार हजार, छ. हजार, दस हजार तक पगड़ी मांगते हैं। मेरे पिताजी को सिर्फ़ साठ रुपये तनख्वाह मिलती है। पगड़ी कहाँ से दें ? पहले हम पिताजी के एक दोस्त के यहाँ रहते थे; मगर अब उसने भी जवाब दे दिया।

शिक्षक—तो अब कहाँ रहते हो ?

तीसरा लड़का—कहाँ रहते हैं ! कहीं नहीं रहते। सड़क पर पड़े हैं। एक पेड़ के नीचे सोते हैं। वहीं खाना पकाते हैं। पुलिस वाले आकर धमकाते हैं तो वहाँ से उठकर चले जाते हैं और किसी दूसरी सड़क पर किसी दूसरे दरख्त के नीचे बैठ जाते हैं। कहाँ जायें मास्टरजी ?

शिक्षक—जहाँ तुम्हारा जी चाहे। अब तुम बिल्कुल आजाद हो।

[लड़के हँसते हैं।]

शिक्षक—चुप ! चुप ! शहर की सफाई नागरिक जीवन का पहला सिद्धान्त है। अगर शहर में सफाई न होगी तो बीमारी फैलेगी, लोग मरेंगे, शहर तबाह होगा। इसलिए हर शहर में म्युनिसिपल कमेटी बनाई जाती है, ताकि वह सफाई रखे। लेकिन इस काम में नागरिक बहुत मदद कर सकते हैं।

गली और गली से बाजार बनता है। बाजार से , मार्केट से कारखाने और कारखानों से शहर बनता। जो व्यक्ति अपने घर की सफाई में हिस्सा लेता है। वह मानो पूरे शहर की सफाई में हिस्सा लेता है। तुममें से जो लड़का घर की सफाई में हिस्सा लेता है वह हाथ ऊँचा करे।

[कुछ हाथ ऊँचे हो जाते हैं।]

शिक्षक—(हाथ उठाने वाले एक लड़के से)—तुम्हारा नाम ?

लड़का—झोहरचन्द आधाभाई साराभाई पूराभाई।

शिक्षक—तुम्हारा मकान कहाँ है ?

झोहरचन्द—हमारे पास मकान नहीं है, फ्लैट है।

शिक्षक—फ्लैट कहाँ है ?

झोहरचन्द—नये फैन्सी रोड पर। उसमें आठ कमरे हैं, छः गुसलखाने और छः टट्टियाँ और किचन हैं।

शिक्षक—उसमें कितने लोग रहते हैं ?

झोहरचन्द—दो।

शिक्षक—केवल दो ?

झोहरचन्द—जी हाँ ! मैं और मेरे पिताजी। वैसे तो और भी लोग हैं, मगर वे हमारे नौकर हैं।

शिक्षक—कितने नौकर हैं ?

झोहरचन्द—चार नौकर हैं और नर्स है मेरे लिए।

तीसरा लड़का—भई, तुम्हारे पास आठ कमरे हैं, तो एक कमरा हमें दे दो। हम लोग तुम्हारे बाप की फर्म में नौकर हैं।

झोहरचन्द—नहीं, नहीं ! पिताजी कहते हैं, हमारे यहाँ क्लर्क-पेशा लोग नहीं रह सकते।

शिक्षक—(तीसरे लड़के से)—चुप रहो ! बैठ जाओ ! हाँ झोहरचन्द आधाभाई साराभाई पूराभाई, तो तुम अपने मकान की सफाई में हिस्सा लेते हो ?

झोहरचन्द—जी हाँ ! मैं अपने कमरे की देख-भाल खुद करता हूँ।

नर्स मदद जरूर करती है और नौकर गलीचा वगैरह भी साफ करता है और वेकम क्लीनर से भी काम लिया जाता है, मगर मैं अपने कमरे की सफाई एक तरह से खुद करता हूँ; किताबें खुद रखता हूँ; तसवीरें खुद झाड़ता हूँ, बिजली का पंखा खुद चलाता हूँ, खुद ही बन्द कर देता हूँ।

शिक्षक—शाबाश! शाबाश!

मोहनचन्द—सप्ताह में तीन बार अपनी मेज़ मैं खुद साफ करता हूँ। सप्ताह मे दो बार वाश बेसिन स्वयं धोता हूँ। एक बार गुसलखाने में मैंने पानी का नल खुला छोड़ दिया तो नर्स ने मुझे बड़ी डाँट पिलाई। उस दिन के बाद मैंने नहाकर कभी नल खुला नहीं छोड़ा।

शिक्षक—शाबाश! शाबाश! तुम बहुत अच्छे लड़के हो। हम तुम्हारे पिताजी को पत्र लिखेंगे।

नईम—एक खत हमारे अब्बाजी को भी लिख दीजिए न!

शिक्षक—तुम भी घर की सफाई में मदद करते हो?

नईम—मदद करना क्या साहब, सारे घर की सफाई मैं ही किया करता हूँ।

शिक्षक—तुम्हारे घर मे कितने कमरे हैं?

नईम—बारह।

शिक्षक—बारह कमरे हैं? कहाँ रहते हो?

नईम—नवाब ऑफ घसियारा-पैलेस में।

शिक्षक—बड़ी अच्छी शिक्षा दी है तुम्हें नवाब साहब ने, मगर आश्चर्य होता है यह सुनकर कि तुम बारह कमरे खुद साफ करते हो।

नईम—जी हाँ, हर रोज साफ करता हूँ—सुबह और शाम।

शिक्षक—सुबह भी और शाम भी?

नईम—जी हाँ! सुबह छ: बजे उठकर कमरे साफ करता हूँ—आठ बजे तक। फिर नहा-धोकर स्कूल आता हूँ। स्कूल से जाने

के बाद फिर कमरे साफ करता हूँ और खाना खाकर सो जाता हूँ।

शिक्षक—तो तुम बहुत थक जाते होगे ?

नईम—जी हाँ, बहुत थक जाता हूँ। पहले दो-तीन कमरे तो आसानी से हो जाते हैं। बाद में पसीना आने लगता है और जब बारहवें कमरे पर पहुँचता हूँ तो बिल्कुल चूर-चूर हो जाता हूँ।

शिक्षक—तो तुम इतने कमरे साफ न किया करो; कम किया करो।

नईम—कम करूँ तो नवाब साहब मुझे पीटते हैं।

शिक्षक—तुम्हें पीटते हैं ? यह तो बहुत बुरी बात है। मैं समझता हूँ कि वह तुम्हें नागरिक जीवन का सिद्धान्त सिखा रहे हैं। मगर बारह कमरे साफ करवाना और वह भी एक छोटे-से लड़के से, यह ज्यादती है। मैं उन्हें अवश्य पत्र लिखूँगा कि वह अपने बेटे के साथ सरासर अत्याचार कर रहे हैं।

नईम—मैं नवाब साहब का बेटा नहीं हूँ; उनके खानसामा का लड़का हूँ। (निस्तब्धता) मास्टरजी, आप खत में क्या लिखेंगे ?

शिक्षक—(गुस्से में) निकल जाओ।

[घण्टी बजती है। परदा गिरता है।]

चौथी क्लास का कमरा

मास्टर—बच्चो ! आज हम तुम्हें भारत का इतिहास पढ़ायेंगे। हमारा देश सदियों की दासता के बाद स्वतन्त्र हुआ है।

पहला लड़का—कितनी सदियों के बाद ?

मास्टर—लगभग दो सौ साल के बाद।

पहला लड़का—लगभग क्यों ? ठीक-ठीक नहीं बता सकते आप ? नहीं बताइए !

मास्टर—मोहन, तुम फौरन कमरे से बाहर चले जाओ।

[मोहन चला जाता है।]

मास्टर— स्वतन्त्र भारत का इतिहास पढ़ना चाहिए

और उससे बहादुरी, वीरता, साहस, सचाई, नेकी आदि सद्गुण, जिनसे महान् राष्ट्र का निर्माण होता है, सीखने चाहिएँ।

दूसरा लड़का—जी, क्या हम एक महान् राष्ट्र नहीं है?

मास्टर—महान् राष्ट्र तो नहीं हैं बन रहे हैं।

दूसरा लड़का—कैसे नहीं हैं हम? महात्मा गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल जैसे बड़े-बड़े नेता यहाँ हुए और हैं। इतने बड़े नेताओं का राष्ट्र महान् न होगा?

मास्टर—बड़े और महान् नेताओं से ही राष्ट्र महान् नहीं बनता।

दूसरा लड़का—मास्टरजी, आप विद्रोह फैला रहे हैं।

मास्टर—क्या कहते हो?

दूसरा लड़का—*आप खतरनाक बातें कर रहे हैं।*

मास्टर—अरे!

दूसरा लड़का—आप कम्युनिस्ट हैं।

मास्टर—तुम घास तो नहीं खा गए? मैं तो एक मामूली स्कूल मास्टर हूँ।

दूसरा लड़का—मैं कुछ नहीं जानता। मैं पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगा कि मास्टर जी हमें शासन के खिलाफ उलटी-सीधी बातें पढ़ाते हैं। मैं अभी जाता हूँ।

मास्टर—अरे, बैठ भी! कहाँ जाता है? बैठ, बैठ। अरे देख, मिठाई खायेगा?

दूसरा लड़का—जी नहीं! मैं सीधा थाने जाता हूँ, कहता हूँ—मास्टरजी रिश्वत भी देते थे। मिठाई खिलाने को कहते थे।

मास्टर—अच्छा बाबा! योन तो सही, आखिर तू क्या चाहता है?

दूसरा लड़का—आप कहें कि भारतवासी बड़ी जाति और भारत महान् राष्ट्र है।

मास्टर—भारतवासी बड़ी जाति है।

दूसरा लड़का—बहुत बड़ी जाति है!

मास्टर—बहुत बड़ी जाति है।

मास्टर—तो फिर क्या होता है वहाँ ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

छठा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था। अब हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस बुला ली जायगी।

चौथा लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिए लड़ रहे हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फ़ैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है।

मास्टर—हाँ!

चौथा लड़का—तो यह फ़ैसला लड़ाई के बगैर भी हो सकता था।

मास्टर—कैसे पूछ लिया जाय ? वहाँ हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं।

चौथा लड़का—तो इससे क्या होता है ? दुश्मन ले जायँ कश्मीर को; हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों लड़ रहे हैं हम कश्मीर में ? लड़ने दें कश्मीरियों को। वे स्वयं ही अपने भाग्य का फ़ैसला कर लेंगे।

मास्टर—वास्तव में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए बड़ा महत्त्व है।

तीसरा लड़का—तो फिर इस बात की घोषणा होनी चाहिए। दुनिया से साफ कह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और बाकी सब बातें गलत हैं।

मास्टर—तुम इतिहास नहीं समझते।

तीसरा लड़का—आप समझा दीजिए।

मास्टर—तो फिर सुनो—आजकल हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में लंका…

तीसरा लड़का—लंका भी तो एक ज़माने में हिंदुस्तान का हिस्सा

दूसरा लड़का—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं !
मास्टर—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं ।
"सरा लड़का—ठीक है । अब आप पढ़ाइये (लड़का बैठ जाता है ।)

[मास्टरजी रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछते हैं और फिर से एक नक्शा उठाकर दीवार पर टांग देते हैं । फिर खांसकर हैं ।]

मास्टर—यह स्वतन्त्र भारत का नक्शा है । इसकी सीमायें देखिए ।
तीसरा लड़का—यह तो कुछ कम मालूम होता है । पुराने नक्शे में हिन्दुस्तान इससे अधिक था ।
चौथा लड़का—हाँ, अब आजादी मिल गई है, इसलिए सीमायें कम हो गई हैं ।
पांचवां लड़का—मास्टरजी, क्या हमें पूरी आजादी मिल गई है ?
मास्टर—पूरी तो नहीं; करीब-करीब पूरी समझो ।
पांचवां लड़का—तो जब पूरी आजादी मिल जायगी तो ये सीमाएँ और भी कम हो जायँगी ?
छठा लड़का—जी हाँ ! ज्यों-ज्यों आजादी बढ़ती है, नक्शा कम होता जाता है ।
मास्टर—चुप रहो ।
छठा लड़का—बहुत अच्छा जनाब !
मास्टर—अच्छा, अब मैं इसकी सीमाओं का वर्णन करता हूँ । सुनो, उत्तर में कश्मीर...
छठा लड़का—कश्मीर क्यों ? कश्मीर तो हिन्दुस्तान में है ।
मास्टर—हाँ, है तो सही, मगर अस्थायी रूप से । अभी यह निर्णय नहीं हुआ है कि कश्मीर भारतवर्ष में रहेगा या बाहर चला जायेगा ।
छठा लड़का—मगर वहाँ तो हमारे सिपाही लड़ रहे हैं और रोज लाखों रुपये खर्च होते हैं आक्रमणकारियों को मार भगाने के लिए ।

मास्टर—तो फिर क्या होता है वहाँ ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

छठा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था। अब हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस बुला ली जायगी।

चौथा लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिए लड़ रहे हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है।

मास्टर—हाँ !

चौथा लड़का—तो यह फैसला लड़ाई के बगैर भी हो सकता था।

मास्टर—कैसे पूछ लिया जाय ? वहाँ हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं।

चौथा लड़का—तो इससे क्या होता है ? दुश्मन ले जायें कश्मीर को, हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों लड़ रहे हैं हम कश्मीर में ? लड़ने दें कश्मीरियों को। वे स्वयं ही अपने भाग्य का फैसला कर लेंगे।

मास्टर—वास्तव में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए बड़ा महत्व है।

तीसरा लड़का—तो फिर इस बात की घोषणा होनी चाहिए। दुनिया से साफ कह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और बाकी सब बातें गलत हैं।

मास्टर—तुम इतिहास नहीं समझते।

तीसरा लड़का—आप समझा दीजिए।

मास्टर—तो फिर सुनो—आजकल हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में लंका…

तीसरा लड़का—लंका भी तो एक जमाने में हिन्दुस्तान का हिस्सा था।

दूसरा लड़का—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं !

मास्टर—दुनिया की सबसे बड़ी जाति हैं ।

दूसरा लड़का—ठीक है । अब आप पढ़ाइये (लड़का बैठ जाता है ।)

[मास्टरजी रूमाल से चेहरे का पसीना पोंछते हैं और फिर से एक नक्शा उठाकर दीवार पर टाँग देते हैं । फिर खाँसकर ।]

—यह स्वतन्त्र भारत का नक्शा है । इसकी सीमायें देखिए ।

लड़का—यह तो कुछ कम मालूम होता है । पुराने नक्शे में हिन्दुस्तान इससे अधिक था ।

लड़का—हाँ, अब आजादी मिल गई है, इसलिए सीमायें कम हो गई हैं ।

लड़का—मास्टरजी, क्या हमें पूरी आजादी मिल गई है ?

—पूरी तो नहीं; करीब-करीब पूरी समझो ।

वाँ लड़का—तो जब पूरी आजादी मिल जायगी तो ये सीमाएँ और भी कम हो जायँगी ?

लड़का—जी हाँ ! ज्यों-ज्यों आज़ादी बढ़ती है, नक्शा कम होता जाता है ।

र—चुप रहो ।

लड़का—बहुत अच्छा जनाब !

—अच्छा, अब मैं इसकी सीमाओं का वर्णन करता हूँ । सुनो, उत्तर में कश्मीर···

लड़का—कश्मीर क्यों ? कश्मीर तो हिन्दुस्तान में है ।

—हाँ, हैं तो सही, मगर अस्थायी रूप से । अभी यह निर्णय नहीं हुआ है कि कश्मीर भारतवर्ष में रहेगा या बाहर चला जायेगा ।

छठा लड़का—मगर वहाँ तो हमारे सिपाही लड़ रहे हैं और रोज लाखों रुपये खर्च होते हैं आक्रमणकारियों को मार भगाने के लिए ।

मास्टर—तो फिर क्या होता है वहाँ ? लड़ाई के बाद लोगों से पूछा जायेगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं या बाहर जाना चाहते हैं ?

छठा लड़का—कश्मीर तो सदा ही से हिन्दुस्तान में था। अब हिन्दुस्तान के रहने वालों से यह पूछा जायगा कि वे हिन्दुस्तान में रहना पसन्द करते हैं या नहीं ? और यदि उन्होंने पसन्द नहीं किया तो क्या होगा ?

मास्टर—तो सेना वापस बुला ली जायगी।

चौथा लड़का—तो मतलब यह कि हम इसलिए लड़ रहे हैं कि कश्मीर की जनता लड़ाई के बाद यह फैसला कर सके कि वह हिन्दुस्तान में रहना चाहती है या बाहर जाना चाहती है।

मास्टर—हाँ।

चौथा लड़का—तो यह फैसला लड़ाई के बगैर भी हो सकता था।

मास्टर—कैसे पूछ लिया जाय ? वहाँ हमारे दुश्मन जो मौजूद हैं।

चौथा लड़का—तो इससे क्या होता है ? दुश्मन ले जायें कश्मीर को, हमें तो कोई लाभ है नहीं कश्मीर से।

तीसरा लड़का—नहीं है तो क्यों लड़ रहे हैं हम कश्मीर में ? लड़ने दें कश्मीरियों को। वे स्वयं ही अपने भाग्य का फैसला कर लेंगे।

मास्टर—वास्तव में बात यह है कि कश्मीर का भारत के लिए बड़ा महत्व है।

तीसरा लड़का—तो फिर इस बात की घोषणा होनी चाहिए। दुनिया से साफ कह देना चाहिए कि कश्मीर हिन्दुस्तान का है और बाकी सब बातें गलत हैं।

मास्टर—तुम इतिहास नहीं समझते।

तीसरा लड़का—आप समझा दीजिए।

मास्टर—तो फिर सुनो—आजकल हिन्दुस्तान की सीमा यह है—उत्तर में कश्मीर, दक्षिण में लंका…

तीसरा लड़का—लंका भी तो एक जमाने में हिन्दुस्तान का हिस्सा था

मास्टर—हाँ, लेकिन अब वह स्वतन्त्र है।
तीसरा लड़का—यानी अपने ही देश से स्वतन्त्र है। बहुत खूब !
मास्टर—तुम बातें मत करो। जो मैं कहता हूँ सुनते जाओ।
तीसरा लड़का—बहुत अच्छा जनाब !
मास्टर—इसके पश्चिम में पश्चिमी पंजाब और पूर्व में पूर्वी बंगाल।
तीसरा लड़का—पश्चिम में पंजाब है, पूर्व में बंगाल है।
मास्टर—नहीं पश्चिमी पंजाब है इस तरफ और उस तरफ पूर्वी बंगाल।
चौथा लड़का—लेकिन पहले पंजाब तो इस नक्शे में शामिल था और बंगाल भी सारा-का-सारा।
मास्टर—हाँ, मगर अब आजादी आ गई है। पंजाब दो हो गए हैं एक पश्चिमी पंजाब, एक पूर्वी पंजाब। यही हाल बंगाल का हुआ है।
चौथा लड़का—लेकिन पंजाब तो दो नहीं थे; बंगाल भी एक ही था—एक भाषा, एक लोग, एक राष्ट्र, एक वेश-भूषा एक लोक संस्कृति, एक लोक-कथायें, एक लोक-गीत !
मस्टर—नहीं, अब ये लोग दो जातियों में, दो राष्ट्रों में बँट गए हैं—पूर्वी पंजाबी और पश्चिमी पंजाबी; इसी तरह पूर्वी बंगाली और पश्चिमी बंगाली।
चौथा लड़का—तो इस तरह उत्तरी और दक्षिणी बिहारी और उत्तर प्रदेश की जातियाँ भी बन सकती हैं। यानी जाति और राष्ट्र क्या हुए भूगोल का नक्शा हो गया।
मास्टर—तुम्हारी तो शंका करने की आदत है।
चौथा लड़का—साहब, आप ही ने तो कहा था कि खूब शंकायें किया करो; इससे समस्या के सभी पहलुओं पर रोशनी पड़ती मगर यहाँ तो अँधेरा बढ़ता ही जाता है। खैर, आगे बताइये।
मास्टर—आगे क्या बताऊँ, खाक ! तुम लोग सुनते ही नहीं हो। देखो, अब कोई बोला तो इस हण्टर से खाल उधेड़ दूँगा।

आजादी का यह मतलब नहीं कि जो जी में आये बके चले जाओ। तुम लोग विद्यार्थी हो, बहुत-सी बातें नहीं जान सकते। हमसे सीखो।

[चौ]था लड़का—बहुत अच्छा सर !

[मा]स्टर—तो अच्छी तरह से जान लो कि ये हैं स्वतन्त्र भारत की सीमाएँ।

[पा]चवाँ लड़का—मास्टरजी, तो इस कमरे में बादशाह जार्ज पंचम और विक्टोरिया महारानी की तसवीरें क्यों टँगी हुई हैं। यहाँ तो महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू और वल्लभभाई पटेल की तसवीरें होनी चाहिए।

मास्टर—बात तो ठीक है, बेटा! मगर बात वास्तव में यह है कि हम लोग अभी तक एक विशेष रूप में इगलैण्ड के सम्राट् की प्रजा हैं।

पाँचवाँ लड़का—ऐसा क्यों? क्या हमारे सम्राट् जवाहरलाल नेहरू नहीं हैं?

मास्टर—नहीं बेटा! और अब सम्राटों का शासन नहीं होगा। सच्ची आज़ादी में तो जनवादी शासन होता है।

पाँचवाँ लड़का—जनवादी शासन किसे कहते हैं?

मास्टर—यही—सर्वसाधारण जनता का शासन। ऐसा शासन जिसमें तुम लोग, तुम्हारे माता-पिता, काम करने वाले लोग, क्लर्क, किसान, मजदूर, नौकरी पेशा, कर्मचारी, दुकानदार—सभी सम्मिलित होते हैं।

पाँचवाँ लड़का—तो अपने लोगों में तो ये लोग शामिल नहीं, फिर आज़ादी के बाद इन लोगों की तसवीरें क्यों यहाँ पर हैं? [illegible] तसवीरें उतार दीजिए। यहाँ हम अपने [illegible] लगायेंगे।

[सहसा 'नहीं सर ! हां सर !' का शोर-गुल बढ़ता जाता है। बच्चे उठकर उन तसवीरों को उतार देते हैं और उनकी जगह बड़े-बड़े नेताओं की तसवीरें लगा देते हैं। मास्टरजी नई तसवीरें देखकर मुस्कराने लगते हैं।]

लड़के—आजाद हिन्दुस्तान ज़िन्दाबाद !

जय हिन्द !

जवाहरलाल नेहरू ज़िन्दाबाद !

वल्लभ भाई पटेल ज़िन्दाबाद !

एक लड़का—जम्मन ज़िन्दाबाद !

[सब लड़के चुप रहते हैं।]

मास्टर—अरे, यह जम्मन कौन है ?

जम्मन का बेटा—मेरे पिताजी थे मास्टरजी ! वह भिण्डी बाजार के नाके पर मोची का काम करते थे, मास्टरजी ! देखिए, यह उनकी तसवीर है। इसे भी यहाँ लटका दीजिए।

मास्टर—अरे, पागल है तू ?

जम्मन का बेटा—नहीं मास्टरजी ! इसे ज़रूर टाँग दीजिए। मेरे पिताजी ने भी आज़ादी के लिए जान दी है।

मास्टर—अरे बेवकूफ ! ऐसे तो हज़ारों आदमियों ने जानें दी हैं। सबकी तसवीरें यहाँ थोड़े ही टाँग सकते हैं ?

जम्मन का बेटा—लेकिन वह मेरे पिताजी थे, मास्टरजी ! वह एक गरीब मोची थे। हम लोग बड़ी मुश्किल से अपना पेट पालते थे। वही हमारा सहारा थे और वह आजादी के लिए मर गए। मास्टरजी, अमीर आदमी के लिए मर जाना आसान होता है, गरीब आदमी का मरना मुश्किल होता है। मास्टरजी, यह तसवीर जरूर टाँग दीजिए यहाँ।

मास्टर—नहीं, यह तसवीर इतने बड़े लीडरों के साथ नहीं लगाई जा सकती।

जम्मन का बेटा—वह मेरे पिताजी थे मास्टरजी ! वह बहुत

गरीब थे। उन्होंने जीवन-भर जूते सिये। और कांग्रेस और मुस्लिम लीग और सोशलिस्ट पार्टी न जाने क्या-क्या, वह हर पार्टी के जल्सों में जाकर वालंटियर बन जाते थे और लोगों को पानी पिलाते थे। और सुबह से शाम तक काम करते थे। कहते थे, यह पुण्य का काम है। और हम उन लोग दिनों अक्सर भूखे रहा करते थे।

ास्टर—(तसवीर फाड़कर फेंकता है।) यह तसवीर यहाँ नहीं लगाई जा सकती।

म्मन का बेटा—आज दूसरी बार मेरे पिताजी को गोली लगी है। पहली बार उन्हें गोली भिण्डी बाजार में लगी, जब जहाजी मल्लाहों ने हड़ताल की थी और बम्बई के सभी नागरिकों ने उनका साथ दिया था और गोरे गोलियाँ बरसाते हुए भिण्डी बाजार में निकल आए थे। जब नौसैनिकों ने आजाद हिन्दुस्तान के नारे लगाये तो मेरे पिताजी भी अपना हथौड़ा उठाकर उनमें सम्मिलित हो गए। और जब गोरों ने गोलियाँ चलाई तो मेरे पिताजी ने माफी नहीं माँगी, उन्होंने पीठ नहीं दिखाई, वे भागे नहीं मास्टरजी! उन्होंने अपने बच्चों का खयाल नहीं किया, उन्होंने हमारी भूख और उपवासों के बारे में नहीं सोचा, हमारे नंगे शरीरों का खयाल नहीं किया। उन्होंने हँसते-हँसते हथौड़ा ऊपर उठाया और बढ़कर गोरों की गोली के वार को अपनी छाती पर रोका। वह पहली गोली थी जो मेरे पिताजी के सीने में लगी; यह दूसरी गोली है जो आज उनकी तसवीर को फाड़कर उनके सीने पर चलाई गई है। (कुछ लड़के तसवीर के टुकड़े इकट्ठे कर रहे हैं। वे तसवीर को ढंग से चिपकाकर उसे दीवार पर लगा देते हैं। मास्टर हैरत से ताकता रह जाता है।)

सब लड़के —जम्मन ज़िन्दावाद !

जम्मन ज़िन्दावाद !

जम्मन ज़िन्दावाद !

[घन्टी बजती है। परदा गिरता है।]

मेरा दोस्त

मेरा दोस्त—लेकिन मैं अपने किस-किस दोस्त का जिक्र करूँ ? मेरा दोस्त एक तो वह है जो जरा कवि-हृदय है; और जो मुझसे बातें कम करता है, लेकिन मेरी पत्नी से ज्यादा बातें करता है। कहीं आप इसका उलटा-सीधा मतलब न ले लें। वास्तव में वह बड़ा ही निरीह प्राणी है और ज्यादातर मेरी पत्नी से मेरे बारे में ही बातें करता रहता है। बड़ी ही मासूम भोली-भाली बातें होती हैं वे।

उदाहरण के तौर पर उसे मालूम है कि मैं खाने में कद्दू से बहुत घृणा करता हूँ। उस हर एक चीज से जो देखने में या खाने में कद्दू से समता रखी है, मुझे अत्यधिक घृणा है—फिर चाहे वह आदमी हो या सब्जी-तरकारी। मेरा दोस्त इस बात को अच्छी तरह जानता है। इसीलिए वह बड़ी ही दीनता से मेरी पत्नी से कहता है :

"मैं देख रहा हूँ कि कुछ दिनों से आपके पति का चेहरा उतरा-उतरा-सा है।"

पत्नी कहती है—"हाँ, मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव करती हूँ।"

कवि-हृदय मित्र कहता है—"कहीं खाने में कोई कमी तो नहीं होती ?"

"नहीं तो !" पत्नी इस बार बड़े विश्वास से कहती है।

कवि-हृदय दोस्त सिर हिलाकर कहता है—"फिर उनके

लेकिन मेरा दोस्त जो मुझे कद्दू खिलाता है, उस दोस्त के आगे हेच है जो मुझे गम खिलाता है। और आप जानते हैं कि कद्दू खाने में और गम खाने में और गम खाने में बहुत अन्तर है, यद्यपि स्वाद दोनों का बुरा होता है। फिर भी कद्दू खाते-खाते आपको क्षय नहीं हो सकता, लेकिन लगातार गम खाने से हो सकता है। इसलिए अपने उस दोस्त को, जो मुझे अक्सर गम खिलाता है, मैं कभी नहीं भूल पाता।

उसकी टेकनिक ही अजीब है। दूसरे दोस्त तो उस समय घर में आते हैं जब मैं घर पर होता हूँ, वह आम तौर पर उस समय आता है जब मैं घर पर नहीं होता। वह बड़ी जल्दी में तेज कदम उठाता हुआ अन्दर दाखिल होता है और आते ही मुझे जोर-जोर से आवाजें देने में जुट जाता है। फिर टेबल पर पड़े हुए गुलदान में से अंगूर, नाशपाती खाने में तल्लीन हो जाता है और साथ-ही-साथ मेरी पत्नी से बातें भी करता जाता है।

"आश्चर्य है, अभी तक नहीं आये?" वह सवाल करता है।

मेरी पत्नी कहती है—"इसमें आश्चर्य की क्या बात है? वह अक्सर इस समय घर पर नहीं होते।"

"आश्चर्य की बात है, मुझसे तो इस समय मिलने को कहा था। दोपहर को सिनेमा के अन्दर जाते हुए मिले थे।"

"सिनेमा के अन्दर जाते हुए?" मेरी पत्नी घबराकर पूछती है।

"हाँ हाँ!" मेरा दोस्त अंगूरों का एक गुच्छा मुँह में डालकर जवाब देता है "उनके साथ में सम्भवत आपकी वही रिश्तेदार थीं, जो जवान-सी है और खूबसूरत बड़ी-बड़ी आँखें और बाल सुनहरे किये हुए।"

"लेकिन मेरी तो कोई ऐसी रिश्तेदार नहीं है," मेरी पत्नी और भी घबराकर जवाब देती है, "जो खूबसूरत हो, जवान हो और जिसने बाल सुनहरे किये हुए हों।"

वह मेरी सुनता ही नहीं। कम्बख्त! जालिम बदमाश!"

और वह—मेरी पत्नी—रो-रोकर कहती है, "बस, उनके दोस्तों में से तुम्हीं सबसे अच्छे हो।"

"भाभी, तुम्हारी जेब में दस रुपये हैं?" मेरा दोस्त बड़े भोले-पन से पूछता है और फिर वह दस रुपये लेकर चला जाता है। जब मैं घर में आता हूँ और देखता हूँ कि घर में बिजली 'फेल' हो चुकी है और मोमबत्ती की रोशनी में दस्तरखान पर सेब के टुकड़े पड़े हैं और मेरी पत्नी मायके चली गई है तो मैं फौरन समझ जाता हूँ कि मेरा दोस्त आया होगा। वही मेरा दोस्त जो हमेशा मेरी अनुपस्थिति में आता है और दस बीस रुपये लेकर मेरी पत्नी का सामान बँधवाकर उसे मायके भेज देता है। दोस्त और दुश्मन की पहचान एक यह भी है कि दुश्मन आप पर पुरुषोचित या पुरुषों की ओर से हमला करता है, दोस्त 'स्त्रियोचित' या स्त्रियों की ओर से भी हमला कर सकता है।

o o o

लेकिन यह तो जाहिर है कि इस तरह दस-बीस रुपये खोने से मेरा अधिक नुकसान तो हो नहीं सकता, लेकिन घबराइए नहीं, इसके लिए मेरा दूसरा दोस्त विद्यमान है जो उस काम को वहाँ से शुरू करता है जहाँ से मेरे पहले दोस्त ने उसे अधूरा छोड़ा था। दोस्त और दुश्मन की एक पहचान यह भी है कि दुश्मन दुश्मन की मदद नहीं करता, लेकिन दोस्त दोस्त की मदद अवश्य करता है। कुछ लोगों का खयाल है कि सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत में मदद करता है। मेरा अनुभव यह बतलाता है कि सच्चा दोस्त न केवल मुसीबत में मदद करता है, बल्कि वह मुसीबत भी खुद ही लाता है। और एक मुसीबत ही नहीं, बल्कि बहुत सारी मुसीबतें इकट्ठी करके ले आता है, ताकि मदद करने में आसानी रहे।

एक इसी तरह का सच्चा दोस्त मेरा वह दोस्त है जो मुझे अक्सर कोई-न-कोई नया बिजनेस शुरू करने के लिए कहता रहता है।

उदाहरण के तौर पर एक दिन वह मुझसे कहने लगा—"भई, तुम हाथ-पर-हाथ धरे क्यों बैठे रहते हो ? कोई बड़ा धन्धा क्यों नहीं करते ?"

"क्या करूँ ?"

'फिल्म का बिजनेस करो। बड़ा नफा है। बड़ा धन्धा है। वह तुमने फिल्म देखी थी 'बन्दर रेखा' ? कहते हैं उसमें प्रोड्यूसर को ढाई करोड़ का फायदा हुआ।"

परिणाम यह हुआ कि हमने अपने दोस्त की बातों में आकर सात लाख का नुकसान कर डाला। बड़ा धन्धा था, इसलिए और सबको फायदा हुआ सिवाय हमारे। अब हमारे दोस्त ने कहा, "वास्तव में देखा जाय दोस्त, तो बड़े धन्धे में बड़ा खतरा है। अब तुम छोटा धन्धा करो।"

"कौन-सा छोटा धन्धा करूँ ?"

"यही पान की दुकानें ! बहुत-सी खरीद डालो। शहर में हर नुक्कड़ पर पान की तुम्हारी दुकान हो जाय। और हर दुकान पर तुम्हारा अपना नौकर हो। कम-से-कम सौ-पचास दुकानें खोल लो। छोट-सा धन्धा है। हर दुकान से रोज पाँच रुपये नफा आता है। सौ दुकानों का पाँच सौ रुपये रोज आयगा। साल-भर का तुम हिसाब कर लो।

बड़ा खूबसूरत-सा छोटा-सा धन्धा था ! साल-भर के बाद हिसाब किया। मालूम हुआ कि इससे तो फिल्म का धन्धा क्या बुरा था ! 'बन्दर रेखा' बनाते-बनाते बनारसी पान बेचने लगे। मालूम हुआ' शहर के बीच में जो बड़ा होटल अपना था वह अब अपना नहीं रहा है' मकान भी अपना नहीं है और मोटर दोस्त ने गिरवी रख ली है। और अब वह उसके स्टियरिंग ह्वील पर सिर झुकाकर मुझसे कहता है—"दोस्त, ये सब धन्धे पुराने हो चुके। अब कोई नया धन्धा करो।"

"कौन-सा नया धन्धा ?"

"प्लास्टिक की चोटियाँ (वेणियाँ) तैयार करो।"

इसलिए अबकी बार मैंने नया धन्धा किया। यह मेरा आखिरी धन्धा था। मैंने प्लास्टिक की चोटियाँ और चूड़ियाँ तैयार कीं और फिर उन्हें पहनकर अपने घर बैठ गया। अब छोटे-बड़े नये-पुराने सब धन्धे खत्म हो चुके।

० ० ०

यद्यपि धन्धे समाप्त हो जाते हैं, दोस्त कभी समाप्त नहीं होते। इसके अतिरिक्त दोस्त और दुश्मन की एक पहचान यह भी है कि आदमी दुश्मन का मुकाबला कर सकता है, लेकिन दोस्त का मुकाबला किसी हालत में नहीं कर सकता। ऐसा करना मित्रता के विरुद्ध होगा। इसका अनुभव मुझे हाल की अपनी बीमारी के दौरान में हुआ। क्योंकि जैसा कि बड़े-बूढ़ों ने कहा है, जब सब धन्धे खत्म हो जाते हैं तो बीमारी शुरू हो जाती है। अबकी बार मुझे मेरे डॉक्टर दोस्त ने बताया कि मुझे कुछ न होने की बीमारी है। आप यह सुनकर जरूर हैरान होंगे कि यह कुछ न होने की बीमारी क्या होती है। तो सुनिये, बीमारियाँ दो तरह की होती हैं—एक तो वो होती हैं, यानी आपको सर्दी होगी मुझे गर्मी होगी, आपको पेचिश होगी मुझे दिक (सय, दमा) होगी, आपको कोढ़ होगी मुझे हैजा होगी'' ये तो हुई होने की बीमारियाँ। दूसरी होती है न

होने की बीमारियाँ, जिसमें कुछ न होने के कारण कुछ-न-कुछ हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि आपके बदन में कैल्शियम नहीं होता है तो आपको केल्शियम न होने बीमारी हो जाती है; लोहा नहीं होता है तो लोहा न होने की बीमारी हो जाती है। इसी तरह विटामिन, फ़ासफोरस, नमक, मिट्टी का तेल नहीं होता है तो शरीर का स्टोव (अँगीठी) बुझा-बुझा-सा रहता है। इसलिए अब की मेरी हाल की बीमारी शरीर में आयोडीन न होने के कारण थी। डॉक्टर ने उस कमी को पूरा करने के लिए मुझे एक बढ़िया-सा इंजेक्शन दिया और चला गया। उसके बाद मेरी शामत आई मेरा मतलब है, मेरा दोस्त आया।

मेरा यह दोस्त बड़ा मासूम और भोला-भाला है। इसकी वेश-भूषा ढीली-ढाली है और वह देशी टोने-टोटको का मतवाला है, यानी बिलकुल गड़बड़झाला है वह आते ही लम्बोतरा-सा मुँह बना-कर मेरे सिरहाने बैठ गया और मुझसे पूछने लगा—

"क्या तकलीफ है दोस्त ?"

"शरीर में आयोडीन नहीं है।"

"तो टिक्चर आयोडीन पीयो; मेरे घर पर रखी है।"

मैंने कहा—"टिक्चर आयोडीन पीते नहीं, लगाते हैं।"

वह बोला—"मेरे खयाल में घोड़ों को पिलाते हैं।"

मैंने कहा—"मैं घोड़ा नहीं हूँ।"

वह बोला—"माफ करना, मैं भूल गया; मैंने समझा, मैं रेस कोर्स में बैठा हूँ।"

इसके बाद थोड़ी देर तक वह चुप रहा। फिर सोच-विचारकर बोला, "मेरे खयाल में तो तुम हल्दी पियो तो अच्छा है।"

मैंने कहा—"तुम्हें हल्दी का खयाल क्यों आया ?"

वह बोला—"हल्दी और आयोडीन का रंग मिलता है, इसलिए स्वभाव भी मिलता होगा और गुण-धर्म भी। इसलिए तुम हल्दी अवश्य पियो। बिलकुल ठीक हो जाओगे। मैं सब समझता हूँ।

देखो, अब तुम जिद न करो। तुम नहीं समझते हो ; मैं तुम्हारे भले के लिए कह रहा हूँ।"

मेरे दोस्त में यह बड़ी खूबी है कि वह सब समझता है और मैं कुछ नहीं समझता हूँ। वह सब-कुछ जानता है और मैं कुछ नहीं जानता हूँ। वह सब-कुछ देखता है और मैं कुछ नहीं देखता हूँ। यद्यपि मेरा दोस्त डॉक्टर, वैद्य या हकीम नहीं है तो क्या हुआ ? वह नहीं है, मगर उसका दादा तो था। और उसके दादा जी के बताये हुए टोटके आज तक हमारे घर से श्मशान भूमि-तक चलते हैं। इसलिए उसने आग्रह करके मुझे हल्दी पानी में घोलकर पिलाई। फिर मेरे पेट पर हल्दी का लेप कर दिया। मेरी आँखों में हल्दी का सुरमा लगा दिया और मेरे माथे पर हल्दी बिखेरकर मुझे अपनी समझ में परलोक पहुँचाकर मुझसे विदा हो गया।

यही सच्चे दोस्त और दुश्मन की पहचान है कि दुश्मन आपकी अच्छाइयों पर निगाह रखता है, आपकी कमजोरियों पर हमला करता है दोस्त आपकी अच्छाई, कमजोरी और बीमारी तीनों पर निगाह रखता है, और चारों तरफ से हमला करता है। दुश्मन का वार कभी-न-कभी खाली चला जाता है, लेकिन दोस्त का वार कभी खाली नहीं जाता।

परसों मेरा दोस्त अपने परिवार के परम्परागत टोटकों के परिणामस्वरूप मर गया, और मरते समय मुझे एक विधवा, ग्यारह बच्चे और बहुत से लम्बे-चौड़े कर्जे की जिम्मेदारी सौंप गया। वसीयत में अपना खुजली वाला कुत्ता भी मेरे सुपुर्द कर कर गया। आजकल मैं उस खुजली वाले कुत्ते को नहलाता हूँ और सोचता हूँ कि दुश्मन की दुश्मनी उसके मरने के बाद समाप्त हो जाती है, लेकिन दोस्त की दोस्ती उसके मरने के बाद भी विद्यमान रहती, बल्कि वह प्रलय तक आपका साथ देती है।

हैं। हद तो यह है कि भौंहें मुँडाने वाली और पलकें चुनने और सारे चेहरे की 'शेव' करने वाली हिरोइनों ने भी इस को स्वीकार कर लिया। यह फैसला इस बात का सबूत है कि ा देश बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है और कम-से-कम एशिया फिल्म इंडस्ट्री के नेतृत्व का एकाधिकारी बन सकता है।

कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन देश के प्रसिद्ध नेता श्री जी० के० काक- ने किया। उद्घाटक महोदय का नाम ऐसा है कि जो पब्लिक ूरिटी-एक्ट के अन्तर्गत आता है। लेकिन चूँकि यह नाम श्रीयुत टेल के माता-पिता ने उस समय रखा था जबकि देश में शराब- ा कानून प्रचलित नहीं हुआ था, इसलिए शासन ने इस नाम पर ई 'एक्शन' लेना ठीक नहीं समझा। इन साहब की देश-सेवा का ा तीन बार जेल और दो बार पागलखाने जा चुके हैं) रिकार्ड ना श्रेष्ठ है कि कई सज्जनों ने उन्हें बार-बार यह समझाया कि : वह केवल अपना नाम बदल डालें तो देश में ऊँची-से-ऊँची वी प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन श्री जी० के० काकटेल चूँकि ने ढंग के आदमी हैं इसलिये समझाने-बुझाने पर भी अपना ाना रंग नहीं बदलते; और उसी पुराने ढर्रे पर, जिसने आज तक रतवर्ष के पुराने रीति-रिवाजों को जीवित रखा है, चले जाते हैं। ा ही लोगों ने हिन्दुस्तान को वहाँ ही रखा है जहाँ कि वह ाज है।

श्री जी० के० काकटेल का प्रारम्भिक भाषण बहुत ही जोर- ार, तर्कसंगत, अवसर के उपयुक्त, विद्वत्तापूर्ण और विषय के अनु- प था। ऐसा भाषण वही आदमी दे सकता है जिसने कम-से-कम ीस साल तक देशसेवा की हो और जो छः बार पुलिस से पिट ुका हो। ऐसा भाषण वह आदमी कभी नहीं दे सकता जिसे जेल में भी 'ए' क्लास नहीं मिला हो। भाषण के दौरान में इतनी बार ोर-शोर से तालियाँ पीटी गईं कि सुकुमार भारतीय तारिकाओं की ़ेलियाँ सूज गईं और हॉल में डॉक्टरों को 'फर्स्ट एड' करना पड़ा।

श्रीयुत जी० के० काकटेल ने अपने भाषण में यह प्रमाणित किया कि "वास्तव में हिन्दुस्तानियों ने ही फिल्मों का आविष्कार किया है और महाभारत के युद्ध की वह पूरी तसवीर, जो संजय ने धृतराष्ट्र को दिखलाई थी, असल में एक फिल्म ही थी। भारत की पहली बोलती-चालती, लड़ती-झगड़ती हिन्दुस्तानी फिल्म—जो संस्कृत भाषा में तैयार की गई थी। (मजे की बात है कि यह फिल्म टेकनीकलर में थी)। महाभारत के युद्ध के बाद भारतीय समाज का ढाँचा ही बिखर गया। और इसलिए यह पुरानी इंडस्ट्री भी दूसरे उद्योगों के साथ नष्ट-भ्रष्ट हो गई। बाद में पश्चिम के वैज्ञानिकों ने हमारे वेद और पुराणों का अध्ययन करके वर्तमान 'स्क्रीन' का अनुसंधान किया। लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान में ही सारी दुनिया से पहले फिल्में बनीं और इन फिल्मों के आविष्कार का श्रेय हिन्दुस्तान उर्फ भारत को ही प्राप्त है।

"न केवल फिल्म बल्कि एटम बम के आविष्कार का सेहरा भी हिन्दुस्तान के सिर है। (तालियाँ) और अगर कभी हाइड्रोजन बम बना तो आप देखेंगे कि इसके बनाने की तरकीब भी हमारे वेद-ग्रन्थों से ही चुराई जायगी। (तालियाँ) क्या मैं पूछ सकता हूँ कि पौराणिक इतिहास में शिवजी महाराज के जिस ताण्डव का वर्णन है और जिससे सारी दुनिया में प्रलय मच गया था, वह आखिर क्या था? असल में वह एक एटम बम था, जिसे उस युग में योग-बम कहते थे। दुःख है कि हमारी आपसी फूट के कारण यह आविष्कार भी हमारे हाथ से निकल गया और आज पराये इस बम की बदौलत सारी दुनिया पर शासन कर रहे हैं। मैं हिन्दुस्तान के कर्णधारों से निवेदन करना चाहता हूँ कि आज भी वे मानसरोवर के किनारे तपस्या करके योग-बम को प्राप्त कर सकते हैं और इस तरह हिन्दुस्तान का विलुप्त गौरव पुनः स्थापित किया जा सकता है। (तालियाँ) इसके लिए बीस वर्ष तक योगाभ्यास करना होगा। है कोई लीडर जो यह काम कर सके? (तालियाँ)"

इस पर एक यू॰ पी॰ की प्रतिनिधि हिरोइन ने, जिसे आज-कल कोई काम नहीं मिल रहा था, चिल्लाकर कहा—"हुजूर क्यों न तशरीफ ले जायें !" लेकिन शीघ्र ही उसकी यह आवाज 'शेम-शेम' के नारों में दबा दी गई।

श्री जी॰ के॰ काकटेल ने मेज पर मुक्का मारकर कहा— "मैं जाने के लिए तैयार हूँ, मगर क्या आपमें से भी कोई आने के लिए तैयार है ? (तालियाँ—पूर्ण निस्तब्धता) देखा, यह है इस देश की फूट का नतीजा ! कोई किसी का भरोसा नहीं करता। मजदूर पूँजीपति का भरोसा नहीं करता, विद्यार्थी प्रोफेसर का भरोसा नहीं करता और हिरोइन लीडर का भरोसा नहीं करती। आपसी फूट ने हम सबको एक-दूसरे से अलग कर रखा है। आओ, हम एक-दूसरे के गले लग जायें और सारी दुनिया को बता दें कि हम सब भाई-भाई हैं।"

'भाई और बहन," एक हिरोइन बोली।

श्रीयुत काकटेल ने उसे घूरकर देखा। नई हिरोइन की एक आँख नकली और काँच की थी, इसलिए वह बड़ी आसानी से श्री काकटेल के घूरने को सह गई। श्री काकटेल ने अपना हाथ उठाकर अँगुली हवा में खड़ी करके कहा—"क्षमा कीजियेगा, चुभती हुई बात कहता हूँ, मगर आपमें से भी बहुत-सी हिरोइनें ऐसी हैं जिन्हें अपने देश की उन्नति का कोई खयाल नहीं।"

सब हिरोइनें एक-दूसरे की ओर देखने लगीं। "नहीं, नहीं ! यह कैसे हो सकता है," मिस पीतावाली ने कहा। "यह बिलकुल असम्भव है," वह हिरोइन चमककर बोली, जिसकी तस्वीर अक्सर साबुन के विज्ञापनों के सिवा और कहीं दिखाई नहीं देती।

श्री काकटेल ने चिल्लाकर कहा—"मैं उन हिरोइनों की बात करता हूँ, जो हमारे देश को धोखा देकर पाकिस्तान चली गईं।"

इस पर डेलीगेट औरतें ही नहीं, पूरा उपस्थित समुदाय गुस्से में आपे से बाहर हो गया और चीख-चीख कर कहने लगा—"पाकि-

स्तान हिरोइन मुर्दाबाद ! पाकिस्तान हिरोइन मुर्दाबाद ! पाकिस्तान हिरोइन मुर्दाबाद !"

"इन्कलाब जिन्दाबाद !"

"हम पाकिस्तानी हिरोइन की फिल्म···"

"नहीं देखेंगे ।"

"इन्कलाब जिन्दाबाद !"

श्री जी० के० काकटेल के चेहरे पर आनन्द की एक रेखा उभर आई । अपने श्रोताओं को शान्त करते हुए उन्होंने कहा, "यह 'स्पिरिट', जो आज आप में पैदा हो रही है, उस समय हिन्दुस्तानी हिरोइनों में मौजूद होती तो देश का बँटवारा कभी न हो पाता, क्योंकि यह बात हर आदमी जानता है कि राजनीतिक लीडरों के बाद इस में अगर जनता किसी को चाहती है तो वे हिन्दुस्तानी हिरोइनें हैं । ('हियर-हियर' और तालियाँ) मैं कहता हूँ इस समय देश का भाग्य हिन्दुस्तानी हिरोइनों के हाथ में है । क्योंकि राजनीतिक नेताओं को तो इस समय शासन-कार्यों से ही फुरसत नहीं है, इसलिए इस समय हिन्दुस्तानी हिरोइनों को कार्य-क्षेत्र में उतर आना चाहिए । (तालियाँ) देखिए, आपके आसपास के देश में क्या हो रहा है ? चीन में, इण्डोचाइना में, बर्मा में, मलाया में, चारों तरफ आग लगी हुई है । इस आग को बुझाना आपका कर्तव्य है ।"

मिस कुरकुरी बोली—"साहब, यह फायर-ब्रिगेड वालों की कान्फ्रेंस नहीं है । यह तो हिरोइन्स···"

"शट अप !" 'दिल की गृहस्थी' उर्फ 'हुकुम का इक्का' की साइड हिरोइन मिस ओभा ने चिल्लाकर कहा । और फिर उसने श्री जी० के० काकटेल की ओर मुड़कर कहा—"साहब, आप अपना भाषण जारी रखिए । इसकी कोई परवाह न कीजिये । एतराज करने वाली हिरोइन नहीं है; खाली एक प्लेबैक सिंगर है ।"

"और मुर्दार, तू कहाँ की हिरोइन है ? कल की एक्स्ट्रा हमारे सलाम करती थी । आज उस डाइरेक्टर दुखियानन्दन की

मेहरबानी ·· से"

"मिस कुरकुरी और मिस ग्रोमा आपस में गुँथ गई। हाल में शोर मच गया। 'पकड़ो' 'निकाल दो'! 'मारो'! 'भागो!' की आवाजें बुलन्द हुईं। किसी तरह दो-तीन भारी-भरकम हिरोइनों ने बीच-बचाव करा दिया। और किसी ने श्री जी० के० काकटेल से भी कहा—"अब जल्दी से भाषण पूरा कीजिए, वरना यहीं दफा १४४ लागू हो जायगी।"

श्री जी० के० काकटेल अवसर की नाजुकता को समझ गए। भाषण समाप्त करते हुए बोले..."बस, इन्हीं बातों से फिल्म-उद्योग बदनाम है और इसीलिए गवर्नमेंट इसकी मदद नहीं करती। आप लोगों को चाहिये कि मिल-जुलकर रहें, खद्दर पहनें, गुड़ खाएँ और एक वक्त उपासे रहें। सर्वोदय के प्रोग्राम पर आचरण करने से फिल्म-इण्डस्ट्री का नैतिक स्तर बहुत ऊँचा हो जायेगा और आप लोग बहुत अच्छी-अच्छी फिल्में बना सकेंगे। मैंने आज तक अपने जीवन में दो फिल्में देखी है—एक तो हेमलेट की कामेडी, जो इतनी अच्छी फिल्म थी कि मैं हँसते-हँसते दोहरा हो गया और दूसरी एक ट्रेजेडी थी, जिसमें लारेल और हार्डी ने काम किया है। क्या बताऊँ इन दो आदमियों का काम देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी! मन पर इतनी उदासी छा गई कि मैं घण्टों रोता रहा। अगर आप लोग भी हेमलेट-जैसी कामेडी और लारेल-हार्डी जैसी ट्रेजेडी बना सकें तो दुनिया की कोई शक्ति हिन्दुस्तान की फिल्म इण्डस्ट्री के सामने नहीं टिक सकती।

"अच्छा, अब मैं समाप्त करता हूँ, यद्यपि जी तो नहीं चाहता लेकिन···, खैर। जयहिन्द!"

(तालियाँ और तालियाँ और तालियाँ)

उद्घाटन-भाषण के बाद मिस चमेली सुगन्ध के झोंके उड़ाती हुई स्टेज पर उपस्थित हुई। मिस चमेली ने उस समय एक काले रंग की साड़ी पहन रखी थी—चाल में वह ससा की पंचकेदा जैसे

ईरानी बिल्ली इठला रही हो; मुस्कराहट में ऐसा आकर्षण जैसा भारत-सरकार के लिये अमरीकन कर्ज में होता है। हाल की तेज रोशनी में उसकी श्वेत, शीतल, रेशमी त्वचा इस तरह चमक रही थी जैसे रेफ्रिजरेटर में रखी हुई दूध की बोतल।

मिस चमेली कान्फ्रेन्स की सेक्रेटरी हैं और भारतीय फिल्मकारों की राय में इस समय की सौन्दर्य-साम्राज्ञी हैं। आपके पास इन दिनों पचास कान्ट्रैक्ट हैं; और तीन हवाई जहाज हैं और ग्यारह कुत्ते। आपका भाषण मुझे ज्यादा दिलचस्प नहीं लगा, क्योंकि दुर्भाग्य से यह भाषण मुझी को लिखना पड़ा था। मिस चमेली ने मुझे इसका मेहनताना सिर्फ पचास रुपये दिया था और 'बाकी पचास फिर कभी दूंगी' कहकर टाल दिया था। मैंने इसीलिये भाषण में मुझे दिये जाने वाले कम मेहनताने का खयाल रखा था। भाषण अत्यन्त फीका, ढीला-ढाला, अत्यधिक भावुकता से भरा और कवित्वमय था। मैं जानता था कि मैं कुछ भी क्यों न लिखूं, लोग हँसेंगे नहीं, वे तो खाली अपनी सौन्दर्य-साम्राज्ञी को देखकर तालियाँ बजायेंगे और गीत गाएँगे। और हुआ भी ठीक यही। स्टेज पर आते ही तालियाँ, सीटियाँ और आवाजें शुरू हो गईं। ज्योंही मिस चमेली ने कहा—"बहनो और भाइयो" कि "हाय जी, मार डाला! जालिमो, जरा इधर भी तो देखो! मैं कुर्बान! यह काली साड़ी! यह काली नागिन है या कयामत है! जरा वो सुना दो कालेज की छोरी अब तेरे सिवा नहीं···पतली कमरिया तिरछी नजरिया···डडा डडा डा।" की आवाज़ें उठने लगीं।

सम्भव है कि कुछ और गड़बड़ हो जाती, लेकिन कान्फ्रेंस के कार्यकर्ताओं ने जल्दी से पुलिस अन्दर बुलाई और कान्फ्रेंस की कार्यवाही फिर शुरू हुई। मिस चमेली के भाषण के बाद पहले दिन की कार्यवाही समाप्त हो गई।

० ० ०

दूसरे दिन रात को डेलीगेट हिरोइनों का खास इजलास था।

इसमें बाहर के दर्शकों को आने की अनुमति नहीं थी। सिर्फ पुलिस के और प्रेस के प्रतिनिधि आ सकते थे। इस बैठक में कोई गड़बड़ नहीं हुई। बहुत-से प्रस्ताव पास किये गए, जिन पर अमल करने से फ़िल्म-उद्योग को फायदा पहुँच जाने की सम्भावना है।

विषय निर्वाचिनी समिति में जिन हिरोइनों ने भाग लिया उनमें करगिस, मिस फुरैंया, मिस फिकार, मिस जरासिम (शाब्दिक अर्थ कीटाणु) और मिस मस्ताना आफ़ 'ढेला-मिट्टी' फेम के नाम उल्लेखनीय हैं। पहला प्रस्ताव हिरोइन शब्द की व्याख्या और उसकी कानूनी स्थापना के बारे में था। सर्वसम्मति से तै किया गया कि हिरोइनों की दो किस्में होती हैं —

१. स्टेण्डर्ड हिरोइन, यानी असली हिरोइन वह है जिसके पास पैंतीस से ज्यादा कान्ट्रैक्ट हों।

२. सब स्टेण्डर्ड हिरोइन

(अ) जिनके पास सिर्फ सोलह कान्ट्रैक्ट हों।

(ब) जिनके पास आठ या आठ से कम कान्ट्रैक्ट न हों।

तय हुआ कि जिन हिरोइनों के पास आठ या इससे कम कान्ट्रैक्ट रहेंगे वे सिर्फ साइड हिरोइन मानी जाएँगी और उन्हें यह अधिकार न होगा कि वे शूटिंग के दिन डाक्टर के सर्टिफिकेट के बिना स्टूडियो से अनुपस्थित रह सकें लेकिन असली हिरोइन और सब-स्टेण्डर्ड हिरोइन (अ) ऐसा कर सकती हैं; बल्कि असली हिरोइन को तो यह अधिकार भी होगा कि यदि उनका जी चाहे तो प्रोड्यूसर की गाड़ी को आग लगा दें या उसके मुँह पर शराब फेंक दे और प्रोड्यूसर उस पर कोई दावा दायर न कर सकेगा। इस प्रस्ताव का समर्थन मिस फिकार ने किया। और यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हो गया।

दूसरे प्रस्ताव में देश की हिरोइनों से अपील की गई कि वे अपने-आपको दुबला रखें। आजकल जिस तरह हिन्दुस्तानी हिरोइनें मोटी होती जा रही हैं उसे देखते हुए बहुत सम्भव है कि कुछ

भाई का कहीं जिक्र नहीं। शायद आप लोगों को मालूम नहीं है कि मेरा भाई कितना आवारा आदमी है। इधर मैं किसी नये फिल्म में काम करती हूँ उधर वह एक नई दास्ता ढूंढ़ लेता है। बाजे लोग तो मेरे पास कितने कान्ट्रैक्ट हैं इस बात का अन्दाजा मेरे भाई की रखैलों पर से ही लगा लेते हैं। अपने भाई की ऐयाशी के कारण मेरा जी जंजाल में है। किसी तरह मुझे बचाइए। मैं तबाह हो रही हूँ।"

मिस हीरा यह कहकर रूमाल आँखों पर रखकर रोने लगी। मिस करगिस चुप कराने के लिए आगे बढ़ी और खुद इसके साथ रोने लगी। थोड़ी देर में सभी हिरोइनें रो रही थीं, सुगन्धित रूमाल चेहरों पर फिरा रही थीं, और एक-दूसरे को धीरज दे रही थीं। अन्त में जब आँसू अच्छी तरह से निकल चुके और दिल ठण्डा हो गया तो फौरन वह संशोधन भी पास कर लिया गया, जिसमें मिस हीरा के भाई की कड़ी निन्दा के साथ उन भाई-बहनों और माओं की भी कड़े शब्दों में निन्दा की गई, जो बेचारी हिरोइनों के सारे पैसे चट कर जाते हैं।

एक प्रस्ताव यह भी पास किया गया कि चूँकि आजकल फिल्में ज्यादा बनती हैं और हिरोइनें कम हैं, इसलिए कोई हिरोइन किसी फिल्म निर्माता को महीने में एक दिन से ज्यादा शूटिंग का वक्त

न दे; नहीं तो हिरोइन सभा उसके खिलाफ कार्यवाही करेगी। यह प्रस्ताव भी सर्व सम्मति से पास हो गया।

एक प्रस्ताव में सरकार से माँग की गई कि वह प्रत्येक हिरोइन को वर्ष में तीन मोटरों का पेट्रोल दिया करे। हिरोइन की मोटर केबिनेट मिनिस्टर से भी ज्यादा चलती है, फिर यह अत्याचार क्यों ?

मद्रास की हिरोइनों ने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें वहाँ की लोकल समस्याओं का उल्लेख था।

मिस जियाकलम् बोलीं —"आपको मालूम नहीं है हमारे यहाँ फिल्में कितनी लम्बी होती हैं।"

"कितनी लम्बी होती हैं ?" करगिस ने पूछा।

जियाकलम् बोली—"पिछले दो साल से त्रिचनापल्ली में एक ही फिल्म दिखाई जा रही है। अभी उसका पहला शो भी खत्म नहीं हुआ।"

"कमाल है।" फुरैया ने हैरान होकर कहा।

जियाकलम् बोली—"और जानती हो गाने कितने लम्बे होते हैं ?"

"नहीं ?" मिस अरानिम ने आँखें झपकाकर कहा।

जियाकलम् बोली—"मैं गीत उषा से शुरू करती हूँ और शामकल्याण पर खत्म करती हूँ, क्योंकि एक ही गीत में सुबह से शाम हो जाती है।"

"बाप रे !" मिस मोना मटर्जी ने ठोडी पर अंगुली रखकर कहा।

मिस मालती ने कहा—"यह तो कुछ भी नहीं है। कोयम्बटूर में एक फिल्म बन रही है। पहले मैं उसमें हिरोइन का काम कर रही थी, अब मेरी बेटी काम करती है; फिल्म अभी तक पूरी नहीं हुई।"

इसके फौरन बाद एक रिजोल्यूशन पास किया गया जिसमें

सरकार से निवेदन किया गया कि वह मद्रासी प्रोड्यूसरों पर फौरन यह पावन्दी लगा दे कि वे

१—चालीस हजार फुट से लम्बी फिल्म नहीं बना सकते।

२—पचास से ज्यादा गाने नहीं रख सकते।

३—छः साल से अधिक समय एक फिल्म में नहीं लगा सकते।

४—दस करोड़ से ज्यादा एक फिल्म की पब्लिसिटी पर खर्च नहीं कर सकते।

एक प्रस्ताव प्रगतिशील लेखकों के खिलाफ पास किया गया—

"ये लोग हमेशा हमें बुरे कपड़े पहनाते हैं—किसी भिखारिन, किसी गरीब मजदूर की पत्नी या भूखों मरती किसान की बेटी का काम देते हैं, जिसमें हमें हमेशा फटे-पुराने कपड़े पहनने पड़ते हैं; चेहरे पर कालिख लगानी पड़ती है, रोना-धोना रहता है। हमेशा इनकी तस्वीरों में इतने लम्बे-लम्बे संवाद होते हैं और देश तथा जाति के लिए क्या-क्या दावे किये जाते हैं! भाड़ में जाय देश और जाति! अरे मियाँ, हँसने दो दुनिया को! चार दिन का मेला है। तुम यह क्या खटराग ले बैठे हो! इन प्रगतिशीलों को फिल्म से बाहर निकाल देना चाहिए। और फिर इनकी फिल्में बाक्स आफिस भी तो नहीं होतीं। काहे को उन लोगों को जगह दे रखी है इण्डस्ट्री में? अब तो सरकार भी इनसे नाराज है। इसी बहाने इनको चलता कर दो।"

कोई इस प्रस्ताव के विरोध में नहीं बोला।

मिस बहना कुँवर ने रिफ्यूजी हिरोइनों के पक्ष में प्रस्ताव पेश किया—

"आज हमारा यहाँ कौन हाल पूछने वाला है? लाहौर में मेरे पास छः कॉण्ट्रैक्ट थे, दो मोटर-गाड़ियाँ थीं, माडेल टाऊन में घर था। आज यहाँ हमारे लिए कोई जगह नहीं। हम रिफ्यूजी हैं। मैं अपनी बहनों से प्रार्थना करती हूँ कि वे पाकिस्तान चली गई हिरोइनों की सम्पत्ति हमको दिलाएँ—उनके कॉण्ट्रैक्ट, उनकी गाड़ियाँ, उनके

मकान।"

"और उनके आशिक (प्रेमी) भी?" मिस खटपट ने धीरे से पूछा।

"शटअप! शटअप! अपने शब्द वापिस लो" के नारे बुलन्द हुए। मिस खटपट ने जल्दी से माफी माँगकर पीछा छुड़ाया। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया।

अन्तिम प्रस्ताव अमरीकन फिल्मों के सम्बन्ध मे था। इसके सम्बन्ध मे जो बहस हुई उसमें बडी गरमा-गरमी दिखाई दी। कुछ हिरोइनों का खयाल था कि अमरीकी फिल्मो का प्रदर्शन बन्द नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनमे हम लोग बहुत-कुछ सीख सकते हैं। कुछ हिरोइनें कहती थीं कि कुछ भी हो जाय, बाहर की फिल्में कितनी भी अच्छी क्यों न हों उनका प्रदर्शन एकदम बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि इससे देश का बहुत अधिक रुपया बाहर चला जाता है।

लेकिन मिस झटपट के भाषण ने विषय के सभी पहलुओ पर सही तरीके से पूरी रोशनी डाली। उसके भाषण के बाद यह अदेशा न रह गया कि यह प्रस्ताव पास न होगा। मिस झटपट ने कहा—

"बहन खटपट अमरीकी फिल्मों के प्रदर्शन को बहुत बुरा आर्ट समझती हैं। मैं कहती हूँ, इसमें आर्ट कहाँ है ? मैं जानती हूँ, अमरीकी हिरोइनों को हम पर क्यों श्रेष्ठता दी जाती है। इसलिए कि वे बोसे दे सकती हैं और नंगी टाँगें दिखा सकती हैं, मगर हम बेचारी शर्मीली, इज्जतदार हिन्दुस्तानी हिरोइनें जो न ये दे सकती हैं और न वो दिखा सकती हैं। इसलिए मेहरबानी करके या तो उन अमरीकी फिल्मों को बन्द कर दो या हमें भी इजाज़त दे दो ताकि हम भी रूपहरी परदे पर दिखा सकें कि इस मैदान में हम भी अपनी अमरीकी बहनों से कम नहीं हैं। (हियर ! हियर ! तालियाँ !!!) और अगर गवर्नमेण्ट इस पर भी नहीं सुनेगी तो हम मामले को सिक्यूरिटी कौंसिल में ले जायेंगी।" (जोर-शोर के साथ तालियाँ)

कान्फ्रेंस खत्म हुई। मैं कुछ फोटो लेकर कैमरे को वापस लटका रहा था कि मुझे मिस प्रेम पिटारी ने घेर लिया।

मुस्कराते हुए वह बोली—"कहिए, रिपोर्ट तो अच्छी लिखेंगे न ?"

"जी हाँ !"

"और फोटो ?"

"फोटो भी अच्छे आये होंगे।"

"मेरा अलग से फोटो लिया है ?" मिस प्रेम पिटारी ने अपनी नई सिलवर जुबली मुस्कराहट का प्रयोग करते हुए पूछा।

"लिया है।"

मिस प्रेम पिटारी मुस्कराई। मेरे समीप आकर, बड़ी-बड़ी आँखें झपका कर शहद-घुली आवाज में कहने लगी—"अगर तुम उसे पहले पृष्ठ पर छाप दो तो·· तो···डार···"

मिस प्रेम पिटारी मेरी ओर बढ़ती आ रही थी। मैं उल्टे पाँवों दरवाजे की ओर जा रहा था; लेकिन वह आगे बढ़ती आ रही थी और उसकी सिलवर जुबली मुस्कराहट गोल्डन जुबिली

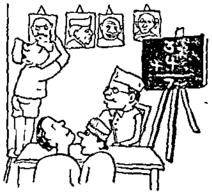

मुस्कराहट मे बदल रही थी। वह और समीप आ गई और उसकी गोल्डन जुबिली मुस्कराहट अब डायमण्ड जुबिली मुस्कराहट में

एकाएक मैं बेहोश हो गया।

सेठजी

सेठजी के होंठ वड़े-वड़े, मोटे और कामुकतापूर्ण थे। उनकी नाक लम्वी और टेढ़ी थी और आँखों में शाइलॉक की-सी मक्कारी झलक रही थी। मैं जव उनके दपतर में पहुँचा तो फौरन वह अपनी कुरसी से उठ खड़े हुए और वड़े तपाक से हाथ मिलाते हुए कहने लगे—"हां-हां, आप आये है! अरे भाई, किशन जी आये हैं; एक कुरसी अन्दर भेज दो।"

एक चपरासी कुरसी लेकर आया। मैं उस पर बैठ गया। मैंने सेठजी के मुस्कराते हुए, चमकते हुए चेहरे की तरफ देखा। ऐसा मालूम होता था कि किसी ने उनके चेहरे पर वनस्पति घी का डिव्वा उड़ेल दिया है। यह मुस्कराहट उसी नकली घी में तली हुई मालूम होती थी। सेठजी ने अपने पीले-पीले दाँत निकाले, अपने हाथ मले और एक अजीब वारीक-सी हँसी से, जो किसी शैतान घोड़ी की हिनहिनाहट से समानता रखती थी, काम लेते हुए बोले—"अरे वाह वा! धन् भाग हमारे। किशनजी आये हैं! मैंने हरचन्द भाई से कहा था, किशनजी कभी मिलें तो हमारे, पास भेज देना। आप तो कभी आते ही नहीं। अरे भाई, लाख-दो लाख की वात ही क्या है। यह गरज तो जव चाहो पूरी कर लेना हम से। तुमने तो मिलना-मिलाना ही छोड़ दिया।"

मैंने कहा—"मैं आज से छः महीने पहले इसी काम के लिए आपके पास हाजिर हुआ था। आपने इतने फेरे कराये कि मेरे जूते के अन्दर का मोजा भी घिस गया।"

"हा हा हा!" सेठ साहब हँसते हुए बोले, "आप बड़े खुश-मिजाज मालूम होते हैं। जूते के अन्दर का मोजा भी घिस गया! हा हा हा! ऐसा मजाक तो हमने किसी फिल्म में नहीं सुना। इसको लिख डालो न किसी फिल्म में। तुम्हारी कसम है, खूब चलेगा, हा हा हा!" हँसते-हँसते सेठजी की आँखें बन्द हो गईं, और उनके पेट में कम्पन होने लगा।

जब अच्छी तरह हँस चुके तो घण्टी बजाते हुए बोले—"कुछ पियोगे, ठण्डा-वण्डा?"

"हाँ, ठण्डे सोडे में ह्विस्की डालकर पियूँगा।"

उसके बाद उसने फिर हँसना शुरू कर दिया। एक लड़का सेठ की आवाज सुनकर अन्दर आया और अपने मोटे सेठ की तोंद में हँसी की लहरें उठती देखकर ससम्मान खड़ा हो गया। जब यह तूफान रुका तो सेठ ने लड़के से कहा—"दो अच्छी विमटो की बोतलें लाओ।"

जब लड़का चला गया, आप मेज से आगे झुककर मेरी तरफ़ देखकर कहने लगे—"मैं चाहता हूँ कि आप रुपये मुझसे सवा दो की जगह ढाई लाख ले लें, लेकिन पिक्चर ऐसी हो जो बिल्कुल क्लासिकल हो।"

मैंने कहा—"क्लासिकल से, आपका मतलब क्लासिकल म्यूजिक है शायद। बहुत अच्छा, मैं दिलीप चन्द्र बेदी से प्रार्थना करूँगा कि वह इसका म्यूजिक सँभाल लें।"

"नहीं, नहीं!" सेठजी बोले, "आप मेरा मतलब गलत समझे। आप एक ऐसी पिक्चर बनाएँ जो क्लासिकल हो यानी जिसका जवाब दुनिया में न हो। आप समझ गए न मेरा मतलब? एकदम फाइन, समझे?"

"समझ गया," मैंने कहा, "मगर ऐसी पिक्चर हिन्दुस्तान में देखेगा कौन ? देखिए, इसके पहले तीन-चार प्रयोग हम लोग कर चुके हैं। एक तो बंगाल के अन्न-संकट के सम्बन्ध में तसवीर थी। देश और विदेश के ख्यातनामा लोगों ने उसे देखा और उसकी बहुत-बहुत प्रशंसा की। रूस और अमरीका और इंगलैण्ड के फिल्म-विशेषज्ञों ने भी उसकी बहुत सराहना की। लेकिन यहाँ कहीं भी तीन-चार सप्ताह सं अधिक नहीं चली। आप ऐसी ही फिल्म चाहते हैं न।"

"नहीं, नहीं ! ऐसा पिक्चर क्या करना है अपने को ?"

"मैंने कहा—"तो फिर एक पिक्चर वह थी, जिसमें गरीबी और अमीरी का विरोध बड़ी खूबसूरती के साथ निभाया गया था। कलाकारों ने बड़े ही अच्छे ढंग से अपने पार्ट अदा किये थे। डायरेक्टर ने भी बड़ी मेहनत से वह तसवीर बनायी थी। हिन्दुस्तान में बनी थी, लेकिन जब फ्रांस में उसका प्रदर्शन किया गया तो वहाँ के सिने-आलोचकों ने उसे उस वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म करार दिया। लेकिन हिन्दुस्तान में वह अभी तक डिब्बों में बन्द है। अगर आप चाहें तो मैं···"

"बाप रे ? मैंने ऐसी पिक्चर के लिए कब कहा है आपसे ? मैं तो कुछ और···"

मैंने कहा—"तो फिर शायद आप वह तीसरी पिक्चर चाहते हैं जिसमें गाने और डान्स भी जनता की पसन्द के थे, लेकिन उसकी कहानी रियासती जागीरदारों के विरुद्ध थी, जिसके कारण कई रियासतों में उसका दिखाया जाना गैर-कानूनी कर दिया गया और डिस्ट्रीब्यूटर आज तक बनाने वाले की जान को रो रहा है। मगर पिक्चर अच्छी-खासी थी। रियासती जनता के जीवन का प्रतिबिम्ब···"

सेठ घबराकर बोले—"अपने को प्रतिबिम्ब-व्रतिबिम्ब कुछ चाहिए। अपने को तो एक सीधी-सादी पिक्चर···"

मैंने बात काटकर कहा—"तो एक वह पिक्चर है—बड़ी सीधी-सादी मुहब्बत की कहानी है। मगर उसका विषय है—जमीन किसानों में बांट दो। पिक्चर तीन बार सेन्सर हुई। अन्त में, न जमीन किसानों के पास रही, न किसान रहे, खाली-खुली मुहब्बत की कहानी रह गई—शहद लगाकर चाटने के लिए।"

सेठ बोले—"ना बाबा! बाज आया! ऐसी फिल्म अपने को नहीं चाहिए। तब तो एक कौडी न दूंगा। मैं तो ऐसी क्लासिकल पिक्चर चाहता हूँ जैसी 'खिडकी', 'सन्तोषी', शहनाई'!"

मैंने कहा—"खिडकी और शहनाई तो फिल्में हैं, लेकिन 'सन्तोषी' कोई फिल्म नहीं है। वह तो खिडकी और शहनाई के डायरेक्टर का नाम है।"

"हा हा हा!" सेठ साहब हँसते हुए बोले, "देखा किशनजी, नामों में कैसी गड़बड़ हो जाती है?" फिर वह एकदम चौंककर बोले, "मगर सन्तोषी का नाम भी तो बुरा नहीं है। फिल्म का नाम सन्तोषी रख दें तो कैसा रहेगा?"

"नाम तो बहुत अच्छा है, मगर सन्तोषी साहब आप पर दस लाख का मान-हानि का दावा कर देंगे।"

"अच्छा जी!" सेठ साहब कुरसी पर तिलमिलाये, तड़पे और फिर एकदम ठस् होकर बैठ गए, जैसे उनके सामने सारी दुनिया में अँधेरा छा गया हो।

मैंने कहा—"सन्तोषी तो नहीं, लेकिन 'बेहोशी' नाम कैसा रहेगा?"

सेठ साहब कुरसी से उछल पड़े। जोर से हाथ मिलाते हुए बोले, "वाह वा, किशन जी! क्या नाम सोचा है? 'बेहोशी' बड़ा अच्छा नाम है।"

मैंने कहा—"इसमें जितने कैरेक्टर (पात्र) हैं, सब बेहोश हो जाते हैं। हीरो (नायक), हिरोइन (नायिका,) विलेन (खल नायक), संन्यासी, साइड संन्यासी, साइड हीरो, साइड हिरोइन—सब लोग

एक-एक गाना गाते हैं और गाते ही सब बेहोश हो जाते हैं। यह कैसा 'आइडिया' है सेठ ?"

"कमाल कर दिया किशनजी ! मगर कितने गाने रखोगे आप ?"

"मैं गाने बहुत रखूँगा। कैरेक्टर बहुत होंगे न ? और फिर हर गाने के बाद बेहोशी होगी; गोया हर बार नया ड्रामा पैदा होगा। मैं तो समझता हूँ सेठजी, कि पिक्चर लगते ही हाल में सारी पब्लिक बेहोश हो जायगी।"

"वाह वा !" सेठजी खुशी से हाथ मलते हुए बोले, "नया आइडिया है, एकदम नया ! मैं अभी ऑपेरा-हाउस बुक करता हूँ इसके लिए।"

मैंने कहा—"हाउस तो बहुत अच्छा है, लेकिन पब्लिक की बेहोशी के लिए जरा छोटा रहेगा। कोई बड़ा-सा हॉल लीजिए; और वहाँ से कुरसियाँ हटवा दीजिए, ताकि लोग पिक्चर देखते जायँ और वहीं फर्श पर बेहोश होते जायें। जरा देखियेगा सेठजी कैसी 'बाक्स आफिस हिट्' पिक्चर बनती है। लाइए अभी चैक काट दीजिए।"

"चैक तो देता हूँ, लेकिन इसमें मेरा शेयर (हिस्सा) रहेगा। पिक्चर भी गिरवी रखूँगा और सूद और रायल्टी भी लूँगा।"

मैंने कहा—"सब मंजूर है।"

वह बोले—"एक और शर्त है। इस पिक्चर में मेरा शेयर रहे इसलिए मैं नहीं चाहता कि पिक्चर के बीच में कोई शरारत हो और हमारा नाम बदनाम हो।"

"वह कैसे होगा ?" मैंने पूछा।

"बस यही कि स्टूडियो के अन्दर कोई शराब नहीं पियेगा, कोई सिगरेट नहीं पियेगा, कोई लड़कियों की ओर बुरी नजर से नहीं देखेगा।"

मैंने कहा —"यह तो सब ठीक है; मुझे मंजूर है; मगर शराब

के लिए—जरा इतनी मुश्किल है कि अगर मेरे विचार में कोई एक-आध पैग पीकर आ जाय तो उसे कैसे रोक सकते हैं ? एक-आध पैग तो डाक्टर भी जबरदस्ती पिला देते हैं बीमार को।"

सेठ ने कहा—"अरे, एक-आध पैग की क्या बात है ! वह तो ठीक है। खैर, मैं चैक लिखता हूँ।"

वह चैक लिखने लगे। मैंने थोड़ी देर शान्त रहने के बाद खँखारकर कहा—"और सिगरेट से तो स्वयं मुझे बड़ी घृणा होती है; हर समय मुँह से तम्बाकू की दुर्गन्ध आती रहती है, जैसे आपके मुँह से प्याज की बू आ रही है और···"

सेठजी एकदम चौंककर बोले—"क्या मेरे मुँह से प्याज की बू आ रही है ?"

"बू नहीं बफारे आ रहे हैं।"

सेठ ने गुस्से से घण्टी बजाई। चपरासी आया। सेठ ने चपरासी से कलौंट को बुलाने के लिए कहा। कलौंट आया। सेठ उस पर बरस पड़े—"बदमाश ! साले ! तूने बताया नहीं, आज दाल में इतनी भुनी हुई प्याज थी कि मुँह से बू आने लगी साले !"

"सेठजी, मुझे क्या मालूम ?"

"तुझे मालूम नहीं ! दस साल से हमारे यहाँ काम कर रहा है और तुझे यह नहीं मालूम कि मैं लम्ब में भुनी हुई प्याज नहीं खाता हूँ। क्या जङ्गली के माफिक गया है ! निकल जा ! अभी जा, मुनीमजी से हिसाब चुकता करवा ले।"

कलौंट सिर झुकाये चला गया।

मैंने कहा—"बात प्याज की नहीं, सिगरेटों की हो रही थी। वास्तव में सिगरेट पीना बहुत बुरी बात है; लेकिन कभी-कभी स्टूडियो में जब आदमी दिन-रात काम करता है तो थकमान के मारे बड़ी शिथिलता आ जाती है। इसके लिए कभी-कभार सिगरेट पीना बहुत लाभदायी होता है।"

सेठ ने कहा—"नहीं, नहीं ! मैं ऐसे सिगरेट पीने को थोड़े

ही मना करता हूँ ?"

"बाकी रही लड़कियों वाली बात," मैंने कहा, "इस पर तो प्रकट है किसी भी भले आदमी को क्या आपत्ति हो सकती है ? लड़कियों को बुरी नजर से देखना बहुत बुरा है। लेकिन आप जानते हैं, सच्चे प्रेम को कोई नहीं रोक सकता। जहाँ स्त्री और पुरुष मिलेंगे वहाँ सच्चा प्रेम भी होगा, जैसे आज तक फिल्म-इण्डस्ट्री में हजारों बड़े-बड़े प्रोड्यूसरों से लेकर मामूली एक्स्ट्रा लोगों तक में हो चुका है। ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने दो-दो शादियों के बाद भी सच्चा प्रेम किया है। अब इस चीज को रोकना तो बहुत कठिन होगा।"

सेठजी बोले—"सच्चे प्रेम को मैं कब बोलता हूँ कि मना कर दो। अपन खुद एक बार इस झंझट में फँस गये थे।"

मैंने आँख मारकर कहा—"सचमुच सेठजी ? आप भी ? विश्वास नहीं होता।"

"सौगन्ध ले लो किशन जी, तुम्हारे सिर का, जो झूठ बोलूं। वह··· 'हाय ! मैं मर गई' फिल्म की हिरोइन नहीं, नहीं, राम तुम्हारा भला करे, हिरोइन नही, साइड में कौन थी लड़की ?"

"जोगेश्वरी।"

"हाँ, हाँ ! जोगेश्वरी से हमारा प्रेम हो गया। बढ़ते-बढ़ते दो-तीन बच्चे भी हो गए। अब वह कोलाबा में है। मैं उसको खर्चा-पानी सब देता हूँ। तो सौगन्ध ले लो, बिल्कुल अपनी धर्मपत्नी की तरह लगती है। अब ऐसे प्रेम की कौन मनाही करता है ? मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि बिलकुल कम्युनिस्ट हो जाओ।"

"हाँ, हाँ ! सो तो प्रकट ही है," मैंने कहा, "आपका यह मतलब थोड़े ही हो सकता है ?

सेठजी चैक अंगुलियों में फिराते हुए बोले—"किशनजी, यह मैं क्या सुन रहा हूँ, कम्युनिस्ट चीन को ले गए ?"

"हाँ, ले गए।"

"और उधर मलाया में भी इनकी बदमाशी है।"

"सुनते तो यही हैं।"

"आज सुबह मैंने खबर पढ़ी कि रगून से दस मील उधर लड़ाई हो रही है। वहाँ भी यह दङ्गा चल रहा है क्या ?"

मैंने कहा—"आपने ठीक पढ़ा है।"

सेठजी चैक अंगुलियो में घुमाते-घुमाते रुक गए। उन्होंने ध्यान से चैक की ओर देखा। मेरे और चैक के बीच केवल छः इंच का फासला था। सेठजी ने एक ठण्डी सांस भरी और धीरे से चैक को फाड़ते हुए बोले—"किशनजी, अब हमारा व्यापार नहीं चलेगा। अब यह सौदा करने का समय नहीं है।"

जनतन्त्र दिवस

सङ्गल द्वीप और बङ्गल द्वीप दोनों टापू एक-दूसरे के बहुत समीप थे। दोनों के बीच सिर्फ एक पतली-सी समुद्री खाड़ी थी। कहते हैं कि जब सफेद बादशाह का राज्य था, उस समय ये दोनों द्वीप एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए थे। लेकिन बहुत पहले की, उस समय की बात है, जबकि इन टापुओं में रहने वालों को सभ्यता और आधुनिकता की हवा भी नहीं लगी थी। सफेद बादशाह के चले जाने के बाद जब सङ्गल द्वीप में पाँचू और बङ्गल द्वीप में काँचू का राज्य हुआ तो दोनों द्वीपों के बीच एक पतली-सी खाड़ी खोद दी गई; और दोनों टापू एक-दूसरे से अलग हो गए।

पाँचू और काँचू का किस्सा भी बड़ा विचित्र है। पहले ये दोनों जुड़वाँ भाई थे और किसी भी प्रकार एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते थे। सफेद बादशाह को यह सोचकर बड़ा कष्ट होता था कि उसके दोनों राजकुमार इस तरह जुड़वाँ हों। उसने बहुतेरे इलाज किये, लेकिन उन्हें एक-दूसरे से अलग करने की कोई तरकीब समझ में नहीं आई। अन्त में उसने नीले समुद्र के पार फङ्गल द्वीप से एक प्रसिद्ध और कुशल सर्जन को बुला भेजा। उसने आकर पाँचू और काँचू का ऑपरेशन किया, जिससे ये दोनों भाई अलग-अलग स्वतन्त्रता से जीवन यापन करने लगे; और सफेद बादशाह और

उसके कुशल सर्जन के गुण गाने लगे, जिसने उन्हें अलग-अलग चलने-फिरने और सोचने-समझने की स्वतन्त्रता प्रदान की।

पाँचू और काँचू दोनों सफेद बादशाह से बहुत प्यार करते थे। सफेद बादशाह को पहलवानी का बड़ा शौक था। इस शौक में वह कभी पाँचू को और कभी काँचू को पटक दिया करता। उसके बाद पाँचू और काँचू दोनों सफेद बादशाह से लिपट जाते और उससे बड़े प्यार-भरे स्वर में कहते—

पाँचू—'मैं तेरा पट्ठा हूँ, सफेद बादशाह!"

काँचू—'नहीं, मैं तेरा पट्ठा हूँ सफेद बादशाह!"

और सफेद बादशाह अपने मन में कहता—'तुम दोनों उल्लू के पट्ठे हो।' मगर प्रकट में वह मुस्कराकर कहता—"हाँ, पाँचू और काँचू, तुम दोनों मुझे बहुत प्रिय हो।" सफेद बादशाह में एक अच्छाई भी थी। वह जब पाँचू सामने होता तो उससे कहता—"मैं मरते समय ये दोनों टापू तुम्हे दे दूँगा।" और जब काँचू सामने आता तो उससे कहता—"ये दोनों टापू तो केवल तुम्हारे हैं।" इसका परिणाम यह हुआ कि पाँचू और काँचू एक-दूसरे से अलग-अलग रहकर राज-सिंहासन का स्वप्न देखने लगे; और दोनों द्वीपों पर शासन करने के लिए सफेद बादशाह के सामने एक-दूसरे को अपमानित करने और नीचा गिराने की तरकीबें लड़ाने लगे।

पहले तो पाँचू और काँचू ने कहा—"हम कभी जुड़वाँ भाई नहीं थे। हम तो प्रारम्भ से ही अलग थे।"

फिर पाँचू ने कहा—"काँचू मेरा भाई नहीं है; मैं तो सूर्य का पुत्र हूँ।"

काँचू ने कहा—"और मैं तो चन्द्रमा का पुत्र हूँ।"

उसके बाद पाँचू ने गुस्से में आकर अपने पाँव में लकड़ी का जूता पहन लिया और काँचू ने झल्लाकर चमड़े का जूता पहन लिया। इससे पहले दोनों नंगे पाँव फिरा करते थे। लेकिन जब एक भाई ने लकड़ी का और दूसरे भाई ने चमड़े का जूता पहन लिया

तो सफेद वादशाह ने दरवार में घोषणा की कि आज से हमारे राज्य में दो संस्कृतियाँ हैं—एक का नाम पाँचू संस्कृति रहेगा और दूसरे का नाम काँचू संस्कृति। पाँचू संस्कृति वाले हमारे दाहिने हाथ की ओर बैठेंगे और काँचू संस्कृति वाले हमारे बाएँ हाथ की ओर।

दाहिनी ओर के दरवारियों ने कहा—"पाँचू संस्कृति की जय हो!"

बाईं ओर के दरवारियों ने कहा—"काँचू संस्कृति की जय हो!"

सफेद बादशाह ने अपना राज-मुकुट अपने सिर से उतारकर सिंहासन पर रख दिया और स्वयं खड़े होकर कहा—"आज से मैंने राज-पाट का परित्याग किया; क्योंकि हमारा 'मिशन' पूरा हो गया है। दोनों राज-

कुमार भगवान् की कृपा से वयस्क हो गए हैं। अब वे जनता की भलाई के लिए इतनी ही तत्परता और लगन से काम कर सकते हैं जितनी कि मैं आज तक करता आया हूँ। मैं सङ्गल द्वीप पाँचू को और बङ्गल द्वीप काँचू को सौंपता हूँ और स्वयं हीरे की नाव में बैठकर फंगल द्वीप जाकर वनवास ले लेता हूँ।"

पाँचू और काँचू की आँखों में आँसू भर आए। बहुत-से दरवारी रोने लगे। बिलकुल श्री रामचन्द्र के वनवास-जैसा दृश्य था। लेकिन फिर पाँचू ने काँचू को और काँचू ने पाँचू को ढाढ़स

देखाया और एक-दूसरे से कहा—"जनता के लिए हमें यह दुःख सहना ही पड़ेगा। तुम्हें सगल द्वीप का दरबार और मुझे बंगल द्वीप का दरबार चलाना ही पड़ेगा। अब ढोल-ताशे बजाओ और अपने-अपने द्वीपों में पार्लमेंट की घोषणा कर दो।"

नक्कारची कह रहा था—"खलकत खुदा की ! हुकुम सरकार का ! दाईं ओर के दरबारी सगल द्वीप पार्लमेंट के मेम्बर होंगे और बाईं ओर वाले बगल द्वीप की पार्लमेंट के सदस्य होंगे। और ये दोनों सभाएँ जनता के लिए काम करेंगी।"

लेकिन यह जनता कौन थी, जिसकी उन्नति के लिए इस तरह शोर मचाया जा रहा था ? वास्तव में यह जनता इन दोनों द्वीप की पैदावार थी और इनकी वहाँ बहुतायत थी। पाँचू और काँचू दोनों भाई इनका व्यापार करते और उसमें करोड़ों रुपये कमाते थे। जनता की दो टाँगें, दो हाथ, दो कान, दो आँखें और एक मुँह होता है। सिर के सम्बन्ध में कई वैज्ञानिकों को सन्देह है। बहरहाल पाँचू और काँचू का खयाल है कि जनता के सिर नहीं होता। यदि होता भी है तो हाथी की तरह छोटा-सा होना चाहिए। इसी सिद्धान्त को लक्ष्य में रखकर पाँचू और काँचू जनता से हर तरह का काम लेते थे; और उनसे दिन-रात चींटियों की तरह परिश्रम करवाते थे। जनता खेतों में हल चलाती थी, निराई करती थी, बीज बोकर फसल उगाती थी। लेकिन जब फसल इकट्ठा करने का अवसर आता था तो दरबारी लोग सारा अनाज उठाकर ले जाते थे और थोड़ा-सा अनाज जनता के लिए शेष रहने देते थे, ताकि जनता में इतनी शक्ति रहे कि वह हल को फिर से पकड़ सके। जनता न केवल हल चलाती थी, बल्कि कारखाने भी चलाती थी, जिनमें कपड़ा तैयार होता था। लेकिन जब कपड़ा तैयार हो जाता तो दरबारी आकर सारा कपड़ा अलग रख लेते और जनता को केवल इतना कपड़ा देते कि जो उनकी लंगोटी तैयार करने या फिर कफन के लिए काम आ सकता था। इसी तरह दूसरे द्वीप का भी ठीक

यही हाल था, यानी जनता काम करती थी और दरबारी खाते थे। जनता बड़ी भोली-भाली, ईमानदार, परिश्रमी और सहृदय थी। उन्हें पाँचू और काँचू से बड़ा प्रेम था, क्योंकि इन राजकुमारों ने जनता से वायदा किया था कि वे शासनारूढ़ होते ही जनता के लिए काम करेंगे और उनके सारे कष्ट मिटा देंगे। सबसे बढ़कर यह बात थी कि पहले तो जनता सफेद बादशाह की दासी थी, लेकिन अब पाँचू और काँचू जनता के दास होंगे और जैसा जनता कहेगी वैसा करेंगे। जनता इन बातों को सुनकर बहुत प्रसन्न होती। पहले तो उसने अपने सिर को खुजाया, फिर अपने सख्त खुरदरे हाथों को देखा, फिर अपने नंगे पाँवों को देखा, जिस पर न लकड़ी का न चमड़े का जूता था। इसके बाद वे लोग, यानी जनता, अपने-अपने कामों में लग गई। और पाँचू और काँचू एक-दूसरे को आँख मारकर अपने-अपने दरबारों में चले गए।

लेकिन यह बहुत दिनों की बात है। पिछले साल जब फङ्गल द्वीप से एक यात्री सङ्गल द्वीप में पहुँचा तो उसने देखा कि सारे सङ्गल द्वीप में खुशी के नारे गूंज रहे हैं और जगह-जगह लोग खुशी से नाच रहे हैं। कहीं-कहीं लोग आनन्दातिरेक के मारे पागल हो गए हैं और अपने घरों पर दीए जला रहे हैं। जिनके पास दीये नहीं हैं, उन्होंने जोश में आकर अपने घरों को आग लगा दी है; और शोले आसमान से बातें कर रहे हैं। उस दिन जनता खुशी में पूरा दिन उपासी रही। यद्यपि उससे पहले वह दिन में सिर्फ एक वक्त भूखी रहती थी, लेकिन आज चूंकि खुशी का दिन था इसलिए जनता ने दिन-भर उपवास किया है और इस खुशी में आकर अपने कपड़े भी फाड़ डाले हैं और उनकी झण्डियाँ बनाकर राजकुमार पाँचू के जुलूस में लहरा रहे हैं। 'सचमुच संगल द्वीप की जनता बड़ी जिन्दादिल है। वह अपने दरबारियों की कद्र करना जानती है,' यात्री ने अपने दिल में सोचा।

यात्री इस द्वीप में पन्दह साल के बाद आया था। उसे अच्छी

तरह मालूम था कि इस द्वीप में भूख, बेकारी, अज्ञान और गरीबी इतनी अधिक है कि शायद वैसी दुनिया के किसी और द्वीप में न होगी। इसलिए जब वह दोबारा यहाँ आया तो पहले पहल जनता की खुशी उसकी समझ में न आई। वह देर तक उनके बाजारों, गलियों, महल्लों, खेतों और कारखानों में घूमता रहा और उनका आनन्दोत्सव देखता रहा। अन्त में जब उससे रहा न गया तो उसने एक नाचते हुए आदमी का हाथ पकड़कर पूछा—

"भई, क्या बात है ? इस कदर खुशी क्यों हो ? क्या तुम्हें पेट-भर के खाना मिला है आज ?"

मगर उस आदमी ने सिर्फ इतना कहा—'एक करोड़ बार ...'' और फिर वह यात्री से हाथ छुड़ाकर नाचता हुआ आगे चला गया। फिर यात्री ने देखा कि एक दूसरा आदमी अपनी अँतड़ियाँ काट-काटकर फूलों के हार बना रहा था। यात्री ने बड़े आश्चर्य से उससे पूछा—"अरे भई, यह तुम क्या कर रहे हो ?"

"मुझे परेशान न करो," उस आदमी ने जवाब दिया, "देखते हो, आज एक करोड़ बार...।"

यह कहते ही उस आदमी के चेहरे पर एक अजीब-सी मोहिनी मुस्कराहट आ गई और वह चुप हो गया और यात्री की ओर से पीठ मोड़कर अपना पेट काटने लगा। यात्री हैरान और परेशान आगे बढ़ा। यहाँ उसे एक और आदमी मिला जो अपने और अपने बच्चे की बगल से लोहू निकालकर एक गिलास में जमा कर रहा था।

"भई, यह क्या करते हो ? यह तो आत्महत्या है।" यात्री ने चीखकर कहा।

उस आदमी ने कहकहा लगाकर कहा—"हा, हा, हा ? आज मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ। आज हमारी सरकार ने एक करोड़ बार "

फिर वह आदमी रुक गया और उसके चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कराहट आई और वह बोला—

"मैं यह गिलास दरबार में पेश करूँगा। मेरे पास और कुछ

तो है नहीं।"

इतने में उसका बच्चा बेहोश होकर गिर पड़ा। वह आदमी कहकहे लगाने लगा। यात्री की समझ में कुछ न आया कि यह क्या माजरा है। वह चुपके-से आगे बढ़ गया। आगे जाकर उसे एक आदमी मिला, जिसके हाथ में हथौड़ा था और जो इस सारी धूम-धाम से बेपरवाह शान्ति के साथ आगे चला जा रहा था। यात्री ने उसे रोककर पूछा—

"भाई, एक क्षण के लिए रुक जाओ और मुझे बताओ कि क्या माजरा है?"

हथौड़ेवाला आदमी चलते-चलते रुक गया और कुछ रुककर बोला—

"पाँचू और उसके दरबारी पिछले दस साल से जिस विधान का निर्माण कर रहे थे वह आज पूरा हो गया है। इसकी खुशी में आज जनतन्त्र दिवस मनाया जा रहा है।"

"मगर वह एक करोड़ बार क्या है?"

"जाओ, दरबार-हॉल में राजसी उत्सव देखो और मुझे परेशान न करो; मुझे बहुत काम करना है।"

इतना कहकर वह आदमी उस भीड़ में लीन हो गया और यात्री दरबार-हॉल की ओर बढ़ गया।

दरबार में जाकर यात्री ने देखा कि दरबार-हॉल काली झण्डियों से सजा हुआ है और हर एक झण्डी पर चाँदी के रुपये की तस्वीर बनी हुई है। यात्री ने एक दरबारी से पूछा—

"यह क्या ब्लैक मार्केट का रुपया है?"

"शि-शि-शि," दरबारी ने मुंह पर अँगुली रखते हुए कहा, "यह हमारे दरबार का राष्ट्रीय चिह्न है।"

"क्षमा कीजिए," यात्री ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "मैं बिलकुल नवागन्तुक हूँ। आपके देश के रीति-रिवाजों से बिलकुल परिचित नहीं हूँ, इसीलिए इतना बता दीजिए कि यह एक करोड़ बार क्या

क्या है ?"

दरबारी ने फिर अपने मुँह पर अंगुली रखकर कहा—"शि...! चुप रहो। इस समय राष्ट्रीय विधान पर राजकुमार पाँचू

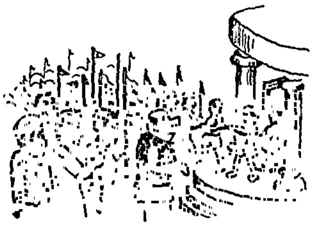

का अन्तिम भाषण आरम्भ होने वाला है। ध्यान से सुनो। शायद तुम्हें इस भाषण में अपने सवाल का जवाब मिल जायगा।"

यात्री बड़े ध्यान से भाषण सुनने लगा।

राजकुमार पाँचू ने कहा—

"हम जनता के लिए हैं। हमारा शासन जनता के लिए है। जनता के धन्यभाग हैं कि जिस जन-विधान के लिए हम पिछले दस साल से रात-दिन परिश्रम कर रहे थे वह आज जनता के भले के लिए हमने पूरा कर लिया है। (तालियाँ) इसी जन-विधान की धाराओं के अनुसार जनता अपने शासन की आप मालिक होगी; यानी जमीनों के मालिक जमीदार और जागीरदार होंगे और कारखानों के मालिक कारखानेदार (सरमायादार) होंगे और शासन के अधिकारी होंगे। लेकिन शासन जनता का रहेगा और विधान के

अनुसार जनता को पूरा अधिकार होगा कि वह परम्परा की तरह भूखी रहे, नङ्गी फिरे और सड़कों पर सोये। यदि वह चाहे तो जेल भी जा सकती है और गोली भी खा सकती है। जनता को इन बातों का पूरा-पूरा अधिकार होगा और हमने स्थान-स्थान पर अपने विधान में इस बात का खयाल रखा है। लेकिन यह कभी नहीं हो सकता कि जनता जमीनों पर, कारखानों पर, नौकरियों पर और आर्थिक, औद्योगिक व्यवसाय एवं शासकीय विभागों पर अपना अधिकार जमा ले। यह व्यवहार जनतन्त्र के विरुद्ध होगा और इसलिए इसे जनहित के विरुद्ध समझा जायेगा।

"हम जनता से प्रेम करते हैं और उसके साथी हैं। इससे पहले हमने चाहा था और वादा भी किया था कि इस विधान को जनता खुद बनायेगी। मगर चूंकी जनता अभी नासमझ है और दूसरे, इस समय संगलद्वीप को बंगल द्वीप से खतरा है और पाँचू संस्कृति के विनाश के मनसूबे किये जा रहे हैं, इसलिए यह विधान स्वयं हमने ही अपने दरबारियों के के साथ मिलकर बना लिया है। आशा है कि जनता को यह विधान पसन्द आयेगा। और पसन्द आए या न आए, इस विधान को अब तो देश में प्रचलित होना ही है। जो आदमी इसका विरोध करेगा उसे जनता का दुश्मन समझकर गोली से उड़ा दिया जायगा।

"अन्त में मैं जनता से अपील करता हूँ कि वह इस विधान को सफल बनाए; खुद गम खाकर दूसरों को खाना खिलाएं और अपने राज-दरबारियों पर पूरा भरोसा रखे। हम आपके पुराने सेवक हैं, पिछले पचास बरस से आपकी सेवा कर रहे हैं, यद्यपि इससे आपकी दशा में कोई अन्तर नहीं हुआ, मगर यह तो भाग्य की बात है। हम क्या कर सकते हैं सिवाय सेवा के? मैं जनता को विश्वास दिलाता हूँ कि हम जनता के साथी हैं। हमारे सारे दरबारी जनता की भलाई चाहते हैं और इसका प्रमाण यह है कि हमने इस विधान की तैयारी में पिछले दस वर्षों में एक करोड़ बार जनता का नाम लिया है; एक

करोड़ बार; एक करोड़ बार''क्या दुनिया की कोई पार्लियामेण्ट जनतन्त्र में हमारा मुकाबला कर सकती है ?" (दस मिनट तक तालियाँ)।

अभी दरबार-हाल तालियों से गूँज ही रहा था कि एकाएक किसी ने आकर खबर दी—

"हुजूर, जनता दरबार की ओर आ रही है।"

"हाय !" पाँचू ने घबराकर कहा, "वह इधर क्यों आ रही है? उसका इधर क्या काम है ?"

दूसरा जासूस आया—"हुजूर, जनता दरबार की ओर बढ़ती चली आ रही है, चारों ओर से आ रही है।

पाँचू ने कहा—"उसे रोक दो। उसे रोक दो। इसी में जनता की भलाई है।"

तीसरे जासूस ने आकर कहा—"हुजूर वह नहीं रुकती; आगे-आगे बढ़ती जाती है। वह कहती है हम अपने पाँचू को देखेंगे; अपने दरबारियों से मिलेंगे, अपने दरबार में खुद बैठकर अपनी भेंट हुजूर की खिदमत में पेश करेंगे।"

"मगर," एक दरबारी ने कहा, "मगर वे लोग यहाँ कैसे आ सकते हैं ? यहाँ सुगन्ध है और उनके शरीर से दुर्गन्ध आती है। यहाँ अच्छे कपड़े हैं और उनकी पोशाकें तार-तार हैं, यहाँ स्वास्थ्य है वहाँ बीमारी।"

"हुजूर !" दरबारी ने हाथ जोड़कर पाँचू से कहा, "हुजूर ! अगर जनता यहाँ आ पहुँची तो हमारी तन्दुरुस्ती खराब हो जायगी"

पाँचू ने कहा—"उन्हें रोक दो; फौरन रोक दो। जन-विधान की दफा आठ के अनुसार···"

इतने में चौथा जासूस भागता हुआ आया।

"हुजूर, गजब हो गया। जनता बिगड़ गई, बदल गई। पहले तो वह अपनी जेब में उपवास और अपने हाथ में आपके लिए भेंट लिए बम

रही थी, मगर अब वह चलते-चलते थक गई है हुजूर ! उसे मालूम नहीं था कि दरबार इतनी दूर होगा। अब उन्होंने अपनी भेंट जेब में डाल ली है और हाथों में दृढ़ निश्चय लिये आगे बढ़ रही है। हुजूर, मैंने रोकना चाहा तो उन्होंने मुझे जोर से घूरा और आगे बढ़ गए और एक भयावना गीत गाने लगे—वह गीत जो दरबार को भी बदल देना चाहता है, जो कहता है कि अब जनता के पास भी अपना सिर है, अपनी अक्ल है, अपनी सूझ-बूझ है।"

सारा दरबार अमानवीय चीखों से गूंज उठा—"फौज बुलाओ, फौज ! जनता को उसका सिर मिल गया है ! जनता को अक्ल मिल गई है ! अरे, पुलिस किधर है ? फौज किधर है ? जनता को सिर मिल गया ! अब वह हमारे दरबार को खत्म कर देगी ! फौज बुलाओ, उसे गोली से उड़ाओ।"

पाँचवाँ जासूस खून में लथपथ दरबार के अन्दर आया और आते ही जमीन पर लेटकर कहने लगा—"वे लोग बहुत पास आ गए हैं। उन लोगों के पास भूख के पत्थर हैं, अकाल की आग है, नग्नता का बारूद है और इन्कलाब का डाइनामाइट है। हुजूर, फौज को आज्ञा दीजिए।"

पाँचू ने गारद के कमाण्डर से कहा—"मारो !"

कमाण्डर सलामी देकर बाहर चला गया। पाँचू ने कहा—"दरबार का कार्यक्रम जारी रखा जाय। अब दरबारी नम्बर सात का भाषण होगा।"

दरबारी नम्बर सात ने कहा—"हमारे जन-विधान की ४२वीं धारा के अनुसार जनता को लिखने और बोलने की, जलसे और जुलूस की पूरी स्वतन्त्रता होगी, मगर ..."

यात्री दरबार से बाहर निकल आया। बाहर गोली चल रही थी। मशीनगनों की तड़ातड़ जोरों पर थी। अन्दर दरबारी नम्बर सात भाषण दे रहा था और जनता दरबार-हॉल से दूर-दूर धरती पर बिछी जा रही थी, लोट-पोट हो रही थी और खून की लहरें बह

रही थी। यात्री इस दृश्य को देख न सका और वह उसी वक्त संगल द्वीप से विदा हो गया और बंगल द्वीप जाने के लिए एक नौका पर सवार हो गया ताकि देखे कि वहाँ की जनता किस हाल में है। वहाँ जनता अवश्य अच्छी दशा में होगी, उसने नौका में बैठे-बैठे सोचा।

नाव समुद्री खाडी को चीरती हुई बंगल द्वीप के किनारे की ओर बढ़ रही थी। मल्लाह चुपचाप डाँडे पर बैठा हुआ था। एकाएक नाव का रेडियो बोल उठा—हम बगल द्वीप से बोल रहे हैं। यात्री चौंका और रेडियो की ओर मुड़ा।

"हम बगल द्वीप से बोल रहे हैं," रेडियो कह रहा था, "हमने सगल द्वीप वालो को विधान की लड़ाई में भिड़ा दिया है। श्रोता यह जानकर प्रसन्न होंगे कि संगल द्वीप का विधान सिर्फ दस साल में बना है, लेकिन हम बगल द्वीप का विधान बीस वर्ष में बनायेंगे और अगर पिछले दस साल में संगल द्वीप के दरबार ने जनता का नाम एक करोड़ बार लिया है तो हमारे दरबार ने इस अवधि में जनता का नाम दो करोड़ बार लिया है, दो करोड़ बार दो करोड़ बार दो करोड़ बार·· "

यात्री के कानो मे दो करोड़ मशीनगनो की आवाज आई।

"नौका घुमा लो," यात्री ने मल्लाह से कहा, "मैं अपने देश फड्गल द्वीप जाऊँगा, जहाँ न दरबार है न दरबारी, सिर्फ जनता ही जनता है।"

साहब

"साहब, यह मैं क्या सुनता हूँ कि इस देश में खाने की कमी है; लोगों को खाना नहीं मिलता ! यह झूठ है, गलत दोषारोपण है और किसी कम्युनिस्ट की घड़ी हुई बात है। वरना साहब, वास्तव में इस देश में खाने की कोई कमी नहीं है। यहाँ हर प्रकार का खाना मिलता है। अब मुझको देखिए; मैं मुर्ग, बटेर, तीतर, पुलाव, कोरमा, कबाब हर चीज खाता हूँ, प्रतिदिन खाता हूँ और बड़े मजे से खाता हूँ। सुबह-शाम मेरी थाली में भाँति-भाँति की साग-तरकारियाँ परोसी जाती हैं। और अभी परसों की बात है। मैं एक मंत्री के यहाँ निमन्त्रण पर गया था। वहाँ पर कम-से-कम दस प्रकार के खाने मेज पर सजे हुए थे और हर प्रकार के फल मौजूद थे। इतने बड़े-बड़े सन्तरे मैंने कहीं नहीं देखे। हमारे नागपुर के सन्तरे तो उनके सामने कुछ भी नहीं हैं। मंत्री से पूछने पर मालूम हुआ कि सन्तरे खास तौर पर अमरीका के कैलिफोर्निया नामक स्थान से मँगवाये गए हैं और उनकी कीमत प्रति सन्तरा तीन 'मार्शल डालर' है। कैलिफोर्निया की दो वस्तुएँ बहुत प्रसिद्ध हैं, एक तो सन्तरे और दूसरी हालीवुड की एक्ट्रेसें। अभी सन्तरे आये हैं, लेकिन जब 'मार्शल योजना' हिन्दुस्तान पर लागू होगी तो हालीवुड की एक्ट्रेसें भी आयेंगी और देश के उद्योग-धन्धों को प्रोत्साहन देंगी।

"ख़ैर, बात खाद्य की हो रही थी, मैं कहाँ से कहाँ पहुँच गया! उस दिन की बात है जब कि मैं गवर्नमेण्ट हाउस में निमन्त्रित किया गया था। वहाँ पर भी मैंने खाने-पीने की कमी नहीं देखी। कई बार अपने दोस्त रणछोड़दास के यहाँ सभाएँ हुईं। उनमें सभी लोग खाते-पीते, आनन्द मनाते नजर आये। समझ में नहीं आता कि अखबारों में हर रोज यह खबर कैसे आ जाती है कि देश में अन्न का सकट है। साहब, मैं सच निवेदन करता हूँ कि देश में अनाज का सकट कहीं नहीं है और अगर कहीं है तो कम्युनिस्टों का पैदा किया हुआ है। आप इनको गोली मार दीजिए, अन्न संकट अपने-आप मिट जायेगा। ये कम्युनिस्ट बड़े बदमाश होते हैं, साहब! मैं आपको अपना उदाहरण देता हूँ। एक बार ऐसा हुआ कि मैंने अपने ड्राइवर को तीन महीने से तनख्वाह नहीं दी। कुछ ऐसा ही संयोग हो गया, अन्यथा मैं तो अपने कर्मचारियों का स्वयं ही बहुत खयाल रखता हूँ। तो साहब, वह बहुत चीं-चपड़ करने लगा। मैंने जब उसे अच्छी तरह से डाँटा तो दूसरे दिन लाल बावटे वालों को बुला लाया। और आस-पास की कोठियों में शोर मच गया कि पहली कोठी वाले साहब ने अपने ड्राइवर की तीन महीने की तनखा मार ली है। साहब, इन लाल बावटे वालों ने उस ड्राइवर को तीन महीने की तनखा दिलवाई और एक महीने का बोनस अलग दिलवाया। ऐसी औंधी खोपड़ी के लोग हैं ये! इनको हमारी सरकार जितनी जल्दी समाप्त कर दे अच्छा है। हमने स्वराज्य इसलिए नहीं लिया कि ड्राइवरों को बोनस देते फिरें और मजदूरों को मुँह लगाने लगें। ऐसे हुकुमत हो चुकी!

"हाँ भई, दूसरा पेग बना लो। मगर जरा बड़ा बनाना। जाने क्यों आज ब्राण्डी में मजा ही नहीं आ रहा है! और ये मक्खन में तले हुए हरे मटर और आलू के चकत्ते भी क्यों लकड़ी के बने हुए मालूम पड़ते हैं? होटल वालों ने अपना खानसामा बदल दिया है शायद! क्यों मियाँ टेलर, वह पुराना खानसामा कहाँ चला गया?

साठ रुपए तनखा माँगता था ? बाप रे ! अरे मियाँ, ये लोग साठ क्या साठ सौ में भी खुश नहीं होंगे। आजकल तो जमाने की हवा ही ऐसी है। जिसे देखो, सिर पर चढ़ा आ रहा है। कहता है, महँगाई दो, जीवन-वेतन दो। अरे भई, अब साठ माँगते हो, पहले कैसे सात में गुजर करते थे ? मैं कहता हूँ आग लग रही है, जमाने को। चीन में देखो क्या हो रहा है ? मलाया में क्या हो रहा है ? बर्मा में क्या हो रहा है ? यह हमारी सरकार क्यों सोई पड़ी है ? चीन में फौजें यों नहीं भेजती ? बर्मा और मलाया में क्यों नहीं सेना भेजती ? क्या हुआ है इसको ? अरे भाई, मैंने तो अपनी पत्नी के हीरे-जवाहरात और आभूषण स्विटज़रलैंड भेज दिये हैं। तुमने कहाँ भेजे हैं ? दक्षिणी अमरीका ? हाँ, भई ! मैंने भी सुना है कि ब्राजील आजकल बहुत ही सुरक्षित स्थान है। वहाँ आजकल कोई कम्युनिस्ट दम नहीं मार सकता। मगर यार, इधर आओ ! समीप आओ ! एक बात कान में कहता हूँ। कोई भरोसा नहीं है इन लोगों का। क्या मालूम किसी दिन वहाँ भी उठ खड़े हों ? ड्राइवर लोग वहाँ भी तो होते होंगे। हाँ, मजदूर भी होंगे। बस, ये लोग फिर वहाँ भी पहुँच जायँगे।

"हाँ, भाई ! मैं खाद्य पदार्थों की बात कर रहा था। हिन्दुस्तान में अन्न की क्या कमी है ? अरे मियाँ, यह तो सोने की चिड़िया है, सोने की चिड़िया ! यहाँ की तो मिट्टी भी सोना उगलती है। एक दिन हमारे भंगी को कूड़े के ढेर में सोने का लटकन मिला। एक दिन मैंने देखा कि भंगी की बीवी ने मेरी पत्नी का लटकन पहन रखा है। हमारे भंगी की बीवी बड़ी खूबसूरत है। देखो तो लट्टू हो जाओ। एक दिन आ जाना, तुम्हें दर्शन करायँगे। ही—ही—ही··· । मैंने उससे पूछा—'तूने यह लटकन कहाँ से लिया ?' बोली—'मेरे घर वाले ने दिया है।' मैंने भंगी से पूछा। वह बोला—'मुझे कूड़े में मिला था।' यह है हिन्दुस्तान की मिट्टी !

अपना उदाहरण देता हूँ। एक बार जब मैं बहुत छोटा था,

मैंने भंगी के बेटे के साथ, यानी यह जो अब हमारा भंगी है, इसके साथ खेलते हुए कूड़े के ढेर को ढूंढना शुरू किया, तो उसमें से हमें चार आने के पैसे मिले। दो सन्तरे, एक अमरूद और एक किताब के पन्ने, जिसका नाम था 'सौन्दर्य के साधन' और एक जनाना स्लीपर

का जोड़ा (जिससे बाद में अम्मा ने मुझे पीटा), एक केक का टुकड़ा, जिसके साथ मक्खन लगा हुआ था, बहुत सारा पुलाव और गोश्त और चार-छ रोटियां। यह तो एक कूड़े-करकट के ढेर का हाल है। अब जरा गिन जाओ आस-पास की सैंकड़ों कोठियां! ये गरीब लोग, जो इन ढेरों को टटोलते हैं, मजा उड़ाते हैं, मज़ा! कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि बड़े-बड़े शहरों में ऐसे लाखों-करोड़ों ढेर लगे रहते हैं, जिनसे लाखों-करोड़ों आदमी फायदा उठाते हैं। और हमें तुम्हें इससे कोई लाभ नहीं होता, यद्यपि हमारे ही घरों से सब चीजें जाती हैं। मैं तो कहता हूं कि हमारी सरकार इन कूड़ा-करकट चुनने वालों पर टैक्स लगा दे तो कैसा रहे? लाओ हाथ, मेरे यार! कैसी बात कही है! इस बात पर सरकार को हमें मंत्री

बना देना चाहिए। करोड़ों रुपए की आमदनी कर दूं इसी एक टैक्स से। मैं तुमसे सच कहता हूँ ये लोग वास्तव में कूड़े-करकट के ढेर से खाना नहीं ढूंढ़ते हैं। यह सब कम्युनिस्टों की चालबाजी है। मैं सब जानता हूँ। इन सब लोगों पर टैक्स लगाना चाहिए। क्या विचार है—मैं सरकार को पत्र लिखूं ?

"यह अन्न की पैदावार बढ़ाने का सवाल भी सरकार को यों ही परेशान कर रहा है, वरना हिन्दुस्तान में क्या नहीं होता! गेहूँ होता है, बाजरा होता है, मक्का होती है, गन्ना होता है, पटसन होता है, गुलाब का फूल होता है, अण्डा होता है और मुर्गे की टाँग होती है, जिसका जवाब दुनिया में कहीं नहीं है। क्यों सच कहना ? मुर्गे की टाँग का जवाब दुनिया में है ? सच कहना दोस्त ? क्या मजे की बात कही है! और लोग अनाज पैदा करने का रोना रो रहे हैं। अरे भाई मैं तुम्हें अपना उदाहरण देता हूँ। मेरे पास चार दर्जन से ज्यादा फैल्ट की टोपियाँ होंगी। और एक टोपी की बारी दूसरे-तीसरे सप्ताह कहीं जाकर आती है। अब एक बार मैं मॉव (mauve) रंग की अमरीकी टोपी पहनने लगा (क्योंकि मैं उसके साथ का अमरीकन सूट पहन रहा था) कि मैं क्या देखता हूँ कि टोपी के ऊपर एक खूबसूरत पी-फ्लावर उगा हुआ है। ऐं! यह कैसे हुआ ? देखा तो टोपी के ऊपर एक जरा-सी मिट्टी का टुकड़ा पड़ा हुआ है। कहीं रास्ते में गिर गया होगा। कहीं से उसे नमी भी मिल गई होगी। अब यह इस जरा-सी मिट्टी से फूल उग आया, तो जनाब यह है हिन्दुस्तान की मिट्टी! मैं सोचता हूँ अगर प्रत्येक हिन्दुस्तानी अपनी टोपी पर अन्न उगाना शुरू कर दे तो कैसा रहे ? टोपी की ऊपरी सतह बावन वर्ग इंच है और हिन्दुस्तान में तीस-पैंतीस करोड़ आदमी तो बसते ही होंगे। अब हिसाब लगा लो तुम। मैं कहता हूँ, अगर हिन्दुस्तान के सारे आदमी सिर्फ अपनी टोपियों पर फसल उगाना शुरू कर दें तो कभी दुर्भिक्ष नहीं हो सकता। क्या कहते हो—नंगे सिर वाले लोग क्या करें ? अरे भई, उनके

सिरों पर भी कानूनन टोपियाँ बल्कि छोटी-छोटी मिट्टी की टोकरियाँ रख दी जायें। हा—हा—हा! कैसा लुत्फ रहे! क्या दिमाग

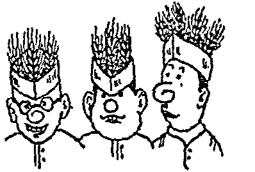

काम कर कर रहा है मेरा इस वक्त? जरा अब भी एक बड़ा पेग देना। असली फ्रेंच ब्राण्डी पीकर मेरा दिमाग काम करता है। जाने मद्य-निषेध के बाद क्या होगा? खैर, यार तो तब भी पियेंगे। यहाँ नहीं पियेंगे तो गोआ जाकर पियेंगे। मैंने तो अपना बैंक एकाउण्ट भी गोआ भेज दिया है। जाने यहाँ कल को क्या हो जाय! कौन किसीका भरोसा करे? एँ! तुम भी ऐसा ही करो मेरे यार! बस, दो-चार लाख यहाँ रहने दो, बाकी बाहर भेज दो।

"अच्छा भैया, एक बात और सुनो। अपने यहाँ जो कहते हैं कि अन्न का संकट है तो ये लोग कुत्ते, चूहे, बिल्लियाँ क्यों नहीं खाते? अरे भाई, दूसरे कई पूर्वी देशों मे तो लोग इन्हें बड़े चाव से खाते हैं। कुत्ते, बिल्लियाँ क्या, वे लोग तो साँपों तक को उबाल-कर खा जाते हैं। यहाँ क्यों नही खाते ये लोग? यहाँ तो कुत्ते, बिल्लियाँ, चूहे इतनी संख्या में हैं कि क्या बताऊँ! स्वयं मेरी कोठी में इतनी भारी सख्या में हैं कि इनसे एक अच्छा-खासा चीनी रैस्तराँ खुल सकता है। मगर किसी मे इतनी अक्ल ही नहीं कि इन गरीब आदमियों से यह चीजें खाने को कहें। स्वयं हैं प्रति सप्ताह

राशन में गेहूँ और बाजरा और चावल देकर इन लोगों के दिमाग खराब कर रहे हैं। मैं तो समझता हूँ राशन एक सिरे से बन्द ही कर देना चाहिए। तब कहीं जाकर ये लोग सीधे होंगे। अरे, मैं तुम्हें अपना उदाहरण देता हूँ। मैं जब पेरिस में था तो मुझे एक कैनेडियन कमाण्डर ने बताया कि एक बार वह ऐसे प्रदेश में चले गए कि उन्हें दो सप्ताह तक घास ही उबालकर खानी पड़ी और वे लोग घास ही उबालकर खाते रहे और बिल्कुल ठीक, मजे में तन्दुरुस्त रहे। अब बताओ, यदि युद्ध के दौरान में कैनेडा के यूरोपियन लोग घास खा सकते हैं तो कमी के दिनों में हिन्दुस्तानी लोग घास क्यों नहीं खाते ?

"क्या कहा ? बीजापुर के लोग घास ही खा रहे हैं ! गुजरात में भी ! ठीक है ! इन अहमकों (मूर्खों) के साथ ऐसा ही व्यवहार होना चाहिए। निरे मूर्ख हैं ये लोग ! क्या कहा तूने ? मूर्ख न होते तो कूड़े के ढेर में खाना क्यों ढूँढ़ते ? स्वराज्य में आजादी क्यों देखते ? और अटलाण्टिक चार्टर में शान्ति क्यों तलाश करते ? और पूँजीपति से प्रेम की आशा क्यों रखते ? ···कौन है तू जो हम दो शरीफ आदमियों के बीच में बोलता है ? अरे तू इस होटल का बैरा है ? यहाँ हमारे पास खड़ा होकर सारी बातें सुनता है ! तू भी मुझे कम्युनिस्ट मालूम होता है। मैं अभी मैनेजर से तेरी रिपोर्ट करता हूँ। नहीं, नहीं, यार ! अब मैं और नहीं पियूँगा। इस साली से नशा ही नहीं आ रहा है।"

मूँग की दाल

पूज्य बोंगा भाई जी,

वन्देमातरम्! बोंगानाथ प्रान्त में कांग्रेस-मिनिस्ट्री को जमाना कोई सरल काम न था, क्योंकि प्रान्तीय असेम्बली में प्रत्येक सदस्य की एक अपनी अलग पार्टी थी और मुझे हर समय यह भय सताता रहता था कि कहीं असेम्बली के सदस्यों का बहुमत हमारी केबिनेट (मंत्रीमण्डल) के अल्पमत को धोखा न दे दे। ऐसी स्थिति को देखते हुए मुझे निम्नलिखित काम करने पड़े। सो भी इस आदर्श को सामने रखकर कि जब तक हमारे प्रान्त में कांग्रेस-मिनिस्ट्री दृढ़ नहीं हो जाती, हमारे प्रान्त में बोंगा राज्य स्थापित नहीं हो सकता। वन्देमातरम्!

मंत्रिमण्डल बनाते ही सबसे पहला काम मैंने यह किया कि अपने सिवाय असेम्बली के तमाम मेम्बरों को अपने दुश्मनों (विरोधियों) की सूची में लिख लिया। (हमारी असेम्बली में उनचास मेम्बर हैं।) फिर इस सूची में से मैंने दस ऐसे नाम छाँट लिये जो हर अवसर पर मेरा विरोध किया करते थे। इनको मैंने मंत्री चुन लिया। ये लोग इससे पहले मेरे कट्टर विरोधी थे, अब मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं और कांग्रेस-मिनिस्ट्री के सबसे अधिक विश्वस्त अधिकारी समझे जाते हैं।

फिर अखबार में शोर मचायेंगे। इसलिए मैं बहुत चिन्तित था और सोच रहा था कि इन लोगों को कैसे राजी करूँ। इतने में विरोधी पक्ष के एक प्रमुख सदस्य ने किसी साधारण-सी बात पर भूख-हड़ताल शुरू कर दी और मुझ पर दबाव डालने लगा। लेकिन मैं कहाँ दबने वाला था! मैंने उसे बताया कि आजकल हर तरह की हड़तालें गैर-कानूनी करार दी जा चुकी हैं। तुम भूख-हड़ताल भी नहीं कर सकते। फिर इस प्रकार का दबाव डालना सत्य और अहिंसा के विरुद्ध है। फिर अब भूख-हड़ताल की आवश्यकता ही क्या है। कांग्रेस ने योगराज स्थापित करके योगास्थान के इतिहास में एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है जो, जब तक दुनिया रहेगी, जगमगाता रहेगा आदि, आदि। बहुत सारी बातें मैंने उससे कहीं, लेकिन वह कम्बख्त नहीं माना। अपनी भूख-हड़ताल पर डटा रहा। अन्त में एक दिन मैंने उसे अलग ले जाकर कहा कि तुम्हें वास्तव में भूख-हड़ताल की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता तुम्हें इस बात की है कि तुम्हारे पास एक शानदार परमिट हो, जिसके द्वारा तुम विलायत से ब्यूक गाड़ियाँ यहाँ मँगा सको। मेरी यह योजना सुनते ही उसका चेहरा खिल उठा और उसने उसी समय 'बीयर' का एक गिलास मँगवाकर अपनी भूख-हड़ताल तोड़ दी।

इससे मुझे यह भी मालूम हो गया कि परमिट में कितनी

शक्ति है, और जोर है, अपनी बात मनवाने का। उस दिन से मैं अपनी दाहिनी जेब में परमिट और बाईं जेब में शेष सभी मेम्बरों को रखता हूँ (सिर्फ उन दो बदमाश कम्युनिस्टों को छोड़कर जो जेल में हैं)। और अब मन्त्रि-मण्डल का काम बड़े मजे में चलता है। सच बात तो यह है कि अब हमारी असेम्बली में कोई विरोधी पक्ष ही नहीं है। और बोंगाराज में विरोधी पक्ष की आवश्यकता ही क्या है ? अब मैं आपसे यह निवेदन करता हूँ कि यदि आप आगामी चुनाव के समय मेरे आदमियों को बोंगा-टिकट दे दें तो वे लोग हमेशा आपके अनुयायी रहेंगे। अन्त में मुझे सिर्फ यह कहना है कि कुछ बदमाश बांग्रेस वालों ने मुझे दुश्चरित्र कहकर आपके कान भरे हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि यह आरोप मिथ्या और सर्वथा निराधार है। मैं रत्ती-भर भी दुश्चरित्र नहीं हूँ पिछले बारह वर्ष से मैं अपनी पत्नी के साथ भी अपनी माँ और बहन का-सा व्यवहार कर रहा हूँ; और यह बांग्रेस के सच्चे आदर्शों के अनुसार है। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैंने स्थायी रूप से इन्द्रिय-निग्रह कर लिया है। आजकल मैं सिर्फ मूँग की दाल खाता हूँ और नीरा पीता हूँ। जो लोग यह कहते हैं कि मैं दुश्चरित्र हुँ उन्हें मालूम होना चाहिए कि हमारी असेम्बली में कोई महिला मेम्बर तक नहीं है। फिर मुझ पर चरित्रहीनता का अभियोग क्यों कर लगाया जा सकता है ?

प्यारे बोंगा भाई, मुझे आप से आशा है कि आप उन दुश्मनों की बातों में नहीं आयँगे। ये लोग तो आपके और मेरे बीच मनमुटाव की खाई खोदने पर तुले हुए हैं।

और अब मैं अपने इस पत्र को एक सुसंवाद के साथ पूरा करता हूँ। आप सुनकर अत्यधिक प्रसन्न होंगे कि यद्यपि मैं वकालत की परीक्षा में पाँच बार अनुत्तीर्ण हो चुका हूँ, लेकिन अब बोंगा-यूनिवर्सिटी इस वर्ष मुझे कन्वोकेशन के अवसर पर एल० डी०, यानी वकालात की सबसे ऊँची डिग्री, आनर्स के साथ

प्रदान कर रही है। हा-हा-हा ! मेरा जी कहकहे लगाना चाहता है। समय का फिरना देखिए ! इसी यूनिवर्सिटी ने मुझे अपने विद्यार्थी जीवन में अकालिया की परीक्षा में पाँच बार अनुत्तीर्ण कर दिया था। और अब हा-हा-हा !

आपका,
बहुत-बहुत-बहुत विश्वासपात्र
बोंगाचन्द

प्रधान मन्त्री—उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी बोगानाव प्रान्त, बोंगास्थान जनतन्त्र।

प्यारे बोंगाचन्द,

वन्दे ! तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जिन कोशिशों से तुमने अपने प्रान्त में बापेसी-मिनिस्ट्री स्थापित की है वह इस बात का प्रमाण है कि हुजूर महाराज की मृत्यु के बाद उनकी आत्मा हमारा मार्ग-प्रदर्शन कर रही है। मुझे तुम पर पूरा-पूरा भरोसा है और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि आगामी चुनाव में तुम्हारी हर तरह से यथासम्भव मदद की जायेगी और तुम्हीं को पूरे उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वी, पश्चिमी (कोई दिशा छूट गई हो तो वह भी लिख देना) बोगानाव प्रान्त का प्रधान मन्त्री बना दिया जायगा।

लेकिन एक बात मेरी समझ में अब तक नहीं आई। तुमने मिनिस्ट्री बनाते समय बगुले को क्यों नजर अन्दाज किया ? बगुला, मैं जानता हूँ कि एक बहुत ही मूर्ख और सम्प्रदायवादी आदमी है। लेकिन आज की परिस्थितियों में वह हमारे बड़े काम का आदमी सिद्ध हो सकता है। तुम्हारे प्रान्त में उसका काफी जोर है। मेरा खयाल है कि तुम बगुले को मन्त्रि-मण्डल में ले लो और उसके समर्थकों को यानी बगुला-भक्तों को दो-चार पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरियों के पद बाँट दो। फिर इस प्रान्त में से हमें कोई नहीं हिला सकता। इस बात को कभी न भूलो कि फिर भी कभी हमारे प्रयत्नों के

बावजूद आम चुनाव होगा। उस समय हमें बगुला-भक्तों की बड़ी जरूरत होगी।

मैं तुम्हारे उस काम से भी सन्तुष्ट नहीं हूँ जो तुमने अब तक रिफ्यूजी लोगों के लिए किया है। इसके सिवा तुम्हारे प्रान्त में अन्न का सवाल है। खाने-पीने की चीजें मँहगी हैं। इस सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट तत्काल भेजो। और मूंग की दाल का खाना फौरन बन्द कर दो। मूंग की दाल खाना और तीसरे दर्जे में यात्रा करना उन दिनों अच्छा मालूम होता था जब श्री हुजूर महाराज जीवित थे। उनके मरने के बाद अब कोई ऐसी आवश्यकता शेष नहीं रह गई। और फिर तुम जिस पद पर हो उस गद्दी पर बैठकर मूंग की दाल खाना सरकारी रौब-दाब और दबदबे के प्रतिकूल है। इस आदत का तत्काल परित्याग करो।

तुम्हारा
बोंगा भाई

पूज्य बोंगा भाई,

वन्देमातरम्! आपका गुप्त पत्र मुझे मिला। मैंने जाँच-पड़ताल करके निम्नलिखित कार्य कर डाले हैं—

(१) मैंने बगुला-भक्तों में एक को मन्त्री चुन लिया है। लेकिन उसके पास कोई विभाग न होगा; केबिनेट में उसका कोई स्थान न होगा; और असेम्बली में उसकी कोई सीट न होगी, क्योंकि वह असेम्बली का सदस्य नहीं है। बगुले ने अपनी ओर से यह आश्वासन दिया है कि वह साम्प्रदायिकता (फिरकापरस्ती) को बिलकुल तिलाञ्जलि दे देगा; और आगे से मुसलमानों को हरिजनों के बराबर समझेगा। इससे आप समझ जायँगे कि बगुले ने कहाँ तक अपनी साम्प्रदायिकता को छोड़ दिया है।

(२) लेकिन बगुला-भक्तों को पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी चुनना बड़ी टेढ़ी खीर है। मैं यों तो इन्हें पार्लियामेण्टरी सेक्रेटरी बना सकता हूँ या उपमन्त्री बनाकर इन्हें डिप्टी-सेक्रेटरियों के साथ

लगाकर गुप्त न्यायालय की कार्यवाहियों के लिए भी नियुक्त कर सकता हूँ, लेकिन सवाल नियुक्तियो का नही है; सवाल वास्तव में यह है कि बगुला-भक्त तो असेम्बली के मेम्बर भी नही हैं। इसलिए अधिक मन्त्री बनाने के लिए यह आवश्यक है कि असेम्बली के अधिक सदस्य बनाये जायें। और इसके लिए यह जरूरी है कि प्रान्त में उम्मीदारों के लिए ज्यादा निर्वाचन-क्षेत्र मंजूर किये जायें। यह काम इस तरह से भी हो सकता है कि नये निर्वाचन-क्षेत्रों के बजाय पुराने निर्वाचन-क्षेत्रो का ही बँटवारा करके ज्यादा हिस्से कर दिये जायें। लेकिन निर्वाचन-क्षेत्र निश्चित करने का अधिकार तो केन्द्र को ही है और आप लोग इस काम में निष्णात भी हैं। एक पूरे महाद्वीप का बँटवारा करके आपने काफी अनुभव प्राप्त किया है। मैं चाहता हूँ कि निर्वाचन-क्षेत्रों के बँटवारे में आप मेरी सहायता और मार्ग-प्रदर्शन करें।

(३) हमारे प्रान्त में अब कोई रिफ्यूजी-समस्या नही रही। मैंने अपने शरणार्थी-मन्त्री से इसकी जाँच-पड़ताल कर ली है। उनका कहना है कि अब हमारे प्रान्त में कोई शरणार्थी-समस्या नहीं है। इससे पहले शरणार्थियो का सवाल बहुत ही गम्भीर रूप धारण कर चुका था। फिर मैंने वर्तमान मन्त्री को, जो स्वयं शरणार्थी हैं, शरणार्थी-मन्त्री बना दिया और अब यह समस्या हल हो चुकी है। न केवल यहाँ कोई रिफ्यूजी-समस्या है, बल्कि कोई रिफ्यूजी भी नही है। जो शरणार्थी थे, वे सब-के-सब या तो कैम्पों में और या जेलो में बसा दिये गए हैं; और जो कुछ गिने-चुने इज्जत वाले शरणार्थी बाकी रह गए थे, उन्हें जमीन, ठेका व परमिट आदि देकर बसा दिया गया है। इनके बाद अब मैं किसी रिफ्यूजी-समस्या पर विचार करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हाँ अगर आपकी आज्ञा हो तो दूसरी बात है।

(४) जहाँ तक वस्तुओं की मँहगाई का सम्बन्ध है, मेरा ख्याल है कि इसकी ओर ध्यान ही न दिया जाय। केन्द्र से भी

मेरा यही निवेदन है कि वह चीजों की मँहगाई की ओर जरा भी ध्यान न दें; ऐसा समझ ले मानो मँहगाई का अस्तित्व ही नहीं है। इससे बहुत-सी कठिनाइयाँ आप-ही-आप हल हो जायँगी। क्योंकि जब आप मँहगाई का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते तो फिर ब्लैक मार्केट की परेशानी भी बाकी नहीं रहती। बल्कि मैं तो समझता हूँ कि आजकल के जमाने में ब्लैक-मार्केट को कानूनी तौर पर जायज कर देना चाहिए। काले बाजार को कानूनी तौर पर जायज और सफेद बाजार को नाजायज (अवैध) करार देना चाहिए। और जो आदमी या दुकानदार चीजें सस्ती बेचे उसे कोड़ों से पीटना चाहिए या उसे पागलखाने में धकेल देना चाहिए। यदि आप ऐसा करेंगे तो थोड़े ही दिनों में आप देखेंगे कि देश में मँहगाई की कोई शिकायत बाकी नहीं रह गई है। जनता स्वयं ही सूखकर आलू की तरह पिचक जायगी और इसका जो अवश्यम्भावी परिणाम होगा उससे मकानों का सङ्कट भी हल हो जायगा। ज्यादा खुली हवा और ज्यादा खुली जगह सबके लिए मिल जायगी। और सच्चे बोंगा राज की ओर हमारा एक कदम और आगे बढ़ जायगा।

(५) अन्त में तीसरे दर्जे (वर्ग) का सवाल आता है। मुझे इससे अत्यधिक आत्मिक कष्ट होगा, लेकिन आपके कहने पर मैं

म्राज से रेल के तीसरे दरजे में यात्रा करना बन्द करता हूँ और शपथ लेता हूँ कि आज से कभी हवाई जहाज या फर्स्ट क्लास एयर कडीशण्ड से कम में यात्रा नहीं करूँगा। (इसी समय मेरी आँखें भर आई हैं, क्योंकि मेरी दृष्टि में स्वर्गीय हुजूर महाराजा का चेहरा घूम रहा है, जिन्होंने हमें बोगाराज दिलाया, लेकिन जिनके मैमोरियल फण्ड (स्मृति फण्ड) की रकम अभी तक पूरी नहीं हुई।

लेकिन बोगा भाई, मैं मूँग की दाल खाना कैसे बन्द कर सकता हूँ ? मैं बाग्रेस हाईकमाण्ड का हुक्म नहीं टाल सकता और निष्ठा में किसी से पीछे नहीं रहूँगा। लेकिन मैं समझता हूँ कि मैं क्या खाता हूँ, क्या पहनता हूँ इस पर बाग्रेस हाईकमाण्ड को हुक्म देने का कोई अधिकार नहीं। यह मेरा अपना निजी मामला है; चाहे मैं मूँग की दाल खाऊँ चाहे तूवरकी। यह तो व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर एक ऐसा कड़ा निरोध (पाबन्दी) है जिसे मैं किसी दशा में भी स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए मैं बराबर मूँग की दाल खाता रहूँगा। यही मेरा निर्णय है।

आपका,

बहुत-बहुत-बहुत विश्वासपात्र

बोगाचन्द

अर्जेण्ट टेलिग्राम

बोगाभाई से बोगाचन्द को,

"मूँग की दाल खाना फौरन बन्द कर दो, वरना अभी त्याग-पत्र दो।"

बोगाभाई

अर्जेण्ट टेलिग्राम

बोगाचन्द से बोगाभाई को,

"परमात्मा के लिए अपने निर्णय पर फिर से विचार कीजिए। मूँग की दाल बिलकुल निरापद है (स्टाप) मूँग की दाल का कोई राजनीतिक महत्त्व नहीं है (स्टाप) मूँग की दाल को

हुजूर महाराज भी बहुत पसन्द करते थे (स्टाप) देखिए स्वर्गीय हुजूर महाराज की पुस्तक 'मैं और मूंग की दाल' पृष्ठ ३५०।"

बोंगाचन्द

जवाबी तार

बोंगाभाई से बोंगाचन्द को,

"कांग्रेस हाईकमाण्ड का सर्वसम्मति से फैसला है कि तुम मूंग की दाल खाना बन्द कर दो वरना अलग हो जाओ।"

बोंगाभाई

जवाबी तार

बोंगाचन्द से बोंगाभाई को,

"मूंग की दाल बन्द कर दी है (स्टाप) पेचिश हो गई है (स्टाप) आशीर्वाद भेजिए।

बोंगाचन्द

बोंगास्थान टाइम्स दैनिक समाचार

(स्टाप प्रेस)

बोंगापुर—सूचना मिली है कि श्रीयुत बोंगाभाई और श्रीयुत बोंगाचन्द के बीच जो गलतफ़हमी पैदा हो गई थी अब वह दूर हो चुकी है, इसलिए उत्तरी-पूर्वी-दक्षिणी-पश्चिमी बोंगानाव प्रान्त के मंत्री-मण्डल में अभी कोई परिवर्तन नहीं किया जायगा।

हिन्दी का नया कायदा

बड़ी उम्र के बच्चों के लिए

अ—अमन

बच्चो, यह अमन का समय है। जिस तरह 'अ' इस प्राइमर का पहला अक्षर है, उसी तरह अमन (शान्ति) भी हमारी जिन्दगी का पहला अक्षर है—हमारे समाज का पहला ध्येय। अमन हमेशा दो लड़ाइयों के बीच के समय को कहते हैं। पहले लड़ाई होती है, फिर अमन; उसके बाद फिर लड़ाई होती है और अगर लड़ाई नहीं होती तो लड़ाई की तैयारी होती है। अभी थोड़े साल ही हुए लड़ाई खत्म हो चुकी है। अब दुश्मन हार गए तो अमन का जमाना आया। अमन हमेशा दुश्मन की हार के बाद होता है। याद रखो, अमन के बाद लड़ाई होती है, आजकल भी लड़ाई की तैयारी हो रही है। अमन के लिए कागज के एक पुर्जे की जरूरत होती है और लड़ाई के लिए आदमी के खून की।

अब हमारी दुनिया के बड़े-बड़े विज्ञान-वेत्ता, जिन्होंने गैस, टैंक, तोप, अणुबम और युद्ध के दूसरे अस्त्र-शस्त्र बनाये हैं, इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि लड़ाई की तैयारी का जमाना बहुत कम हो जाय और हम ज्यादा आसानी से एक युद्ध के बाद दूसरे युद्ध में शामिल हो सकें। युद्ध इसलिए किया जाता है कि दुनिया में अमन हो, क्योंकि अगर युद्ध के बाद अमन न हो तो युद्ध कौन करे, इसलिए दुनिया में अमन लड़ाई से भी ज्यादा आवश्यक है। यह भी याद रखना चाहिए

कि अगर युद्ध इसलिए किया जाता है कि दुनिया में अमन रहे तो अमन की मांग भी इसलिए की जाती है कि युद्ध की तैयारी अच्छी की जा सके। हर अगली लड़ाई पिछले अमन की शर्तों से पैदा होती है। अमन युद्ध को जन्म देता है, जिस तरह आवश्यकता आविष्कारों को। इसलिए कहो : अ—अमन !

आ—आत्मा

बच्चो, आत्मा या अन्तःकरण उस काँटे को कहते हैं जो मनुष्य के अन्दर मुसलसल उसे हमेशा तकलीफ देता रहता है। खेलते हुए तुम्हारे पाँव में कई बार काँटा चुभा होगा और तुमने महसूस किया होगा कि जब तुम चलते हो तो काँटा तुम्हें तकलीफ देता है और अगर न चलो, बल्कि पाँव को हवा में लटकाए रखो तो यह काँटा कोई तकलीफ नहीं देता। बस यही हाल आत्मा का है; अन्तःकरण भी मनुष्य को उसी समय परेशान करता है जब वह कोई काम करने लगे, हिले-डुले या कोई हरकत करे। हाँ, अगर मनुष्य हवा में लटका रहे तो वह परेशान नहीं होता; उसे किसी तरह का दुख नहीं सताता।

पिछले जमाने में मनुष्य का अन्तःकरण उसे बहुत परेशान करता था और हजार बार निकालने पर भी यह काँटा नहीं निकलता था, लेकिन वर्तमान काल में साइन्स ने इतनी प्रगति की है कि अब अन्तःकरण का ऑपरेशन हो सकता है। इसलिए अब अपेण्डिसाइटिस की फालतू आँत की तरह अन्तःकरण का काँटा भी ऑपरेशन के द्वारा मनुष्य के अन्दर से निकाल दिया जाता है। आजकल तुम्हें सौ में से निन्यानवे आदमी ऐसे मिलेंगे जिनमें आत्मा का वास नहीं है। मैंने भी काफी वक्त हुआ यह ऑपरेशन करवा लिया था; अब मुझे किसी तरह की परेशानी नहीं है। बच्चो, तुम बड़े होगे तो तुम्हारी आत्मा पर भी यह ऑपरेशन किया जायगा; छोटी उम्र के बच्चों पर यह ऑपरेशन नहीं हो सकता। इसलिए कहो : आ—आत्मा !

इ—इन्सान

बच्चो, हम सब इन्सान हैं। इन्सानों की दो किस्में होती हैं—छोटे इन्सान और बड़े इन्सान। छोटे वे होते हैं जो चरखी चलाते हैं, खेतीबाड़ी करते हैं, सूत कातते हैं, कारखानों में काम करते हैं लड़ाइयाँ लड़ते हैं, रेलगाड़ियाँ चलाते हैं और जमीन के अन्दर घुसकर कोयला, नमक, सोना, चाँदी, लोहा निकालते हैं। ये सब छोटे इन्सान कहलाते हैं। दूसरी किस्म बड़े इन्सानों की है। बड़े इन्सान वे होते हैं जो छोटे इन्सानों को इन्सान न समझें।

इन्सान की एक तारीफ यह है कि वह चराचर सृष्टि का स्वामी है। सारे जानवरों में से अच्छा जानवर इन्सान है और सारे इन्सानों में से अच्छे इन्सान इंगलैंडवासी हैं। इंगलैंड भी 'इ' से बनता है, इसलिए वहाँ के रहने वाले भी इन्सान हैं, यद्यपि कुछ लोग उन्हें ईश्वर समझते हैं।

बच्चो, अंग्रेज तुमने अक्सर देखा होगा। अंग्रेज की चमड़ी सफेद होती है। तुम्हारा रंग काला है, भूरा है, गेहुँआ है, लेकिन सफेद नहीं। सफेद रंग अमरीकन का भी होता है। अंग्रेज और अमरीकन भाई-भाई हैं और दुनिया के रंगदार चमड़ी वालों को छोटे इन्सान समझने का उनको स्वाभाविक अधिकार है।

'इ' से इस्पात (मेल-स्टील) भी बनता है लेकिन चूंकि

सब काट डाले थे। गुलाब की झाड़ियाँ, अंगूर की बेलें, फूलों की कतारें, सब उखाड़ दीं। हालत यह हो गई कि शाम को जब पिताजी दफ्तर से लौटे तो घर भी न पहचान सके। मैंने उन्हें हैरान और परेशान देखकर सान्त्वना के स्वर में कहा—'आइए, आइए! परेशान क्यों होते हैं? आप ही का घर है।' इस पर भी मेरे पिताजी मुँह से कुछ न बोले; मुड़-मुड़कर बगीचे की ओर देखते रहे। मैंने कहा—'आप इस तरह घूर-घूरकर क्या देख रहे हैं? पिताजी, सच बात तो यह है कि यह सब-कुछ मैंने किया है। वह जार्ज वाशिंगटन वाली घटना···' लेकिन इसके बाद पिताजी ने मुझे बोलने नहीं दिया और एक कटे हुए पेड़ का तना उठाकर मेरी जो मरम्मत की तो···ख़ैर, *मैं जार्ज वाशिंगटन न बना, स्कूल-मास्टर तो बन ही गया।* यह दूसरी बात है कि उस दिन से मेरी दाहिनी टाँग लँगड़ी हो गई और बाईं बाजू की एक हड्डी टूट गई।

तो बच्चो, कहने का मतलब यह है कि चाहे टाँग लँगड़ी हो जाय, चाहे बाजू टूट जाय, चाहे जान चली जाय, लेकिन ईमानदारी और सचाई को हमेशा प्यार करो। हमेशा सच बोलो, बल्कि पहले बात को तोलो, फिर मुँह खोलो, फिर सच बोलो और कहो : ई—ईमानदारी!

अं—अंत

बच्चो, तुम अन्त यानी मौत से डरते हो क्या? लेकिन अन्त से किसी को न डरना चाहिए, सिर्फ जीवन से डरना चाहिए। जिन्दगी बड़ी भयानक और खूँखार होती है; मौत आराम और शांति देने वाली होती है। बच्चो, अभी तो तुम जिन्दगी की पहली मंजिल पर हो और तुम्हें स्कूल से, स्कूल-मास्टर से, कायदे (बाल-बोध प्राइमर) से, मानीटर से, श्याम पट्ट से, हर चीज से डर लगता है। लेकिन अभी तो यह जिन्दगी की पहली मं[illegible] है। ज्यों-ज्यों जिन्दगी [illegible] जायगी, तुम्हारे डर

होती जायगी। अब तुम खुलकर हँसते हो, फिर डरकर हँसोगे; अब तुम्हें भगवान् का भी डर नहीं है, फिर तुम हर चीज से, छोटी-सी-छोटी चीज से भी डरोगे; मन्दिर और मस्जिद से डरोगे। यह डर बढ़ता चला जायगा। यहाँ तक कि तुम बचपन से लड़कपन, लड़कपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापे में प्रवेश करके मौत की गोद में सो जाओगे। लेकिन जब तक जिन्दा रहोगे डरते रहोगे, क्योंकि हमारे बड़े आदमियों ने हमारे समाज की नींव, इस दुनिया की नींव, जिसमें हम रहते हैं डर पर रखी है, मुहब्बत पर नहीं, स्नेह पर नहीं, मेहनत पर नहीं, भ्रातृत्व और अपनत्व पर नहीं—सिर्फ डर पर। यहाँ मौत नहीं, जिन्दगी भयानक है।

बच्चो, जर्मनी के प्रसिद्ध कवि रिलके ने एक बार भगवान् से प्रार्थना की—'मैं तुझसे अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं माँगता; मैं तुझसे सिर्फ मौत माँगता हूँ, अपनी इच्छा के अनुसार मौत !'

आओ बच्चो, हम भी यही प्रार्थना करें, क्योंकि मर जाने के बाद यह कोई नहीं पूछता कि मृतक किस तरह जिया, बल्कि यह कि उसका अन्त किस तरह हुआ। इसलिए कहो : अं—अंत !

क— कुत्ता

बच्चो, कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है। यह घर में दिन-भर जंजीर से बँधा रहता है और मेहमानों को देख-देखकर गुर्राता है। जब घर में मेहमान न हों तो जंजीर से बँधे-बँधे सो जाता है। उसके बाद सपने में मेहमानों को देख-देखकर गुर्राता है, भौंकता है, क्योंकि कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है और इन्सान का बहुत अच्छा मित्र है। घर का कुत्ता दिन को सोता है और रात को जागता है और बगीचे की चहारदीवारी के चारों ओर घूमता है। वह बिजली के खम्भों, पुलिस के सिपाहियों और चौकीदारों को देख-देखकर भौंकता रहता है; क्योंकि बिना आज्ञा के अन्दर जाना मना है। कुत्ते को अपनी आवाज बहुत प्यारी मालूम होती है; वह उसे स्वयं भी

सुनता है, और दूसरों को भी बार-बार सुनाता है। इसलिए रात-भर घर के भी लोग अपने कुत्ते की स्वामिभक्ति और मीठी आवाज से आनन्दित होते रहते हैं। कुत्ता मनुष्य का बहुत अच्छा दोस्त और वफादार जानवर है।

घर का कुत्ता तो दिन को सोता है, परन्तु गली का कुत्ता न दिन को सोता है, न रात को। वह हर वक्त जागता रहता और चिल्ला-चिल्लाकर मनुष्यों को अन्धकार के भयावने संकट से सचेत करता रहता है। इसकी स्वामि-भक्ति इस खतरनाक हद तक बढ़ी होती है कि वह गली में से निकलने वाले हर व्यक्ति को अपरिचित समझता है। यह भी कुत्ते की वफादारी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब कुत्ता प्यार से काटे तो उसकी अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए, अस्पताल में जाकर अपने पेट में चुपके-से चौदह इंजेक्शन लगवा लेने चाहिएँ, क्योंकि कुत्ते की खुशी इसी में है और कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है। तुमने उस वफादार कुत्ते की कहानी तो अवश्य सुनी होगी, जिसने अपने शिकारी मालिक की अनुपस्थिति में उसके बेटे को भेड़िये के आक्रमण से बचा लिया था। इस प्रकार के कुत्ते सिर्फ कहानियों में पाये जाते हैं। आम घरों में जो कुत्ते होते हैं वे बच्चों को भेड़ियों से नहीं बचाते, मौका मिले तो उन्हें खुद काट खाते हैं। और ये बच्चों ही तक सीमित नहीं रहते, बड़े-बूढ़ों पर भी दाँत रखते हैं।

कहावत प्रसिद्ध है कि प्रेम और इत्र छिपाये नहीं छिपते। कुत्ते के प्रेम का भी यही हाल है। वह दिन-रात बाजारों में और कूचों में बदनाम होता फिरता है। कुत्ते को देखकर आजकल मनुष्यों ने भी अपने प्रेम का इसी तरह प्रदर्शन करना शुरू किया है। कुत्ते के बारे में कई कहावतें प्रचलित हैं, जैसे 'कुत्ता कुत्ते का वैरी होता है'; 'कुत्ता बिल्ली का दुश्मन है'; 'कुत्ते को घी हजम नहीं होता', 'धोबी का कुत्ता घर का न घाट का'। इन तमाम कहावतों से कुत्ते की स्वामि-भक्ति पर बड़ा प्रकाश पड़ता है।

कुत्ता किसी जमाने में भेड़िया था; अब सिर्फ कुत्ता है और मनुष्य का स्वामिभक्त सेवक है। अब उसने जंगल छोड़ दिया है और मनुष्य की सेवा को अपना व्रत बना लिया है। इसके पारितोषिक में मनुष्य ने उसके गले में जंजीर बाँधी है और उसे अपने जाति-भाई कुत्तों से घृणा करना सिखलाया है। यही स्वामि-भक्ति और गुलामी का पहला और आखिरी पाठ है।

कुत्ते कुत्ते होते हैं और कुत्ते इंसान भी होते हैं। और इंसान कुत्ते भी अपने मालिक की दी हुई जंजीर से बँधे हर वक्त 'अफ्-अफ्' करते रहते हैं, और अपने मालिक का इशारा पाकर दुम हिलाने लगते हैं। इन कुत्तों को माँस के बड़े-बड़े टुकड़े दिये जाते हैं, और दूध-भरे प्याले इनके सामने रखे रहते हैं, चाहे दुनिया के दूसरे कुत्ते भूखे ही क्यों न मर जायँ। यह इसलिए होता है; क्योंकि इन कुत्तों के गले में मालिक का पट्टा होता है और एक लम्बी सुनहरी जंजीर होती है, और ये कुत्ते अपने मालिक के बड़े वफादार होते हैं।

बच्चो, जब तुम बड़े होगे तो कुत्ते की वफादारी को कभी न भूलना। फिर एक दिन तुम्हें भी एक लम्बी-सी जंजीर मिल जायगी और गोश्त के बड़े-बड़े टुकड़े और दूध-भरे प्याले। उस समय जंगल में भेड़िये भूखे होंगे—बेवकूफ !

आओ बच्चो, हम कुत्ते की वफादारी और विनम्रता के गुण गाएँ और कहें : क—कुत्ता !

ख—खरबूजा

बच्चो, तुमने अक्सर खरबूजा खाया होगा। खरबूजा हिन्दुस्तान का मशहूर फल है। हिन्दुस्तान का एक और भी मशहूर फल है; उसे फूट यानी हिन्दू-मुसलमानों की लड़ाई कहते हैं। हिन्दुस्तान के फल और मेवे बहुत मशहूर हैं और वे दूर-दूर तक दिसावर को जाते हैं, लेकिन फूट का मेवा बाहर नहीं जाता। अंग्रेज उसे बिलकुल नहीं खाते। अंग्रेज खरबूजा भी नहीं खाते, क्योंकि इससे हैजा फैलने का

डर होता है। हिन्दुस्तान की हर चीज़ में हैजा फैल सकता है—खरबूजे से, तरकारी से, दूध से, पानी से, हवा से, मिट्टी से। इस देश के जर्रे-जर्रे में हैजा छिपा हुआ है। इसलिए खरबूजा कभी नहीं खाना चाहिए। खरबूजा बाहर से बड़ा खूबसूरत और खुशबूदार होता है, लेकिन अन्दर से बिल्कुल फीका और बीजों से भरा हुआ होता है। कुछ आदमी भी खरबूजे की तरह होते हैं। लेकिन हम उन्हें खरबूजा नहीं कहते—बड़े आदमी कहते हैं। दुनिया के हर देश में बड़े आदमी होते हैं, लेकिन जितने खरबूजे हिन्दुस्तान में होते हैं और कहीं नहीं होते। खरबूजे में एक और विशेषता भी है। और वह यह कि जब छुरी खरबूजे पर गिरती है तो खरबूजा कटता है और खरबूजा छुरी पर गिरता है तब भी खरबूजा ही कटता है। लेकिन यह विशेषता बड़े आदमियों में नहीं पाई जाती; वे स्वयं कभी नहीं कटते, हमेशा दूसरों को कटवाते हैं, इसलिए कहो : ख—खरबूजा!

ग—गाली

बच्चो, तुम्हें गाली देना पसन्द है न ? क, ख, ग सीखने से बहुत पहले तुम गाली देना सीख जाते हो। मैंने तुम्हें खेल के मैदान में अक्सर गाली देते सुना है। तुम गाली बककर बहुत खुश होते हो—विशेषकर माँ-बहन की गाली।

लेकिन बच्चो, अगर तुम जरा सोचो तो तुम्हें मालूम होगा कि माँ-बहन की गाली वास्तव में कोई गाली नहीं है। इस गाली से तुम्हारी वह दिलचस्पी जाहिर होती है जो तुम्हें अपने से भिन्न सेक्स के प्रति है। क, ख, ग सीखने से पहले ही तुम यह बात जान लेते हो कि लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे से अलग प्रकार के होते हैं। यही कारण है कि लड़के लड़कियों को और लड़कियाँ लड़कों को पसन्द करती हैं और जब ये लड़कियाँ और लड़के जवान होते हैं तो एक-दूसरे से शादी-ब्याह करते हैं और वही काम करते हैं जिसकी तुम गाली देते हो। भला, इस गाली में क्या बुरी बात है ? अगर यह गाली है

तो फिर तुम खुद एक गाली हो; तुम्हारा जन्म गाली है; तुम्हारा अस्तित्व गाली है, क्योंकि इसी गाली की वजह से तुम अपनी माँ के पेट से जने गए हो; तुम आसमान से नहीं गिरे हो, न तुम परियों के देश से आये हो, न तुम सारस की चोंच से प्रकट हुए हो। ये कहानियाँ तुमसे तुम्हारी वास्तविकता छिपाने के लिए कही जाती हैं। असल में तुम अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हो, जिस तरह खूबसूरत बिल्ले और बिल्ली के सुन्दर बलूगड़े अपनी माँ के पेट से पैदा होते हैं। तुम दुःख, दर्द, मुसीबत और ममता की सन्तान हो, इसीलिए इस कदर भोले और सुन्दर हो। लेकिन मैंने आज तक किसी खूबसूरत बिल्ले और म्याऊँ-म्याऊँ करते हुए बिल्ली के बच्चे को माँ-बहन की गाली देते नहीं सुना। फिर तुम इन्सान के बच्चे होकर क्यों अपने-आपको गाली देने में अभिमान महसूस करते हो ?

बच्चो, माँ-बहन की गाली कोई गाली नहीं है। जब कभी तुम्हें कोई ऐसी गाली दे तो चुप हो जाओ, मुस्कराकर गाली देने वाले को समझा दो कि यह गाली नहीं है; यह तो अपना मुँह चिढ़ाना है, अपने-आप पर थूकना है।

गाली वह होती है जब एक इन्सान दूसरे इन्सान को भूखा रखता है; गाली वह होती है जब कोई तुम्हें शरीफ गुलाम और घुटनाटेकू बनाता है; गाली वह होती है जब कोई तुम्हें मोहब्बत से, स्नेह से, सौन्दर्य से, स्वतन्त्रता से वंचित कर देता है। ऐसी हालत एक स्थायी गाली होती है। उसे गाली दो जो तुम्हें अपने बराबर का न समझे, जो तुम्हें गुलाम बनाना चाहे, जो तुम्हारे गले में पट्टा और जंजीर डालना चाहे, जो तुम्हारी वफादारी पर पीठ ठोकना चाहे, तुम्हें अनाथालय में रखकर दान लेना चाहे, तुम्हारे सौन्दर्य को बाजार में बेचना चाहे, तुम्हारी आजादी के टुकड़े-टुकड़े करना चाहे।

उस वक्त गाली दो, जरूर गाली दो। मैं गाली को बुरा नहीं समझता; लेकिन सच्ची गाली दो। झूठी गाली देने से हमेशा बचो और कहो : ग—गाली !

घ—घर

घर छोटा हो या बड़ा, अपना घर बड़ा खूबसूरत होता है। क्योंकि घर में माँ होती है और बाप होता है और भाई-बहन होते हैं और उन सबका प्यार होता है, जो दुनिया मे घर से बाहर किसी मूल्य पर नही मिल सकता। इसलिए सब बच्चे घर को बहुत पसन्द करते हैं।

परन्तु कुछ बच्चों के पास घर नहीं हैं, क्योंकि उनके माँ-बाप के पास भी घर नहीं हैं। ये बच्चे पेडोके तले सोते हैं, फुटपाथोंपर लेटते हैं या किसी टूटी पुलिया के नीचे पड़ रहते हैं। दूसरी ओर ऐसे बच्चे भी होते हैं जो होते तो अकेले हैं, परन्तु उनके लिए घर मे दस कमरे होते हैं जिनमे पचास बच्चे आसानी से रह सकते हैं।

फिर कभी ऐसा भी होता है कि किसी बच्चे के पास एक घर भी नही होता और किसी बच्चे के पास बहुत से घर होते हैं, जिनमें उस बच्चे के माँ-बाप कभी-कभी रहते हैं—एक घर सरदियों मे रहने के लिए, एक घर गरमियों में रहने के लिए, एक घर वसन्त ऋतु के लिए, एक घर पतझड के दिनो के लिए, एक घर शादी-ब्याह के लिए, एक घर भोग-विलास के लिए। एक घर मे सामान बन्द रहता है, एक घर में उल्लू बोलते हैं, यद्यपि यहाँ बच्चों को चहकना चाहिए और जो बच्चे टूटी पुलिया के नीचे या फुटपाथ पर रहते हैं उनको यह फालतू घर मिल जाने चाहिए, क्योंकि दुनिया के हर बच्चे को घर के प्यार की जरूरत है।

कभी-कभी अच्छे-भले बसे-बसाए घर नष्ट हो जाते हैं। बच्चा देखता है कि बाप सुबह से शाम तक घर ही पर रहता है, क्योंकि उसके पास काम नहीं है। फिर एक दिन बच्चा देखता है कि अब उसके बाप के पास स्कूल की फीस नहीं है और अब बच्चा स्कूल नहीं जा सकता। फिर एक दिन घर में खाना नहीं पकता। फिर एक दिन

उनके घर मे रहेंगे; वह गली की नाली में बहाए नही जायेंगे।

परन्तु घर सदा सिपाहियों के आने से ही नष्ट नही होते। कभी कभी एक नहीं लाखों घर एक क्षण मे देखते-देखते नष्ट हो जाते हैं। बच्चो, तुमने बहुधा घरों को जलते देखा होगा। कभी-कभी घर को अपने चिराग ही से आग लग जाती है, जैसा आजकल हमारे देश में हो रहा है। परन्तु कभी-कभी यह आग आकाश से बरसती है, जैसा पिछले महायुद्ध मे नागासाकी और हिरोशिमा में हुआ था—जब आकाश से एक एटम-बम गिरा और उसने गिरते ही लाखो घरों को जलाकर राख कर दिया।

इसलिए बच्चो, अपने घरों की रक्षा करो और उस आग का विरोध करो जो लाखों घरो को इस प्रकार एक मिनट मे भस्म कर देती है, जिससे हमारा घर, तुम्हारा घर, दुनिया के लाखों बच्चों के लाखों घर एटम-बम के भय से सुरक्षित रहे। घरों पर बम बरसाने वाले अच्छी तरह से सुन ले, इसलिए जोर से बोलो घ—घर!

च—चोर

बच्चो, चोर वह होता है जो तुम्हारी चीज चुराकर ले जाय, जिस तरह चूहे ताक पर से तुम्हारी मिठाई चुराकर ले जाते हैं। लेकिन चोर सिर्फ चूहे ही नही होते हैं। इन्सान भी चोर होते हैं चूहे या इंसान इस लिए चोरी करते हैं कि उनके पास वह चीज नही होती जिसकी वे चोरी करते हैं और जो दूसरों के पास होती है। उदाहरणार्थ, यदि चूहों के पास मिठाई होती तो क्या वे तुम्हारी मिठाई चुराते ? हरगिज नही। यही हाल इसानों का है। ये भी एक तरह के चोर हैं और वही चीज चुराते हैं जो उनके पास नही होती। वे चोरी करते है जब वे भूखे होते हैं, या नगे होते हैं, गरीब होते हैं। चोरो से हमेशा बचना चाहिए। चूहों से भी बचना चाहिए, क्योंकि उनसे प्लेग फैलता है। चूहों को बिल्ली खाती है और चोरों को हुकूमत। लेकिन कभी-कभी हुकूमत चोरो की मदद करती है या स्वयं चोर बन जाती है और

लोगों की चीजें चुरा लेती है। जब तुम देखते हो कि राम फटे कपड़े पहने स्कूल में आता है और मोहन रेशम की पोशाक पहनता है, जब देखो कि गुरदयाल शहद और मक्खन से नाश्ता करता है और चुन्नु के पास लोबिया खाने के लिए भी एक पैसा नहीं होता, जब देखो कि हर्ष की आँखें कमल की तरह खिली हैं, बालों में खुशबूदार तेल लगा हुआ है और मुन्नू की आँखें लाल लाल हैं, ओठों पर दैन्य और निराशा की पपड़ियाँ जमी हैं और आंसुओं की बूंदें उसकी बड़ी-बड़ी, सहमी-सहमी, हैरान-हैरान पुतलियों पर झलक रही हैं, तो समझ लेना चाहिए कि हुकूमत स्वयं चोर है, या चोरों से मिली हुई है। ऐसी हालत में देश की तमाम दौलत सबमें बराबर बाँट देनी चाहिए ताकि कोई कुछ चुरा ही न सके। न हुकूमत रहे, न चोर। क्योंकि जहाँ चूहे रहते हैं, वहाँ बिल्ली भी रहती है और जहाँ चोर हैं वहाँ हुकूमत भी होती है; इसलिए कहो : च—चोर !

छ—छड़ी

गुरुजी की छड़ी से सब बच्चे परिचित हैं; उसका मजा सबने चखा है। मैंने भी चखा है। जब मैं पाठ भूल जाता था तो गुरुजी की छड़ी चलती थी और कभी-कभी फ्रण्टियर मेल से भी तेज चलती थी। इसी छड़ी ने हमें बहुत से विचित्र पाठ सिखाए, याद कराए और रटाए। उदाहरण के लिए, इस छड़ी ने हमें याद कराया कि अंग्रेजी साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता; परन्तु आज वह सूर्य अस्त हो चुका है।

इसी छड़ी ने मार-मारकर सिखाया कि यदि एक बनिया एक किसान को फसल के समय दस रुपये व्याज पर देता है तो दस साल में उसकी कितनी जमीन कुर्क हो सकती है। आज इस छड़ी की मार के बावजूद वह किसान व्याज देने से और जमीन कुर्क कराने से इन्कार कर रहा है और बनिए का सारा हिसाब बिगड़ा जा रहा है। पुराना हिसाब जा रहा है, नया हिसाब आ रहा है जिसमें बनिए के व्याज

पर ब्याज का कोई स्थान नहीं।

छड़ी के हिसाब से यदि एक आदमी कुमारी अन्तरीप से बनारस जाय तो तीन साल में पहुँचेगा (यदि रास्ते में मर न गया तो)। नये हिसाब से वह तीन दिन में पहुँचता है, बल्कि एक दिन में भी पहुँच सकता है और जब तक यह नया व्याकरण आप तक पहुँचता है यह समय और भी घट जायगा।

छड़ी के भूगोल में गेहूँ साइबेरिया में उत्पन्न नहीं हो सकता था, परन्तु आज का नया व्याकरण साइबेरिया के बरफीले मैदानों में न केवल गेहूँ बल्कि गोभी, शलजम, मटर सब-कुछ उत्पन्न कर रहा है।

छड़ी के इतिहास में वह राष्ट्र सबसे शक्तिशाली समझा जाता था जिसके पास सबसे लम्बी तोप होती थी। नये व्याकरण के इतिहास में वह राष्ट्र सबसे शक्तिशाली होता है जिसके पास सबसे ज्यादा फाख्ताएँ होती हैं।

बच्चो, तुमने वह कहानी तो सुनी होगी जिसमे एक शिकारी ने जाल फेंककर बहुत से कबूतर पकड़े थे। फिर बाद में उन सारे कबूतरों ने एका किया और अपने परों का जोर इकट्ठा लगाकर जाल समेत हवा में उड़ गए और शिकारी की पहुँच से बाहर चले गये।

बच्चो हमारा नया व्याकरण शिकारियों के लिए नहीं है, भोले-भाले कबूतरों के एके के लिए है। आज शिकारी बेचारा मुँह ताक रहा है और कबूतर आकाश पर जाल समेत उड़े चले जा रहे हैं।

नये व्याकरण के गुरुजी भी नये हैं। वह बच्चों को छड़ी से नहीं मारते, उन्हें फूल भेंट करते हैं, इसलिए कि वह जानते हैं कि छड़ी का पाठ भुलाया जा सकता है, परन्तु फूलों का पाठ कोई बच्चा नहीं भूल सकता। इसलिए उस आने वाले नये जीवन का इन्तजार करो और कहो : छ—छड़ी !

ज—जमीन

बच्चो, तुम इस समय जमीन पर बैठे हो। अगर तुम इस समय

हवाई जहाज में होते तो मैं कहता कि तुम हवा में उड़ रहे हो। खैर, बच्चो, याद रखो जमीन बड़े काम की चीज है। जमीन से अनाज पैदा होता है, ताकि काश्तकार लगान अदा कर सकें। जमीन से सोना निकलता है, ताकि धनवान हुकूमत कर सकें। जमीन से लोहा निकलता है, ताकि जंग के लिए तोपें और बन्दूकें बन सकें। जमीन से मिट्टी निकलती है ताकि हमारी तुम्हारी कब्रें बन सकें। और सबसे बढ़कर जमीन का फायदा यह है कि जमीन गोल है; ऊपर नीचे दाएँ-बाएँ हर तरफ से गोल है। जिधर से देखो और अगर न भी देखो तो भी गोल है।

कुछ लोगों का खयाल है कि दुनिया में झगड़े की जड़ 'ड़' नहीं 'ज' है, और जड़ में 'ज' भी है और 'ड़' भी। चुनांचे वे कहते हैं कि जर जन् (जोरू), जमीन इन तीनों में 'ज' है और तीनों की वजह से ही दुनिया में लड़ाई होती है और झगड़ा फैलता है। मैं उन लोगों से इसलिए सहमत नहीं कि जर, जन्, जमीन इन तीनों में से कोई चीज अपने-आप में बुरी नहीं। बुरी तो वह गड़बड़ है जो एक अरसे से मनुष्य के दिमाग में पैदा हो चुकी है—'नफा।' अगर यह गड़बड़ दूर हो जाय तो दुनिया में चारों ओर सुन्दरता-ही-सुन्दरता दिखाई दे और यह खूबसूरत जमीन खुशी से नाचते-नाचते और भी गोल हो जाय, बल्कि गोल-मटोल हो जाय; इसलिए कहो : 'ज'—जमीन !

झ—झगड़ा

बच्चो, झगड़ा (लड़ाई) वह है जो अभी कुछ साल हुए खत्म हुआ है और जिसकी अब फिर तैयारी हो रही है। जब लड़ाई-झगड़ा नहीं होता तो उसे शान्ति का जमाना कहते हैं। शान्ति के सपने देखते हैं; इस व्यवहार को राजनीति कहा जाता है। पहले झगड़ा इक्के-दुक्के आदमियों के बीच होता था, फिर कबीलों के बीच बढ़ने, फिर बादशाहों के बीच होने लगा और अब देशों और जातियों हुआ करता है। लेकिन परिणाम हर हालत में वही होता है,

यानी लोग मरते हैं, औरतें विधवा और बच्चे अनाथ होते हैं, खून की नदियाँ बहती हैं और अन्त में न्याय की जीत होती है। जब से दुनिया में झगड़ा और युद्ध शुरू हुआ है, हमेशा न्याय और सत्य की विजय होती चली आई है। पहले महायुद्ध में भी न्याय की जीत हुई थी। दूसरे महायुद्ध में भी न्याय की जीत हुई। इससे, अगले युद्ध में भी न्याय ही विजयी होगा। उससे अगले युद्ध में भी न्याय ही जीतेगा अन्ततोगत्वा एक दिन इस दुनिया में एक भी आदमी शेष न रहेगा, सिर्फ न्याय-ही-न्याय रह जायगा। और यही लड़ाई-झगड़े की सबसे बड़ी खूबी है, इसलिए कहो झ—झगड़ा !

ट—टामी

बच्चो टामी आम तौर पर अंग्रेज सिपाही को कहते हैं। यह सिपाही विलायत से आया और एक शताब्दी हिन्दुस्तान में रहकर फिर विलायत लौट गया। सिपाही तो हिन्दुस्तानी भी होते हैं, लेकिन वह टामी नहीं होते। टामी और हिन्दुस्तानी सिपाही में यही अन्तर था कि हिन्दुस्तानी सिपाही काले रंग के थे और टामी सफेद रंग के; टामी को लगभग पचहत्तर रुपये तनखाह मिलती थी और हिन्दुस्तानी को लगभग तीस रुपये। टामी के जीवन की आवश्यकताएँ हमेशा बहुत ज्यादा रहीं और हिन्दुस्तानी की बहुत कम। हिन्दुस्तानी सिपाही ने भी अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाने की कोशिश की, लेकिन इससे उसकी तनख्वाह न बढ़ी। तब उसने डाट-डपट टामी से कहा—तू यह मुल्क छोड़, जिससे मेरी तनख्वाह भी बढ़ जाय, मैंने बहुत देर सब्र किया है। तुम भी हिन्दुस्तानी सिपाही की तरह सब्र करना सीखो और कहो : ट—टामी !

ठ—ठिठोली

बच्चो, ठिठोली उसे कहते हैं जो दूसरों को हँसाए। आदमी साधारणतया दूसरों की तकलीफ पर हँसता है, इसलिए सबसे अच्छा ठिठोली वह है जो दूसरों को तकलीफ दे। बच्चो, याद रखो कि

तमाम जानवरों में मनुष्य ही एक ऐसा जानवर है जो हँसता है, और किसी भी जानवर को हँसना नहीं आता, क्योंकि वे दूसरों को तकलीफ में देखकर खुश नहीं हो सकते। इसीलिए मनुष्य को चराचर सृष्टि में सर्वश्रेष्ट कहते हैं।

बच्चो, तुमने देखा होगा कि जब कोई केले के छिलके पर से फिसलता है तो कितनी हँसी आती है। जब कोई बाजार में टकराकर गिर पड़ता है तो हमें कितनी हँसी आती है उस दिन जब स्कूल के बाहर लोबिया बेचने वाले की टोकरी गन्दी मोरी में गिर पड़ी थी तो तुम सब बच्चे किस तरह कहकहा मारकर हँसे थे। इन बातों ही से यह पता चलता है कि तुम सब इन्सान के बच्चे हो, जानवर नहीं हो।

हँसना इन्सान के लिए बहुत जरूरी है, इसलिए भूतकाल में रोमन लोग आदमियों को शेरों से फड़वाकर बहुत खुश होते थे और हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाते थे। आजकल लोग आदमियों को शेरों से फड़वाकर नहीं हँसते, बल्कि उन्हें तोपों के मुंह पर उड़वाकर हँसते हैं, उनके पाँव में गुलामी की बेड़ियाँ डालकर कहकहे लगाते हैं और इसे मानवी सभ्यता की चरम सीमा कहते हैं। बच्चों, अगर तुम भी सभ्य और सुसंस्कृत बनना चाहते हो तो दूसरों को तकलीफ में डालकर खूब हँसो, कहकहे लगाओ, दूसरों को हँसाओ और ठिठोली बन जाओ। और कहो : ट—ठिठोली !

ड—डाकू

बच्चो, डाकू चोर का बड़ा भाई होता है और बड़ा खतरनाक होता है। तुमने अक्सर देखा होगा कि तुम्हारा बड़ा भाई किस तरह तुमसे जबरदस्ती खिलौना छीनकर चला जाता है और तुम रोते रह जाते हो। उस समय तुम रोने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि तुम्हारा बड़ा भाई तुमसे ज्यादा ताकतवर है। वह बड़ा है और तुम छोटे हो। यही हाल डाकू का है। वह भी अपने से छोटे और कम-

जोर आदमी पर हाथ डालता है और उससे सब-कुछ छीन लेता है।

जब एक इन्सान ऐसा करता है तो हम उसे डाकू कहते हैं, जब दो इन्सान ऐसा करते हैं तो हम उसे कबीला कहते हैं, जब तीन इन्सान ऐसा करते हैं तो हम उसे जागीरदारी कहते हैं, और जब चार इन्सान ऐसा करते हैं तो वह साम्राज्य कहलाता है। नाम भिन्न हैं, लेकिन सिद्धान्त वही है। और फिर इसमें मजा यह है कि जब एक इन्सान डाका डालता है तो हम उसे फांसी की सजा देते हैं, लेकिन जब चार आदमी मिलकर यह काम करते हैं तो उन्हें खिताब दिये जाते हैं, जाति उन्हें अपना 'हीरो' समझती है और पूजती है, सैकड़ों बरसों तक उनका नाम रहता है, उनके बेटों को जागीरें दी जाती हैं और वे लोग बादशाह तथा राजाधिराज बना दिए जाते हैं; और उनका पद परमात्मा के बाद समझा जाता है। राम-राम ! जमाने को कैसी हवा लग गई है ! बच्चो, इन डाकुओं से हमेशा बचो और दुनिया की शक्ति को मनुष्य में बराबर बांट दो, ताकि कोई जबर-दस्त न रहे, कोई कमजोर न रहे। जब तक ऐसा नहीं होता, नई प्राइमर पढ़ते जाओ और कहो : ड—डाकू !

ढ—ढेर

बच्चो, बहुत सी चीजें एक जगह जमा हो जायें तो उसे ढेर कहते हैं। जंगल भी एक प्रकार का ढेर होता है—दरख्तों का। स्कूल भी एक प्रकार का ढेर होता है—बच्चों का। पुराने जमाने में शासन की ओर से हर गांव में अनाज का ढेर रखा जाता था, ताकि अकाल के दिनों में लोगों को किसी प्रकार का कष्ट न हो। मुगल बादशाहों के जमाने में भी अनाज के बड़े-बड़े ढेर रखे जाते थे, जिसमें हर साल नया अनाज भरा जाता था, आजकल भी हुकूमत ढेर स्थापित करती है, लेकिन उनमें अनाज नहीं भरा जाता, उनमें रुपये और नोट भरे रहते हैं। उन ढेरों को लोग बैंक के नाम से पुकारते हैं। दुर्भिक्ष के दिनों में भी ढेर अनाज के बदले रुपये और नोट बांटते हैं। रुपया

चांदी का होता है, नोट कागज का होता है और ये दोनों चीजें खाने के हक में अच्छी नहीं। अभी कुछ वर्ष हुए बंगाल में अकाल पड़ा था और लाखों लाशों के ढेर लग गए थे। इसकी वजह यह थी कि महाजनों और दूसरे अमीर आदमियों ने अनाज छिपा लिया था। अगर उस वक्त हुकूमत के अपने अनाज के ढेर होते तो वह फौरन अनाज निकाल-निकालकर लोगों में बांट देती। लेकिन ऐसा न हो सका। शायद अब लोगों को अक्ल आ जाय और गाँव-गाँव में अनाज के ढेर कायम हो जायँ।

इंगलिस्तान एक द्वीप है, लेकिन हिन्दुस्तान एक ढेर है—बुलबुलों का।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा॥

हिन्दुस्तान में पचास करोड़ बुलबुलें रहती हैं। ऐसी क्षुद्र, रोती, बिसूरती, फाके करती बुलबुलें दुनिया के किसी और हिस्से में मौजूद नहीं। सिर्फ हिन्दुस्तान ही इन बुलबुलों का ढेर है—इसके साथ-साथ गुलामी, अज्ञान, पतन, विवशता, निर्जीवता का; इसलिए कहो: ढ—ढेर!

त—तोता

बच्चो, तोता उस आदमी को कहते हैं जो अपने मालिक का सधाया हुआ होता है, और वही कहता है जो उसका मालिक उससे कहलवाना चाहता है। तुमने अक्सर ऐसे तोते देखे होंगे। ये हर जगह, हर देश और हर जाति में पाये जाते; और घरों में, जलसों में दफ्तरों में, असेम्बलियों में अपने मालिक के रटाये हुए वाक्य बोलते रहते हैं। सच पूछो तो दुनिया में उन्हीं तोतों की हुकूमत है।

मालिक उन तोतों को हमेशा अपने पिंजरे में बन्द रखता है और उन्हें बड़े प्यार से हर रोज अपने हाथ से खाना खिलाता है,

क्योंकि तोता बड़ा वफादार होता है, और वह अपने मालिक के रटाये हुए वाक्यों के अलावा और कुछ नहीं बोलता।

तोता एक किस्म की चिड़ियाँ भी है। उसका रंग हरा, चोंच मुड़ी हुई और जबान चम्मच की तरह होती है। वह भी पिंजरे में रहना पसन्द करता है और अपने मालिक के रटाये हुए शब्द बोलने की कोशिश करता है। इसलिए लोग इसे भी तोता कहते हैं। लेकिन फिर भी तोता जानवर तोता आदमी से कम तोताचश्म यानी आँखें फेरने वाला (अकृतज्ञ) होता है। इसलिए तोता जानवर को ज्यादा महत्त्व नहीं दिया जाता। बस कहो . त—तोता !

थ—थैली

जैसे बिल्लियाँ काली होती हैं और सफेद भी होती हैं। उसी तरह थैलियाँ काली भी होती हैं और सफेद भी होती हैं। परन्तु आजकल सफेद थैली कम दिखाई देती है और काली थैली अधिक पाई जाती है। काली थैली और सफेद थैली की पहचान यह है कि काली भारी होती है और सफेद थैली हल्की होती है, बल्कि बहुधा तो बिल्कुल खाली होती है। कभी-कभी उसके नीचे छेद होता है जिसमें जितने रुपये-पैसे डालो बाहर निकल जाते हैं। परन्तु काली थैली में ऐसा नहीं होता। उसके अन्दर छेद के स्थान पर खाने होते हैं जिनमें रुपये डालो अन्दर-ही-अन्दर छिपे चले जाते हैं और उसका वजन बढ़ता चला जाता है।

चांदी का होता है, नोट कागज का होता है और ...
के रूप में अच्छी नहीं। अभी कुछ वर्ष हुए बंगाल में ...
और लाखों लाशों के ढेर लग गए थे। इसकी वजह यह ...
बनियों और दूसरे अमीर आदमियों ने अनाज छिपा लिया था। ...
उस वक्त हुकूमत के अपने अनाज के ढेर होते तो वह फौरन उनको निकाल-निकालकर लोगों में बाँट देती। लेकिन ऐसा न हो सका। शायद अब लोगों को अक्ल आ जाय और गाँव-गाँव में अनाज के ढेर कायम हो जायँ।

इंगलिस्तान एक द्वीप है, लेकिन हिन्दुस्तान एक ढेर है—बुलबुलों का।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह गुलसिताँ हमारा॥

हिन्दुस्तान में पचास करोड़ बुलबुलें रहती हैं। ऐसी क्षुद्र, रोती, बिसूरती, फाके करती बुलबुलें दुनिया के किसी और हिस्से में मौजूद नहीं। सिर्फ हिन्दुस्तान ही इन बुलबुलों का ढेर है—इसके साथ-साथ गुलामी, अज्ञान, पतन, विवशता, निर्जीवता का; इसलिए कहो: ढ—ढेर!

त—तोता

बच्चो, तोता उस आदमी को कहते हैं जो अपने मालिक का सधाया हुआ होता है, और वही कहता है जो उसका मालिक उससे कहलवाना चाहता है। तुमने अक्सर ऐसे तोते देखे होंगे। ये हर जगह, हर देश और हर जाति में पाये जाते; और घरों में, जलसों में दफ्तरों में, असेम्बलियों में अपने मालिक के रटाये हुए वाक्य बोलते रहते हैं। सच पूछो तो दुनिया में उन्हीं तोतों की हुकूमत है।

मालिक उन तोतों को हमेशा अपने पिंजरे में बन्द रखता है और उन्हें बड़े प्यार से हर रोज अपने हाथ से खाना खिलाता है,

सिद्धान्तों पर व्यवसाय करना है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्धा चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेंगे, बनिये को अच्छा और देशद्रोही को बुरा समझना बिल्कुल अन्याय है। खुशी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को बुरा नहीं समझा जाता रहा। जितने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किसी हिस्से में नहीं। हमारे देशद्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आर्यों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिक्षण और प्रतिपल बिकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश से बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और खुशहाल होता है। यहूदियों की तरह देशद्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। संकट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐश चाहते हो तो देशद्रोही *बनो, देशभक्त मत बनो और कहो : द—देशद्रोही !*

ध—धन

बच्चो, धन से हर चीज खरीदी जा सकती है। तुमने यह पोथी धन देकर पाई है, यह तख्ती, यह दवात, यह कलम, कागज, पेंसिल स्लेट, हर चीज धन देकर पाई है। धन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे आदमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पेन्सिल तक खरीद सकता है, और खुदा से लेकर खिदमतगार तक प्राप्त कर सकता है। धन दुनिया का बादशाह है। पहले पहल दुनिया में धन का दाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेदाम थे, बल्कि यों कहो

काली थैली का महत्व युद्ध के बाद से बहुत बढ़ गया है और यह थैली अब बड़े ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर दिखाई देने लगी है, जहाँ पहले केवल सफेद थैली दिखाई देती थी। कुछ लोग सफेद थैली के अन्दर काली थैली छिपा कर रखते हैं, मानो धर्म की आड़ में धन लूटते हैं। ऐसे लोगों को हमारे व्याकरण में 'थैलीबाज' कहा जाता है। जो जितना बड़ा थैलीबाज होगा उसकी थैली बाहर से उतनी ही सफेद और अन्दर से उतनी ही काली होगी।

सफेद थैली दिन को निकलती है; काली थैली प्रकाश की अपेक्षा अन्धकार को पसन्द करती है। सफेद थैली मेहनत करने वाले हाथों में देखी जाती है; काली थैली बहुधा लोहे की तिजोरियों में बन्द की जाती है। सफेद थैली में बहुधा मूली, गाजर, चावल, किताब, राशन, चीनी रखी हुई मिलती है; काली थैली में धरम-ईमान, सचाई, देश-भक्ति, शान्ति और सुन्दरता के पर कटे हुए मिलते हैं। सफेद थैली में इन्सान का प्रेम होता है काली थैली में सिक्के-ही-सिक्के होते हैं। जब दुनिया के सारे बच्चे हमारा नया व्याकरण पढ़ लेंगे तो दुनिया में चारों तरफ सफेद थैलियाँ ही दिखाई देंगी। इसलिए बच्चों, जोर से कहो : थ—थैली ! परन्तु सफेद, काली नहीं !

द—देशद्रोही

बच्चो, देशद्रोही भी बनिये और दुकानदार की तरह एक व्यवसायी होता है। बनिया आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी बेचता है और अपने लिए मुनाफा हासिल करता है। देशद्रोही अपना राष्ट्र देश और जाति बेचता है और अपने लिए मुनाफा प्राप्त करता है। जिस तरह बनिया ज्यादा-से-ज्यादा फायदा उठाने की फिक्र में रहता है, उसी तरह देशद्रोही भी अपने-आपको ज्यादा-से-ज्यादा फायदा पहुँचाने की फिक्र में रहता है। लेकिन विचित्र बात यह है कि दुनिया में बनियों और दूसरे मुनाफा कमाने वालों को तो अच्छा समझा जाता है, लेकिन बेचारे देशद्रोही को बुरा; हालाँकि वह भी एक व्यवसायी है और उन्हीं

सिद्धान्तों पर व्यवसाय करता है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्धा चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेंगे, बनिये को अच्छा और देशद्रोही को बुरा समझना बिलकुल अन्याय है। खुशी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को बुरा नहीं समझा जाता रहा। जितने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किसी हिस्से में नहीं। हमारे देशद्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आर्यों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिक्षण और प्रतिपल बिकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश से बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और खुशहाल होता है। यहूदियों की तरह देशद्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। संकट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐश चाहते हो तो देशद्रोही बनो, देशभक्त मत बनो और कहो : द—देशद्रोही !

ध—धन

बच्चो, धन से हर चीज खरीदी जा सकती है। तुमने यह पोथी धन देकर पाई है; यह तख्ती, यह दवात, यह कलम, कागज, पेंसिल स्लेट, हर चीज धन देकर पाई है। धन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे आदमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पेंसिल तक खरीद सकता है; और खुदा से लेकर खिदमतगार तक प्राप्त कर सकता है। धन दुनिया का बादशाह है। पहले-पहल दुनिया में धन का दाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेदाम थे, बल्कि यों कहो

काली थैली का महत्व युद्ध के बाद से बहुत बढ़ गया है और यह थैली अब बड़े ऊँचे-ऊँचे स्थानों पर दिखाई देने लगी है, जहाँ पहले केवल सफेद थैली दिखाई देती थी। कुछ लोग सफेद थैली के अन्दर काली थैली छिपा कर रखते हैं, मानो धर्म की आड़ में धन लूटते हैं। ऐसे लोगों को हमारे व्याकरण में 'थैलीबाज' कहा जाता है। जो जितना बड़ा थैलीबाज होगा उसकी थैली बाहर से उतनी ही सफेद और अन्दर से उतनी ही काली होगी।

सफेद थैली दिन को निकलती है; काली थैली प्रकाश की अपेक्षा अन्धकार को पसन्द करती है। सफेद थैली मेहनत करने वाले हाथों में देखी जाती है; काली थैली बहुधा लोहे की तिजोरियों में बन्द की जाती है। सफेद थैली में बहुधा मूली, गाजर, चावल, किताब, राशन, चीनी रखी हुई मिलती है; काली थैली में धरम-ईमान, सचाई, देश-भक्ति, शान्ति और सुन्दरता के पर कटे हुए मिलते हैं। सफेद थैली में इन्सान का प्रेम होता है काली थैली में सिक्के-ही-सिक्के होते हैं। जब दुनिया के सारे बच्चे हमारा नया व्याकरण पढ़ लेंगे तो दुनिया में चारों तरफ सफेद थैलियाँ ही दिखाई देंगी। इसलिए बच्चों, जोर से कहो : थ—थैली ! परन्तु सफेद, काली नहीं !

द—देशद्रोही

बच्चो, देशद्रोही भी बनिये और दुकानदार की तरह एक व्यवसायी होता है। बनिया आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी बेचता है और अपने लिए मुनाफा हासिल करता है। देशद्रोही अपना राष्ट्र देश और जाति बेचता है और अपने लिए मुनाफा प्राप्त करता है। जिस तरह बनिया ज्यादा-से-ज्यादा फायदा उठाने की फिक्र में रहता है, उसी तरह देशद्रोही भी अपने-आपको ज्यादा-से-ज्यादा फायदा पहुँचाने की फिक्र में रहता है। लेकिन विचित्र बात यह है कि दुनिया में बनियों और दूसरे मुनाफा कमाने वालों को तो अच्छा समझा जाता है, लेकिन बेचारे देशद्रोही को बुरा; हालांकि वह भी एक व्यवसायी है और उन्हीं

सिद्धान्तों पर व्यवसाय करता है जिन पर आजकल की दुनिया का व्यवसाय, वाणिज्य और उद्योग-धन्धा चलता है। जब तक व्यापार वाणिज्य के यही सिद्धान्त रहेंगे, बनिये को अच्छा और देशद्रोही को बुरा समझना बिलकुल अन्याय है। खुशी की बात है कि हिन्दुस्तान में देशद्रोही को बुरा नहीं समझा जाता रहा। जितने गद्दार हिन्दुस्तान में पैदा हुए, दुनिया के और किसी हिस्से में नहीं। हमारे देशद्रोहियों ने आज से सैकड़ों साल पहले इस देश को बेचना शुरू किया था और अब तक यह व्यापार चलता आ रहा है। आर्यों से लेकर फिरंगियों के जमाने तक यह देश प्रतिक्षण और प्रतिपल बिकता रहा है।

देशद्रोही की इज्जत हमेशा अपने देश में कम और अपने देश से बाहर ज्यादा होती है। हर व्यावसायिक वर्ग की तरह देशद्रोहियों का वर्ग भी बहुत सम्पन्न और खुशहाल होता है। यहूदियों की तरह देशद्रोही भी दुनिया के हर हिस्से में और हर देश में फैले हुए हैं और इनका कारोबार अन्तर्राष्ट्रीय है। गद्दारों की मिली भगत उदाहरणीय है। संकट के समय एक देशभक्त दूसरे की मदद नहीं करता; लेकिन एक देशद्रोही हमेशा दूसरे देशद्रोही की सहायता करता है।

बच्चो, अगर तुम इज्जत चाहते हो, ऐश चाहते हो तो देशद्रोही बनो, देशभक्त मत बनो और कहो ' द—देशद्रोही !

ध—धन

बच्चो, धन से हर चीज खरीदी जा सकती है। तुमने यह पोथी धन देकर पाई है, यह तख्ती, यह दवात, यह कलम, कागज, पेंसिल स्लेट, हर चीज धन देकर पाई है। धन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इससे आदमी पत्थर की मूर्ति से लेकर पत्थर की पेन्सिल तक खरीद सकता है; और खुदा से लेकर खिदमतगार तक प्राप्त कर सकता है। धन दुनिया का बादशाह है। पहले-पहल दुनिया में धन का दाम नहीं हुआ करता था; सब लोग बेदाम थे, बल्कि यों कहो

कि बूदम (बेवकूफ) थे। पहले यह होता था कि अगर मेरे पास चमड़ा है और मुझे गेहूँ चाहिए और तुम्हारे पास गेहूँ है और तुम्हें चमड़ा चाहिए तो तुम मुझसे चमड़ा ले लेते थे और मुझे गेहूँ दे देते थे और खुशी-खुशी घर चले जाते थे। अब यह सूरत है कि न तो मैं तुम्हें धन के बिना चमड़ा देता हूँ और न तुम मुझे धन के बिना गेहूँ देते हो और न हम लोग खुशी-खुशी घर जा सकते हैं; क्योंकि आज-कल घर भी धन के बिना नहीं मिलता। इस स्थिति को लोग मानवी प्रगति के नाम से पुकारते हैं।

कई लोग कहते हैं कि खुशी का धन से कोई सम्बन्ध नहीं, लेकिन मैंने किसी निर्धन को यह कहते नहीं सुना कि धन के बिना दुनिया में खुश रहना सम्भव है। पहले यह होता था कि लोग मेरे ज्ञान और कला को देखते थे और उसके बदले मुझे पन्द्रह रुपए नहीं देते थे, बल्कि मेरे जीवन की सभी आवश्यकताएँ पूरी कर देते थे। अब किसी ने मूल्य चुकाने का यह नया तरीका निकाला और सारी दुनिया की खुशी को अपने कब्जे में भर लिया है। इससे तो शायद पहला तरीका ही अच्छा था। उसमें खुशी ज्यादा थी; आजकल दाम अधिक दिखाई देते हैं, खुशी कम। पहले दाम कौड़ियों के होते थे, उन्हें दाम नहीं, बल्कि छदाम कहते थे। फिर दाम धातुओं से बनाये जाने लगे; तांबा, चांदी, सोना, पीतल, लोहा—इन सब धातुओं से दाम तैयार किये गए। आजकल दाम कागज के बनते हैं। दाम जाल को भी कहते हैं। वास्तव में इस दाम और उस दाम में बहुत थोड़ा अन्तर है। यह भी एक तरह का जाल है, जिसमें इन्सान की खुशी कैद कर दी गई है। बच्चो, हम सब इस जाल में गिरफ्तार हैं, इसलिए कहो : ध—धन!

न—नियम

बच्चो, हर काम का एक नियम होता है, ढंग होता है, ढचरा होता है, कानून होता है और इसके बिना दुनिया में कोई काम पूरा नहीं हो सकता। जो लोग दुनिया में कोई कानून, कोई नियम नहीं चाहते

उन्हें हम अराजकतावादी कहते हैं, जो लोग नियम और कानून चाहते हैं उन्हें हम सामाजिक कहते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अराजकतावादी नहीं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि एक काम एक ही तरह से हो सकता है। काम करने के ढंग कई हैं और फिर जब काम का सिद्धान्त बदल जाता है तो उसका नियम भी बदल जाता है। मानव-समाज मानवी क्रिया-कलापों के एकत्रीकरण का नाम है। जब मानवी क्रिया-कलाप बदलने लगते हैं तो काम करने का ढंग यानी नियम में बदलन लगता है और मानव-समाज में परिवर्तन हो जाता है। आम जनता की जबान में इसे इन्कलाब कहते हैं।

इन्कलाब जिन्दाबाद का नियम पुराने नियम से भिन्न है और पुराना नियम उससे पुराने नियम से भी भिन्न था। इस तरह अगर हम सैकड़ों साल पीछे की मानव-सभ्यता की बीती हुई शताब्दियों की ओर लौट जायें तो पता चलेगा कि हर कुछ शताब्दियों के बाद यह नियम बदलता रहता है और बदलता रहेगा। एक दिन यह नया नियम भी, जो मैं आज तुम्हें पढ़ा रहा हूँ, पुराना हो जायगा। क्योंकि जीवन परिवर्तन का दूसरा नाम है और जीवन बदलता है तो उसके नियम भी बदल जाते हैं।

तुम्हारी आँखों के सामने इस समय मानव-समाज बदल रहा है और हमारा प्रतिदिन का जीवन बदल रहा है। छकड़े के बजाय हवाई जहाज, भोजपत्र के बजाय रोटरी प्रेस है, पेड़ की छाल के बजाय मर्सराइज्ड कपड़ा है और जिन्दगी में एक की हुकूमत के बजाय सबकी हुकूमत है, और एक के प्रेम के बजाय सबसे प्रेम है।

यह पुराना नियम नहीं है, यह नया नियम है। यह बदलने वाली जिन्दगी का नियम है। अगर पढ़ना चाहते हो तो पढ़ो; अगर सुनना चाहते हो तो पढ़ो; अगर जीना चाहते हो तो पढ़ो; वरना मौत और गुलामी तो भाग्य में लिखी ही है, और तुम्हारे इस जन्मसिद्ध अधिकार को तुमसे कोई छीन नहीं सकता। इसलिए कहो : न—नियम!

प—पतलून

बच्चो, 'प' पतलून होती है। 'प' पाजामा भी होता है, जो तुम अक्सर पहनते हो। और 'प' पंखा भी होता है, जो तुम्हारे घरों में अनाज के डण्ठलों और गन्ने के चूसे हुए छिलकों से बनाया जाता है। लेकिन ये सब देसी चीजें हैं और किसी काम की नहीं हैं। इनसे तुम्हारे ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं होती, इसलिए 'प' पतलून ही सही है।

पतलून पढ़े-लिखे लोग पहनते हैं; और जब तुम भी पढ़ना-लिखना सीख जाओगे तो पतलून पहना करोगे। पतलून पहनने से शरीर फुर्तीला रहता है और मस्तिष्क तेज होता है। दर्जी एक पतलून इतने समय में सीता है जितने समय में दस पाजामें तैयार होते हैं। पतलून सीना बड़ा मुश्किल है। इसलिए बच्चो, अगर तुम्हें पढ़ने-लिखने से प्रेम है तो हरदम पतलून पहनने का पाठ याद करो, क्योंकि जो आदमी पतलून नहीं पहनता वह मूर्ख है।

आदमी पतलून पहनता है और पतलून पेटी पहनती है, जो अधिकांश में आदमी के कन्धे तक जाती है। पेटी, पतलून पहनना, पढ़ना ये तमाम शब्द 'प' से शुरू होते हैं, इसलिए कहो : प—पतलून !

फ—फाका

बच्चो, फाका (भुखमरी) हिन्दुस्तान का मनभाता खाना है। जिस तरह पश्चिम में लोग दिन में एक बार अण्डे और मक्खन अवश्य खाते हैं उसी तरह हिन्दुस्तानी भी दिन में एक बार फाका जरूर खाते हैं, इसलिए फाका (उपवास) हमारे धर्म में भी शामिल है और वह हमारी जिन्दगी का एक बहुत बड़ा हिस्सा है।

भूखे रहने की शिक्षाएँ अनगिनत हैं। उपवास करने से आदमी का दिल हमेशा परमात्मा की ओर लगा रहता है और कभी शैतान की ओर नहीं झुकता। भूख भलाई सिखाती है, बुराई नहीं। भूखा रहने से ज्ञान प्राप्त होता है और अज्ञान मिटता है भूख आदमी को बनाती है, उद्दण्ड नहीं। यही कारण है कि हिन्दुस्तानी दुनिया

की अन्य जातियों और राष्ट्रों की तुलना में इतने विनम्र हैं। उपवास से शारीरिक लाभ भी कई हैं। इससे शरीर मोटा नहीं होता, अपनी वास्तविक हालत पर बना रहता है बल्कि और भी छरहरा हो जाता है। शरीर की फालतू चरबी घुल जाती है और आंखो की ज्योति इतनी तेज हो जाती है कि दिन में तारे नजर आने लगते हैं। इसके सिवा हड्डियों में भी एक खास लचक बल्कि फैलाव का अनुभव होता है। गोश्त सिकुड़ता है, हड्डियाँ फैलती हैं यहाँ तक कि कुछ दिनों में आदमी गोश्त-पोस्त का नहीं, बल्कि हड्डियों का ढाँचा मालूम होने लगता है।

भूखा रहने वाले को—और हिन्दुस्तान में प्रतिदिन करोड़ो आदमी भूखे रहते हैं—पेट की बिमारी कम होती है इसलिए भूखा रहने से कभी बदहजमी नहीं होती, पेचिश नही होती, पेट में कीड़ा नहीं होता अन्त्री आंत में सूजन नहीं होती। आर्थिक दृष्टिकोण से भी भूखा रहना अत्यधिक उपयोगी है। क्योंकि भूखा रहने वाले को पेट का धन्धा करने की क्या जरूरत है ? यही कारण है कि एक औसत भारतीय की आमदनी डेढ आना है।

लेकिन अब हमारे देश के बड़े-बडे अमीर आदमियों ने मिलकर एक पन्द्रह वर्षीय योजना बनाई है, हमारी सरकार ने भी पंचवर्षीय योजना बनाई जिस पर अमल करने से हिन्दुस्तान की आर्थिक उन्नति में तिगुनी वृद्धि हो जायगी, यानी जहाँ कि हिन्दुस्तानी पहले दिन में एक फाका करता था वहाँ अब तीन फाके किया करेगा।

बच्चो, उस मनोरम क्षण की प्रतीक्षा करो और कहो . फ— फाका !

ब—बच्चा

बच्चो, तुम सब बच्चे हो। बच्चे वे होते हैं जिनके माँ-बाप होते हैं और उन्हें कागज, कलम, स्लेट और तख्ती देकर स्कूल भेजते हैं। लेकिन कई बच्चे ऐसे भी होते हैं जिनके माँ-बाप नहीं होते और वे

स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं आते। लेकिन उन बच्चों को हम बच्चे नहीं कहते, अनाथ कहते हैं। दूसरे देशों में सौ बच्चों में से नब्बे बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं, हिन्दुस्तान में सौ बच्चों में से सिर्फ दस बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं,बाकी अँगना में गुल्ली खेलते हैं, इसलिए उन्हें अनाथ कहते हैं

हिन्दुस्तान में सब देशों से ज्यादा संख्या में बच्चे पैदा होते हैं और मरते भी सबसे ज्यादा तादाद में हैं। लेकिन जीना-मरना तो भगवान् के हाथ में है, इसमें हमारा कोई दोष नहीं। बच्चे तो भगवान् और अल्लाह भेजता है और फिर वही उन्हें वापस बुला लेता है। यही बाइबिल में भी लिखा है। इसलिए कहो : ब—बच्चा!

भ—भलाई

बच्चो, भलाई उस काम को कहते हैं जो आदमी स्वयं करता है लेकिन जिससे लाभ दूसरों को पहुँचता है। उदाहरण के लिए अगर तुम अपने घर से मेरे लिए आटा, चावल, नमक, तेल लाते हो तो तुम भलाई (पुण्य) करते हो और लाभ मुझे होता है। और फिर मैं एक गरीब शिक्षक हूँ। मुझे पन्द्रह रुपये तनखा मिलती है और इन सिर्फ पन्द्रह रुपयों में मेरा गुजारा नहीं हो सकता, इसलिए अगर तुम चाहते हो कि मैं जिन्दा रहूँ और तुम्हें पुण्य प्राप्त हो तो मेरे लिए हमेशा-हमेशा आटा, चावल, नमक, तेल, लकड़ी लाते रहो। भलाई और पुण्य बड़ी अच्छी चीज है और अंग्रेजों ने एक शताब्दी से अधिक हिन्दुस्तान की भलाई की है। इसलिए कहो : भ—भलाई !

म—मन्त्री

बच्चो, मंत्री हुकूमत चलाता है। मंत्रीरियासत के सब बड़े आदमियों से बड़ा होता है और मंत्री से बड़ा सिर्फ गवर्नर होता है, या प्रेसीडेंट होता है, या बादशाह होता है।

तुमने अक्सर परियों की कहानियों में सुना होगा कि बादशाह राज करते हैं और मंत्री सलाह देते हैं। पिछले जमाने में भी, जो परियों का जमाना नहीं था, मंत्री बादशाह को सलाह देते थे और बादशाह

उनके कहने पर चलता था। लेकिन आजकल यह होता है कि बादशाह या गवर्नर सलाह देते हैं और मंत्री उनके कहने पर चलते है।

परियों की कहानी में तुमने अक्सर देखा होगा कि मंत्री बुद्धिमान होता है और बादशाह मूर्ख। कभी-कभी यह होता है कि बादशाह बुद्धिमान होता और मंत्री बेवकूफ। लेकिन आजकल बादशाह और मंत्री दोनों बुद्धिमान होते हैं, सिर्फ प्रजा बेवकूफ होती है; और अगर नहीं होती तो बनाई जाती है, और अगर फिर भी न बने तो जेल में ठूंस दी जाती है। इस तरह के शासन को प्रजातन्त्रीय शासन कहते हैं।

परियों के जमाने में एक बादशाह होता था और एक मंत्री। दोनों अलग रहते थे और दोनों के काम भी अलग थे। लेकिन आजकल कई देशों में एक ही आदमी एक ही समय में बादशाह है और मंत्री भी। वह खुद ही सलाह देता है और खुद ही उस पर आचरण करता है। ऐसे आदमी, प्रकट है कि, न बादशाह कहा जा सकता है और न मंत्री। इसलिए उसे डिक्टेटर कहते है। डिक्टेटर अपने देश में अकेला हाकिम (अधिकारी) होता है। वह खुद ही सलाह देता है और खुद ही उस पर आचरण करता है। प्रजा सिर्फ ताली बजाती है, वाह-वाह करती है, अपने खून के दरिया बहाती है; क्योंकि डिक्टेटर को खून बहाने का बेहद शौक होता है। इस प्रकार के शासन को फासिस्ती शासन कहते हैं।

लेकिन परी-देश की दुनिया में डिक्टेटर नहीं होते। परी-देश की कहानी में सिर्फ बादशाह, मंत्री, राजकुमार और राजकुमारियाँ होती हैं। हिन्द में सिर-फिरे लोग इस कोशिश में है कि इस दुनिया को भी परी-देश बना डालें, जहाँ हर लड़का राजकुमार होगा और हर लड़की राजकुमारी। निकट भविष्य में इन लोगों के लिए एक पागलखाना खुलने वाला है, जहाँ ये सब लोग जीवित दफन कर दिये जाएँगे। इसलिए बच्चो, इन लोगों का कभी विश्वास न करो और जोर से कहो : म—मंत्री !

य—याद

वच्चो, इस प्राइमर का वहुत जरूरी अक्षर 'य' याद है। याद किये वगैर तुम प्राइमर को कभी दिमाग में न रख सकोगे और इसे वहुत जल्दी भूल जाओगे। मैं नहीं चाहता कि तुम यह प्राइमर भूल जाओ, क्योंकि अगर तुमने यह प्राइमर भुला दी तो तुम अपने लिए और इस तरह दुनिया के लिए भी नई जिन्दगी न बना सकोगे। इसलिए इसे याद करो। इस प्राइमर को हमेशा के लिए याद रखो।

नई प्राइमर तुम्हारे लिए क्यों जरूरी है? सम्भव है कि मैं तुम्हें इसका सन्तोषजनक जवाब न दे सकूँ; इसलिए नहीं कि तुम वच्चे हो, वल्कि मैं एक मामूली स्कूल-मास्टर हूँ। हाँ, मैं एक मामूली स्कूल-मास्टर होते हुए भी जब आज की सभ्य कहलाई जाने वाली दुनिया की विषमताओं और क्रूर कृत्यों को देखता हूँ तो मुझे महसूस होता है कि दुनिया को एक नये कायदे की जरूरत है।

फिर यह नया कायदा मैं तुम्हें क्यों पढ़ा रहा हूँ? क्यों मैं इस कायदे को वड़े-बूढ़े, तीक्ष्ण-दृष्टि विद्वानों के पास नहीं ले जाता और उनसे प्रार्थना करता कि वे इस कायदे को सारी दुनिया में प्रचारित कर दें, वल्कि मैं अपने कायदे के लिए वच्चों से सहायता की याचना करता हूँ—वच्चे जो कमजोर हैं, जो निहत्थे हैं, जो मासूम हैं?

वस, इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम निहत्थे हो, कमजोर हो और भोले हो; क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम खिलौने से खेलते हो, परियों से प्यार करते हो, पेड़ों से वात करते हो, तारों की निगाहें पहचानते हो और अपने दिल में वह दौलत रखते हो जो डूबते हुए सूरज के सारे सोने मे नहीं है। इसलिए मैं वह कायदा लेकर तुम्हारे पास आया हूँ कि तुम वड़े होकर इस दौलत को दुनिया-भर में फैलाओ ताकि हर वच्चे का लिवास रेशम का हो जाय, उसकी आँखों में खुशी और प्रतिभा चमकने लगे, वह परिस्तान की कहानी ही न सुने, परिस्तान में रहे।

बच्चो, अगर तुमने नये कायदे को याद रखा तो तुम यह सब कुछ कर सकोगे, इसलिए इसे याद रखो और कहो : य—याद !

र—राजा

बच्चो, तुमने राजा देखा होगा। अगर राजा नहीं तो राजा साहब का हाथी अवश्य देखा होगा। हमेशा याद रखो कि राजा साहब का हाथी होता है और पंडित जी की बैलगाड़ी होती है और मौलवी साहब का घोड़ा होता है और गरीब का गधा होता है ! धोबी का कुत्ता होता है और अक्सर वह न घर का होता है न घाट का। लेकिन राजा साहब के पास सिर्फ हाथी ही नहीं होता, सब-कुछ होता है—घर, घाट, धोबी, कुत्ता, पंडित, मौलवी, हाथी, चीता, बहली, गाड़ी, मोटर, कलगी और हीरा। राजा साहब की रानी भी होती है, बल्कि आमतौर पर वह सभी रानियाँ होती हैं, जो आलीशान महलों में रहती हैं। जो औरतें रानियाँ नहीं होतीं वे फूस के छप्परों में रहती हैं। राजा के पास रिआया भी होती है और रिआया के बिना कोई राजा राजा नहीं कहला सकता। इस दुनिया में आरम्भ से यही नियम है कि राजा महल में रहता है, रिआया झोंपड़े में रहती है। वह तख्त पर बैठकर हुकूमत करता है और रिआया हल चलाती है। राजा शराब पीता है, रिआया पानी पीती है और पानी पी-पीकर भी नहीं कोसती। और जब पानी भी नहीं मिलता तो चुप-चाप भूखी-प्यासी मर जाती है। ऐसे समय को अकाल और सूखा कहते हैं।

लेकिन यह दुनिया का पुराना कायदा है। नया कायदा जो तुम अब पढ़ रहे हो यह नहीं सिखाता। नये कायदे में राजा और प्रजा सब बराबर हैं। करोड़ों रुपये एक महल पर खर्च करने के बजाय रिआया के रहने के लिए हजारों अच्छे घर बनाये जाते हैं। कुछ मोटर और हाथी रखने के बजाय सरकारी कारखाने खोले जाते हैं, और कलगी तो बिलकुल उड़ा दी जाती है। भला सिर पर कलगी लगाने

से किसका पेट भरता है? नये कायदे में कलंगी लगाने और हीरे-मोती के गहने पहनने पर किताबें पढ़ने को श्रेष्ठता दी जाती है। इसलिए नया कायदा पढ़ो और कहो : र—राजा !

ल—लोहा

बच्चो, लोहा तुमने अक्सर देखा होगा। यह एक काले रंग की कड़ी धातु है। यह देखो, तुम्हारे चाकू का फल लोहे का बना है; स्लेट के चौखटे में जो पतरे जड़े हैं वे लोहे के हैं; तुम्हारे कलम में जो निब है वह लोहे से बना है; दर्जी की सुई भी लोहे से बनी है; जार्ज वाशिंगटन का कुल्हाड़ा भी लोहे से बना था। तात्पर्य यह कि लोहे से अनगिनत चीजें बनती हैं।

आजकल लोहे से मशीनें भी बनती हैं और मशीनगनें भी। मशीनों से मनुष्य वे तमाम काम करता है जो पहले अपने हाथ से किया करता था। इसका एक फायदा यह हुआ है कि मशीनें दिन-प्रतिदिन बड़ी होती जा रही हैं और इन्सान के हाथ छोटे होते जा रहे हैं।

युद्ध हमेशा मशीनगनों से और लोहे के दूसरे हथियारों से लड़े जाते हैं। मनुष्य को मारने के जितने हथियार हैं वे सब लोहे से बनते हैं, इसीलिए लोहे को धातुओं का राजा कहते हैं। अन्दाजा लगाया गया है कि पहले और दूसरे महायुद्ध में जितने मनुष्य मारे गए उनकी संख्या इनसे पहले लड़े गए तमाम युद्धों की सम्मिलित संख्या से कहीं अधिक है। सिर्फ एक इसी बात से पता चलता है कि लोहा कितनी उपयोगी धातु है। इसीलिए तो जिन राष्ट्रों के पास लोहा होता है वे बड़े राष्ट्र और जिनके पास लोहा नहीं होता, या कम तादाद में होता है, वे छोटे राष्ट्र कहलाते हैं।

कुछ लोगों का खयाल है कि अभी तक लोहा मनुष्य के लिए इतना उपयोगी साबित नहीं हुआ जितना कि एक फूल, एक कह-कहा या एक गीत। लेकिन ऐसे लोगों को आमतौर पर पागल कहा

जाता है। ऐसे लोगों पर हमेशा दुनिया की फटकार बरसती रहती है और वे अक्सर कैदखानों या पागलखानों में बन्द कर दिए जाते हैं, क्योंकि आजकल लोहे का जमाना है, गीत का जमाना नहीं, कहकहे का जमाना नहीं, फूल का जमाना नहीं। वह जमाना अभी नहीं आया, जब आएगा तब तक ये पागल शायद मौत के मुंह में जा चुके होंगे। अब तो लोहे का जमाना है और लोहे और कोयले का चोली-दामन का साथ है; जहाँ ये दोनों मिल जाते हैं वहीं मनुष्य का खून बहता है। इसलिए कहो : *क—कोयला, ख—खून और ल—लोहा !*

व—वस्त्र हीन

बच्चो, तुम अक्सर वस्त्रहीन, नंगे-धडंगे गलियों में फिरते रहते हो और तुम्हें कोई बुरा नहीं कहता। तमाम जानवरों में से सिर्फ मनुष्य ही एक ऐसा जानवर है जो कपड़े पहनता है। बाकी जानवरों को जो हमेशा नंगे रहते हैं, कभी कोई बुरा नहीं कहता, न उन पर असभ्यता का दोषारोपण ही किया जाता है। यह असभ्यता सिर्फ वस्त्र पहनने वाले मनुष्य का विशेषाधिकार है। शायद इसीलिए हिंदुस्तान में साधु-महन्त महात्मा हमेशा वस्त्रहीन रहकर जिन्दगी बिताते रहे हैं।

अब तुम नंगे घूमते हो, लेकिन जब तुम बड़े हो जाओगे तो तुम्हें नंगा फिरने से रोका जायगा। उस वक्त तुम गलियों में कपड़े पहनकर घूमोगे, और लोगों की बहू-बेटियों को ताका करोगे। यह सभ्यता तो जरूर है, लेकिन नंगापन नहीं और इस देश में नंगेपन को बहुत बुरा समझा जाता है। बाली द्वीप के स्त्री-पुरुष, मलाया के लोग, अफ्रीका के हब्शी आमतौर पर वस्त्र-हीन घूमते है, इसलिए वे सब-के-सब बुरे हैं, असभ्य हैं। नंगा रहना संस्कृति के प्रतिकूल है। संस्कृति उस बुरी चीज को कहते हैं जिसे कपड़ों में छिपाकर अच्छा दिखाया जाय।

यूनानी, हिन्दी, बौद्ध, ईसाई, तक्षण किल्ला (मूर्ति कला) और

चित्रकारी के उत्कृष्ट नमूने वे हैं जिनमें मनुष्य के शरीर को उसकी असली हालत में दिखाया गया है। हाथ, पाँव, सीना, जाँघें, लिंग सब कुछ नंगा नजर आता है। इसी तरह पाश्चात्य और पूर्वी संगीत काव्य और साहित्य के उत्कृष्ट नमूने वे हैं जिनमें मनुष्य और मनुष्य के मनोभाव विलकुल नग्न और वास्तविक रूप में दिखलाये गए हैं।

लेकिन ये पुरानी वातें हैं। आजकल नंगा रहने को बहुत बुरा समझा जाता है। यद्यपि मुझे मालूम है कि तुम्हें नंगा रहना पसंद है लेकिन क्या करूँ? इन्स्पेक्टर साहव का हुक्म है कि तुम्हें नंगा फिरने से रोकूँ। इसलिए मैं तुम्हें नंगा रहने का पाठ नहीं पढ़ा सकता। इसलिए बच्चो, नंगे न फिरो। असल को वास्तविकता को, अपने आपको जो-कुछ तुम हो कपड़ों में छिपा लो। जब तुम बड़े हो जाओगे तो यह आदत तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी, क्योंकि उस समय तुम्हें पता चलेगा कि इन्स्पेक्टर साहब का हुक्म न सिर्फ स्कूल में चलता है वल्कि काव्य कला साहित्य संगीत दफ्तर समाज धर्म, जिन्दगी के हर विभाग में चलता है। नग्नता अपराध है।

बच्चो, अगर यही नियम रहा तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य के शरीर पर सिर्फ कपड़े-ही-कपड़े रह जायेंगे और अन्दर कुछ नहीं होगा। यह हमारी मानव सभ्यता की अन्तिम सीढ़ी होगी—इसलिए बच्चो, कपड़े पहनो और सभ्य हो तो कहो : व—वस्त्रहीन !

श—शराब

बच्चो, तुमने शायद अपने बाप को आधी रात के समय घर का दरवाजा टटोलते, झूमते-झामते, गाते, गालियाँ बकते सुना होगा। यह शराब का प्रभाव होता है। शराब बड़ी अच्छी चीज है, क्योंकि यह अंगूर के रस से तैयार की जाती है। लेकिन आजकल अंगूर की वेलें कहीं दिखाई नहीं देतीं, क्योंकि उन्हें उन सभी बच्चों ने काट डाला है, जो जार्ज वाशिंगटन की तरह हर समय कन्धे पर कुल्हाड़ा लिये फिरते हैं। इसलिए आजकल शराब अंगूर के रस से नहीं, बल्कि

जो या चावल या मक्की या कीड़े-मकोड़ों के रस से तैयार की जाती है। जो चीज जितनी ही ज्यादा सड़ी-गली-बुसी होगी उससे शराब उतनी ही बढ़िया तैयार होगी। यह शराब का पहला उसूल है। शराब का आखिरी उसूल बीवी-बच्चों को मारने-पीटने और उन्हें गालियाँ देने पर खत्म होता है। जब शराब तैयार हो जाती है तब उसमें थोड़ी-सी कुनैन भी डाल देते हैं ताकि मलेरिया के वे मच्छर, जो शराब के सड़ने-गलने की वजह से पैदा हो गए हैं, मर जायें। इसीलिए तो शराब का स्वाद तीखा होता है और शराबी को कभी मलेरिया नहीं होता। लेकिन हिंदुस्तान में लोग शराब बहुत कम पीते हैं, इसलिए यहाँ हर साल लाखों मौतें मलेरिया से हो जाती हैं। इसलिए बच्चो, अगर तुम मलेरिया से बचना चाहते हो और कविता करना चाहते हो तो हमेशा शराब पियो, क्योंकि कविता सिर्फ शराब पीने से आती है।

शराब पीने से आदमी का हौसला बढ़ जाता है, दिलेरी, मर्दानगी और काम करने का मादा पैदा होता है, इसलिए आजकल हिन्दुस्तान के शराबियों के हौसले इस कदर बढ़ गए हैं कि उन्होंने अपने देश को आजाद करा लिया है और अपनी हुकूमत कायम कर ली है। बच्चो, तुम भी शराबिस्तान का साथ दो और कहो श—शराब।

स—सरकार

बच्चो, सरकार उसे कहते हैं जो थोड़े से आदमी बहुत से आदमियों पर अपना अधिकार जमाते हैं। तुम बहुत से बच्चे हो, लेकिन तुम सब मेरे अधीन हो। इस स्कूल में मेरी हुकूमत है। मैं इस तहसील में रहता हूँ इस तहसील में और भी बहुत से आदमी रहते हैं, लेकिन इस तहसील पर सिर्फ एक तहसीलदार की हुकूमत है। यह तहसील एक जिले में है, जहाँ कलक्टर की हुकूमत है। यह जिला एक राज्य में है, जहाँ गवर्नर की हुकूमत है। राज्य एक देश में है,

जहाँ प्रैसिडेण्ट की हुकूमत है। देश कामनवेल्थ में है जहाँ बादशाह की हुकूमत है। कामनवेल्थ धरती पर है, जहाँ परमात्मा की हुकूमत है। खुदा दुनिया में है, जहाँ पैसे की हुकूमत है। हुकूमत के बिना आदमी साँस भी नहीं ले सकता। अगर यह हुकूमत न होती तो यह स्कूल भी न होता; न तुम मुझसे सबक लेते, न मैं तुमको पढ़ाता। यह भी हुकूमत का प्रताप है। इसलिए बच्चो, हमेशा हुकूमत (सरकार) की इज्जत करो और यह याद रखो कि हर आदमी हुकूमत नहीं कर सकता और हिन्दुस्तानी तो खास तौर पर कभी हुकूमत नहीं कर सकता। जो लोग हुकूमत करते हैं वे लोग हाकिम कहलाते हैं और जिन पर हुकूमत की जाती है उन्हें शासित यानी रिआया कहते हैं। हाकिम हमेशा रिआया के फायदे के लिए सरकार चलाता है, इसीलिए हाकिम हमेशा अमीर होता है और रिआया हमेशा गरीब होती है। अगर, परमात्मा न करे, कभी ऐसा हो जाय कि हाकिम रिआया के फायदे के लिए नहीं, उसके नुकसान के लिए सरकार चलाए तो रिआया अमीर और हाकिम गरीब हो जाय और यह अच्छी बात न होगी, क्योंकि गरीब हाकिम कभी सरकार नहीं चला सकता। इसलिए हाकिम को हमेशा रिआया के फायदे के लिए ही सरकार का काम चलाना पड़ता है। कुछ लोग चाहते हैं कि सरकार का अस्तित्व ही दुनिया से मिटा दिया जाय। ऐसे लोग बहुत बुरे होते हैं। वे तो मानो 'स' अक्षर को मिटाने पर तुले हुए हैं। बच्चो, अब तुम्हीं बताओ कि अगर 'स' अक्षर को मिटा दिया जाय तो तुम सरकार में हाकिम कैसे बन सकोगे? हुकूमत कैसे करोगे? इसलिए इन पागल आदमियों की बातें कभी न सुनो और कहो : स—सरकार!

ह—हिन्दू

बच्चो, हिन्दू उसे कहते हैं, जो मुसलमान का दुश्मन हो, वह काम करे जो मुसलमान न करता हो। यही कारण है कि मुसलमान गोश्त [illegible]त है, हिन्दू तरकारी खाता है; मुसलमान सिर मुंड़ाता है; हिन्दू

सिर पर चोटी रखता है, मुसलमान गाय को हलाल करता है, हिन्दू उसे माता समझ कर पूजता है; मुसलमान सूअर को हराम समझता है, हिन्दू उसका अचार डालता है; मुसलमान मस्जिद मे जाता है, हिन्दू मन्दिर में, मुसलमान चुपचाप नमाज पढता है, हिन्दू शख और घड़ियाल बजाकर आरती उतारता है। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं!

हिन्दू पृथ्वीराज चौहान की इज्जत करता है, मुसलमान शाहबुद्दीन गोरी की; हिन्दू राणा साँगा को पूजता है, मुसलमान बाबर की शान में प्रशस्तियाँ लिखता है; हिन्दू राणा प्रताप को अकबर से बड़ा समझता है मुसलमान अकबर को राणा प्रताप से अधिक महत्त्व देता है; हिन्दू का हीरो शिवाजी है, मुसलमान का औरंगजेब। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं!

हिन्दू जिस मुहल्ले मे रहता है वहाँ मुसलमान को घुसने नही देता, हिन्दू जिस चौके में खाना खाता है वहाँ मुसलमान का कदम नहीं पड सकता; हिन्दू जिस कमरे मे सोता है वहाँ मुसलमान की छाया नहीं पड सकती; हिन्दू जल पीता है, मुसलमान पानी; मुसलमान बीवी को तलाक देता है हिन्दू उसे सारी उमर अपने साथ रखता है; मुसलमान मरकर गाड़ा जाना पसन्द करता है, हिन्दू आग पर जलने को श्रेष्ठ समझता है। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं!

हिन्दू मुसलमान को म्लेच्छ समझता है और मुसलमान हिन्दू को काफिर मानता है, मुसलमान का जात-पात मे विश्वास नहीं, हिन्दू उसे अपनी सभ्यता का केन्द्र-बिन्दु मानता है, हिन्दू की पवित्र भाषा संस्कृत है, मुसलमान की अरबी; हिन्दू टैगोर को पूर्व का कवि-सम्राट् समझता है, मुसलमान इकबाल को, हिन्दू अखण्ड हिन्दुस्तान चाहता है, मुसलमान पाकिस्तान। इस पर भी हिन्दू और मुसलमान भाई-भाई हैं!

अगर हिन्दू और मुसलमान दोनो भाई-भाई हैं तो 'दुश्मन' के लिए एक नया शब्द बनाना पड़ेगा। लेकिन अब तक कोई ऐसा शब्द

नहीं गढ़ा जाता तुम यही समझो कि हिन्दू मुसलमान का दुश्मन है और हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं। और ये दोनों भाई एक देश में रहते हैं जिसके सम्बन्ध में कहा गया है 'सारे जहाँ से अच्छा है हिन्दोस्ताँ हमारा' और 'ये आवे रोदे गंगा।' इसी देश में जहाँ हिन्दू और मुसलमान बसते हैं कुछ ऐसे लोग भी विद्यमान हैं जो अपने-आपको मनुष्य कहलाना पसन्द करते हैं—खुदा के बन्दे। लेकिन यह उन लोगों की गलतफहमी है। ये लोग खुदा के बन्दे नहीं हैं, नास्तिक हैं, खतरनाक भेड़िये! बच्चो, तुम जहाँ भी इन आदमियों को देख पाओ उनके मुँह पर थूक दो; क्योंकि इस्पेक्टर साहब का यही हुक्म है।

हिन्दू और मुसलमान दोनों भाई-भाई हैं और एक-दूसरे को देश-भाई कहते हैं। देश-भाई जब स्नेह की उमंग में आकर एक-दूसरे के साथ खेलते हैं तो दंगा हो जाता है। दंगा बड़े मजे का खेल है और यह हिन्दुस्तान में अक्सर खेला जाता रहा है। क्योंकि यहाँ हिन्दू और मुसलमान बहुत सख्या में रहते हैं। आम तौर पर दंगा पण्डित और मौलवी से शुरू होकर दफा १४४ पर जाकर समाप्त हो जाता है। इस दौरान में खून की नदियाँ बहती हैं, जिनमें हिन्दू और मुसलमान बड़ी खुशी से नहाते हैं। इसके बाद पुलिस स्थिति पर काबू पा लेती है; और फिर दूसरे दंगे की तैयारियाँ शुरू हो जाती हैं। बड़े मजे का खेल है यह। चूँकि हिन्दू-मुसलमानों को कभी इस खेल से फ़ुरसत नहीं इसलिए उन्होंने यह काम बहुत देर तक अंग्रेजों को सौंपे रखा हमेशा इन दोनों भाइयों के बीच न्याय करते रहे। यही कारण अंग्रेजों को न्यायशील कहा जाता है और हिन्दू-मुसलमानों को .. और जो लोग दंगाशील नहीं, उन्हें प्रगतिशील कहा जाता किन देश में ऐसे मूर्खों की सख्या बहुत थोड़ी है। इसलिए ह—हिन्दू!

ज्ञ—ज्ञान

ो, तुम इस समय हमारी वर्णमाला का आखिरी अक्षर पढ़

रहे हो, लेकिन आखिर मे आने के कारण इसका महत्त्व कम नही है। दुनिया में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज़ ज्ञान है, जो तुम इस समय मुझसे सीख रहे हो; जब तुम ज्ञान सीख जाओगे तो मेरी तरह ज्ञानी (विद्वान्) कहलाओगे, और हर महीने पन्द्रह रुपए पाओगे जो कि इस देश मे एक विद्वान् की तनख्वाह है। बच्चो, ज्ञान बड़ी सम्पत्ति है, इसे न चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है, न भाई बाँट सकता है, न डाकू हथिया सकता है। इसलिए जब ज्ञानी मर जाता है तो अपनी सम्पत्ति अपने साथ ले जाता है और अपने बीवी-बच्चो का भूखा मरने पर मजबूर कर देता है, क्योंकि ज्ञान बड़ी दौलत है। ज्ञान मनुष्य का भूषण है, जिस तरह सोना औरत का भूषण है। लेकिन कई चीजें आभूषण के बिना ही अच्छी मालूम होती हैं जैसे चाँद। हर बच्चा शुरू मे चाँद की तरह होता है, लेकिन बाद मे वह पढ-लिखकर विद्वान् बन जाता है और नौकरी पाता है। क्योंकि ज्ञान से नौकरी मिलती है और नौकरी से धन मिलता है। देखो मैं इस स्कूल मे नौकर हूँ और पन्द्रह रुपए तनख्वाह पाता हूँ। पन्द्रह रुपए दौलत को कहते हैं और पन्द्रह हजार रुपए भी दौलत को कहते हैं; पन्द्रह लाख रुपए भी दौलत कहलाते हैं। फर्क सिर्फ यह है कि ज्ञानी को पन्द्रह रुपए की दौलत मिलती है और कारखानेदार को पन्द्रह लाख की दौलत। लेकिन दौलत हर हालत मे दौलत है—वह पन्द्रह रुपए हो या पन्द्रह लाख। इसलिए हर ज्ञानी को अपनी दौलत पर निर्भर रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञान बड़ी दौलत है। बच्चो, ज्ञान सीखो, क्योंकि अगर तुम यह नहीं सीखोगे तो तुम्हें नौकरी नहीं मिलेगी। ऐसी दशा मे तुम क्या करोगे ? हलवाई की दुकान खोलोगे, व्यापार करोगे, जूते बनाओगे, कारखानो मे काम करोगे, खेती-बाड़ी का धन्धा करोगे, जिसे मेरे जैसा विद्वान् गर्व करने को या मान-प्रतिष्ठा की बात नहीं समझता है ? इसलिए बच्चो, ज्ञान सीखो। ज्ञान के बगैर नौकरी नहीं मिल सकती और इज्जत नहीं हासिल हो सकती, बल्कि मुक्ति भी हासिल नहीं हो सकती। इसलिए कहो : ज्ञ—ज्ञान !

पहला पाठ

अंग्रेज इन्सान हैं। मलायावासी भी इन्सान हैं। इन्सान इन्सान पर हुकूमत करता है। हुकूमत चोर को सजा देती है। चोर डाकू का छोटा भाई है। सब इन्सान भाई-भाई हैं।

मोहन आम खाता है। बनिया सूद खाता है। टामी मक्खन खाता है। बंगाली भूखा रहता है। राजा महल में रहता है। रानी रेशम के कपड़े पहनती है। मेरी बहन का नाम रानो है। लेकिन उसके पास रेशम के कपड़े नहीं हैं।

खरबूजा खा; खरबूजा न बन। हैजे से मर; भूख से न मर। गाली बक; चुप न रह। यह फूट का मेवा है, इसे दिसावर भेज।

राजा आया। हाथी आया। डाकू आया। अकाल आया। गोदाम कहाँ है? यह तो कागज का गोदाम है। अनाज का गोदाम कहाँ है? पहलवान बन; चूहा न बन। गोदाम पर अधिकार कर।

दूसरा पाठ

आज शान्ति है; कल लड़ाई होगी; परसों फिर सुलह हो जायगी। इसी का नाम प्रगति है। प्रगति मनुष्य करते हैं। हिन्दू-मुसलमान दंगा करते हैं। हिन्दू हिन्दू-जल पीता है। मुसलमान मुसलमान-पानी पीता है। इन्सान के लिए पानी कहाँ है? कहीं नहीं है।

शराब अंगूर से बनती है। गुलामी वफादारी से आती है। कुत्ता बड़ा वफादार जानवर है। भेड़िया जंगल में रहता है। कुत्ते के गले में जंजीर है। जंजीर को तोड़ दे। दूध का प्याला फोड़ दे।

मोहन बड़ा अच्छा तोता है। यह जान के पिंजरे में बोलता है—हिप्-हिप्-हुर्रा! अमजद स्मिथ के पिंजरे में है। अमजद बोलता है—इसमें क्या सन्देह है? मोहन हिन्दू है। अमजद मुसलमान है। हिन्दू-

मुसलमान का दुश्मन है। मोहन और अमजद भाई-भाई हैं। भाई लड़ते हैं। गद्दार एक-दूसरे की मदद करते हैं।

तीसरा पाठ

डिक्टेटर खून बहाता है। परी-देश में डिक्टेटर नहीं होता। मास्टर के पास पन्द्रह रुपए हैं। कारखाने वाले के पास लाखों रुपए हैं। हिन्दुस्तानी के पास डेढ़ आना है। पन्द्रह साल के बाद हिन्दुस्तानी के पास चार आने होंगे। पन्द्रह साल मे पाँच हजार चार सौ पचहत्तर दिन होते हैं। हिन्दुस्तानी चालीस करोड हैं। हिन्दुस्तान मे बुलबुलें रहती हैं।

बच्चा नगा फिरता है, पतलून नही पहनता। पतलून पहनेगा तो नौकरी मिलेगी। नौकरी से इज़्ज़त मिलती है। नौकरी कर। बीवी ला। हराम हासिल कर। सोहन के पास बहुत साधन हैं। मोहन के पास एक छदाम नही। मोहन गरीब है। गरीब चोरी करता है। हाकिम हुकूमत करता है।

राजा तख्त पर बैठता है। रिआया हल चला रही है। यह झोंपड़ा है। वह महल है। गाली न बक। नया कायदा पढ़। पुराना कायदा भूल जा।

घर जा। डाकू से लड़। पिंजरा खोल दे। आज रात है। कल सुबह होगी, सूरज निकलेगा। नया मनुष्य आयगा। बच्चे खेलेंगे। कहकहे लगायेंगे। गीत गायेंगे।

मंत्रियों का क्लब

कनॉट प्लेस के गोल चक्कर के बाहर एक और गोल चक्कर शरणार्थियों की दुकानों का खिंचा हुआ है। दुकानें अधिकांशत: खोखे की लकड़ियों, टीन की छतों या तिरपाल की दीवारों से तैयार की गई हैं। इनमें से अधिकतर दुकानें ढाबानुमा होटलों में परिवर्तित हो चुकी हैं। सरकारी मामलों के सिलसिलों में आम लोगों को बहुधा सरकारी दफ्तरों में जाना पड़ता है। ये लोग तबीयत के कमीने और स्वभाव के गन्दे होते हैं, इसलिए नई दिल्ली के साफ-सुथरे होटलों का खाना पसन्द नहीं करते—इसके अतिरिक्त ये लोग अत्यन्त कंजूस और डरपोक होते हैं। 'माई लार्ड' और 'विलपटन' ऐसे होटलों के बड़े बिल देखकर डर जाते हैं, इसलिए इन लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कनाट प्लेस के चक्कर के बाहर ये दुकानें जंगली झाड़ियों की तरह खुद-ब-खुद ज़मीन से उठ आती हैं। इन दुकानों में आप वही बेतरतीबी, गँवारपन और अव्यवस्था पायेंगे, जो अपने-आप उगने वाली जंगली झाड़ियों के झुंड में होती है। मुझे इन ढाबा-नुमा होटलों से सख्त नफ़रत है, जहाँ तीन आने में दो चपातियाँ मिल जाती हैं और दाल मुफ्त, पानी मुफ्त और बैठने के लिए कुर्सी और मेज़ तक मुफ्त। अगर दूसरे देशों के यात्री नई दिल्ली के इन गलीज ढाबों को देख पायें तो हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में कैसी राय कायम करें? और आजकल ले-दे के अपने देश में अपनी एक विदेश-नीति ही तो रह गई है, जिसकी वजह से हिन्दुस्तान का नाम दूसरे मुल्कों में इज़्ज़त से लिया जाता है, वर्ना हमारे यहाँ है क्या? जनता है तो मूर्ख, दुकानदार हैं तो बेईमान, क्लर्क हैं तो घूस खाने वाले, मज़दूर हैं

तो कामचोर, औरतें हैं तो फैशन की दीवानी। लोग ऐसी बुरी आदतों के शिकार हो चुके हैं कि गन्दे घरों में रहते हैं, फटे कपड़े पहनते हैं, और गन्दे बाज़ारों मे आवारागर्दी करते रहते हैं। यहाँ किसी विदेशी यात्री को दिखाने के लिए है क्या? एक था भाखड़ा-नंगल डैम—वह पूरा ही नहीं हो चुकता। यार लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि अगर उसे पूरा कर दिया गया तो हमारे पास विदेशी यात्रियों को दिखाने के लिए रह क्या जायगा?—और दूसरी है हमारी विदेशी नीति—जिसकी वजह से हमारा भरम बाहरी देशों मे कायम है, और यह विदेश-नीति गोया नई दिल्ली की पैदावार है, जहाँ ये बदसूरत ढाबे ठीक कनाट प्लेस के सामने मौजूद हैं। जब तक ये ढाबे कनॉट प्लेस के सामने मौजूद हैं, हमारे देश की विदेश-नीति कभी सफल नहीं हो सकती। मेरी तुच्छ राय मे तो इन ढाबों को ढहा देना चाहिये।—खैर, यह तो सिर्फ विरोध के लिए बात थी, असल बात यह है कि आजकल जो कुछ मैं कहता हूँ, उसमें बात कम होती है और विरोध अधिक होता है।

मैं वास्तव में कहना यह चाहता हूँ कि मैं एक रोज़ कनॉट प्लेस के बाहर एक तपती दोपहर में टीन की छत के नीचे इसी ढाबे में बैठा हुआ खाना खा रहा था। मुझे ये ढाबे पसन्द नहीं है, और न मैं इनमें खाना पसन्द करता हूँ। मैं एक सभ्य, काफी पढ़ा-लिखा आदमी हूँ। बड़े-बड़े आदमियों से मेरी मुलाकात रहती है, जिनमें मन्त्री, गवर्नर, लीडर, मिल-मालिक और पंचवर्षीय प्लान के निदेशक शामिल हैं। जी नहीं, आपने गलत समझा। मैं किसी महकमे में डिप्टी सेक्रेटरी नहीं हूँ, सीमेंट का ठेकेदार भी नहीं हूँ, किसी मन्त्री का भानजा भी नहीं हूँ। नहीं, नहीं मेरी पत्नी किसी असेंबली की मेंबर भी नहीं है। मैं तो आजकल एक अखबार में रिपोर्टर हूँ और केवल इसलिये इस तुच्छ ढाबे में खाना खाने पर मजबूर हूँ कि मुझे लगभग प्रतिदिन सिविल सेक्रेटेरियट-मे-किसी न किसी बड़े आदमी से इंटरव्यू करने के लिए जाना पड़ता है और मेरी जेब इस बात की आज्ञा

नहीं देती कि माई लार्ड होटल में बैठकर खाना खाऊँ, वर्ना ईलान की कहिये—मखमल की कुर्सियों और विलायती चीनी की प्लेटों में सजा हुआ खाना किसे पसन्द न होगा ? हाँ भाई, आधी प्लेट दाल की और दे दो और यह चपाती तो बिल्कुल जल गई है, इसे बदल के लाओ।

"हाँ, तो मैं क्या कह रहा था ? उफ्फोह। किस कदर बुरी आदत है मेरी, पड़ा-पड़ा बेकार की बातें किया करता हूँ, इससे एक तो असल मतलब मिट जाता है और फिर समय कितना बर्बाद होता है, आपने कभी ध्यान दिया। आप आधे घंटे से एक ही कौर मुँह में डाले उल्लू की तरह मेरा मुँह क्या देख रहे हैं। नहीं, नहीं, आप खफा मत होइये। मेरा कहने का मतलब यह था कि आप खाना भी खाइये और साथ में मेरी बातें भी सुनते जाइये।

हाँ, तो मैं आपको बता रहा था कि एक रोज़ तपती दोपहर में मैं इसी ढाबे में बैठा हुआ था कि—अरे ज़रा देखिये तो यह कौन आदमी आपके पीछे आके बैठा है, मुड़ के देखिये। अरे देखिये ज़रूर, मगर इस तरह तो न घूरिए कि दूसरा आदमी आपको सी० आई० डी० वाला समझने लगे। आपने इसे पहचाना, जरा गौर कीजिये, अपनी स्मरण शक्ति पर जोर देकर बताइये—आपने इसे कहाँ देखा है ? मैं दावे से कहता हूँ आपने इसे ज़रूर देखा होगा।

कुछ याद नहीं आता ? दरअसल इसमें आपका भी उतना कसूर नहीं है। इस आदमी की बढ़ी हुई मूँछें जो उसके होंठों पर गिर रही हैं, इसके मैले-कुचैले कपड़े, यह खद्दर की मैली गलीज़ टोपी। उसकी फटी-फटी तार-तार मुस्कुराहट से आप अंदाजा नहीं लगा सकते कि वह आदमी कभी उत्तर दक्षिण प्रदेश में कृषि विभाग का मन्त्री बल्कि तेल विभाग भी इसी के पास था, और यह मैं दावे से कह सकता हूँ कि यह उन दोनों महकमों को सम्हालने के योग्य भी था। इसका बाप मौजा घमालपुर का प्रसिद्ध ज़मींदार था और मन्त्री बनने से पहले यह आदमी सत्रह बार जेल जा चुका था, जिनमें से पहली बार तो एक लड़की भगाने के केस में पकड़ा गया था। दूसरी बार इस पर

डाकुओं की सहायता करने का अपराध था। तीसरी और चौथी बार इस पर सरकारी धन के गबन का मुकदमा चला। इसके बाद जो जन-आंदोलन चला तो इस आदमी का व्यक्तित्व बिल्कुल ही बदल गया। यह गुंडे से एक नेक, सभ्य और देवता जैसा इन्सान बन गया। आखिरी तेरह जेलें इसने राष्ट्रीय आंदोलन के सिलसिले में काटी हैं। मैं जातिभेद में बिल्कुल विश्वास नहीं रखता। मैं समझता हूँ मनुष्य के अन्दर एक विशुद्ध आत्मा होती है, जिसे अगर जाग्रत कर लिया जाय तो वही मनुष्य देवता बन जाता है। कोई जाति बुरी नहीं होती, कोई मनुष्य बुरा नहीं होता, यह सब दिन में परिवर्तन पैदा करने की बात है, और यह बात अलग है कि हमारे देश के लोग मूर्ख हैं, उनके सर पर जब तक डंडे न मारे जायें वे बदलते नहीं, और जो हमारी-आपकी *तरह सभ्य लोग हैं उनके लिये लीडर का इशारा ही काफी है।*

यह भूतपूर्व मन्त्री आजकल बहुत बुरी दशा में दिखाई देता है। देखिये इसकी चप्पल कितनी घिसी हुई है और इसका खद्दर का पाय-जामा कैसा पुराना हो रहा है, और इसकी मूँछें होंठों की लार से लगातार गीली हो रही हैं इसलिये उसका रंग कैसा बुझा-बुझा सा है, जैसे मूँछें बालों की न हों जूट की हों। मेरे खयाल में तो इस भूत-पूर्व मन्त्री को अपनी मूँछें रंगवा लेनी चाहिये, वर्ना कोई विदेशी यात्री इन मूँछों को देखकर हमारे मुल्क की विदेश-नीति के बारे में क्या सोचेगा?

: भाग्य की बात है महाशय ! कि यह किसी समय का मन्त्री आजकल इस ढाबे में यूँ फटे हाल बैठा है। वास्तव में इसमें उसकी किस्मत का भी इतना कसूर नहीं जितना उसकी मूर्खता का है। और सही पूछो तो सत्य निष्ठा भी एक तरह की मूर्खता ही है। यह मन्त्री अत्यन्त ईमानदार था, इसलिये इस दशा को पहुँचा। भला राजनीति में सच्चाई का क्या लेना-देना। राजनीति में तो सच्चाई नहीं देखी जाती, एक-दूसरे का मुँह देखा जाता है। जनता यह देखती है कि लीडर क्या कहता है। लीडर यह देखता है कि मन्त्री क्या कहता है।

मंत्री यह देखते हैं कि चीफ मिनिस्टर क्या कहता है। चीफ मिनिस्टर यह देखता है कि वाह के मुल्क क्या कहते हैं, इसी पर भारत की साख कायम है।—भाई थोड़ी सी चटनी, प्याज और दे देना।

इस मन्त्री का नाम अलगूराम राय है। जब यह उत्तर-दक्षिण प्रदेश में मन्त्री था तो मैं उसका इंटरव्यू लेने गया था। उस समय इसकी शान ही अलग थी। खद्दर का सफेद वुर्राक पहनावा। सर पर खद्दर की किश्तीनुमा टोपी, यों ऊँची तन के खड़ी थी, जैसे किसी ने उसके अन्दर बाँस की खपच्ची डालकर खड़ा किया हो। यही सन्देह इस मन्त्री की गर्दन पर भी होता था। उस ज़माने में इससे इंटरव्यू लेने गया तो इसकी स्टेनो बड़ी खूबसूरत लड़की थी, उसका किस्सा अलग है, वह फिर सुनाऊँगा। उस समय मुझे उस सुन्दर कोमल शरीर, सुनहरे घुँघराले बालों वाली लड़की को देखकर बड़ी खुशी हुई थी। ऊँची एड़ीवाले सैंडिल पहने हुए जब वह टप-टप करती हुई चलती थी तो ऐसा मालूम होता था जैसे दफ्तर के फर्श पर टाइप कर रही है। वास्तव में हाथों से अधिक उसके पाँव टाइप करते मालूम होते थे। और जब वह क्लर्कों की मेज़ों के बीच में से गुज़रते वक्त मन्त्री के कमरे की तरफ जाते हुए इधर-उधर देखकर मुस्कराती थी, तो ऐसा मालूम होता था जैसे मुस्कराती हुई ड्राफ्ट की भिन्न-भिन्न कार्बन कापियाँ हवा में बिखर रही हैं।

उस दिन मन्त्री ने मुझे बहुत लम्बा इंटरव्यू दिया, वह उस दिन बहुत ही प्रसन्न था। असेम्बली में उसका महत्वपूर्ण व प्रसिद्ध कृषि-संबंधी बिल पेश होने वाला था। वह इंटरव्यू के बीच में बार-बार सिगार पीता था। एक सुगंधित रूमाल—शुद्ध और हाथों से बुने हुए खद्दर का—जेब से निकाल कर अपना मुंह पोंछता था, और इस तरह स्नेह-भरी निगाहों से अपनी सुन्दर स्टेनो को देखता था, जैसे उन दोनों के बीच कोई दिलचस्प भेद का साझा हो। और वह काफिर भी यों उसकी तरफ देखकर मुस्कराती थी, जैसे उसने अपने होंठों के पेटे में किसी नई मुस्कराहट का रिबन फिट किया हो। कभी-

कभी मैं सोचता हूँ, एक स्त्री में और एक टाइपराइटर में क्या अन्तर है, ज़रा मुस्कुराओ, मुस्कराहट बाहर।

नहीं महाशय! मैं औरत का दुश्मन नहीं हूँ, मैं रूढ़िवादी भी नहीं हूँ। मैं औरतों, टाइपराइटरों, नौकरों, मन्त्रियों, सामाजिक कार्य-कर्त्ताओं और जन-सेवक समाज का बेहद मानने वाला हूँ। बस अगर मुझे किसी से शिकायत है, तो अपने मुल्क की मूर्ख जनता से। मैं क्या बताऊँ कि किस कदर कूढ़मग्ज़ हैं लोग। अपना भला-बुरा समझने की शक्ति भी नहीं रखते। आप खुद ही सोचिये, मन्त्री अलगूराम राम ने जो कृषि-बिल असेम्बली में पेश किया था, वह किस कदर परि-वर्तनशील बुद्धिमानी का परिचय देता था। अगर पास हो जाता तो उससे हमारे मुल्क की जनता को कितना लाभ पहुँचता, और बाहर के

मुल्क भी इस बिल के पास होने से किस कदर खुश होते। मगर जाने क्या बात हुई कि किसी का ध्यान ही नहीं गया उस तरफ। हालांकि कृषि-मन्त्री ने बहुत उत्तम बिल पेश किया था, और उसके कृषि-सुधारों का सारा उद्देश्य था कि ज़मीन किसानों से ले ली जाय और ज़मींदारों में बाँट दी जावे!! मैं इसी सिलसिले में कृषि-मन्त्री से इंटरव्यू लेने गया था। यद्यपि बात मुझे भी जरा सी अजीब लगी थी कि इस ज़माने में, जब चारों तरफ से यह आवाज उठ रही है कि ज़मीन ज़मींदारों से लेकर किसानों में बाँट दी जाये, उस समय एक मनचला ऐसा उठता है जो बवांग घल आप समझते हैं ना? नहीं तो घर जाके डिक्शनरी देखियेगा, जो बवांग घल यह बिल पेश करता है कि ज़मीन ज़मींदारों से नहीं बल्कि किसानों से ले ली जाये और ज़मींदारों में बाँट दी जाये। इस सिलसिले में जब मैंने कृषि-मन्त्री अलगूराम राय त्रिपाठी से पूछा तो उसने मुझे ऐसा सीधा जवाब दिया कि तबियत पर आज तक उसका असर बाकी है।

अलगूराम ने कहा, "देखिये, यह बात किस कदर गलत है कि पहले तो हम जमीन ज़मींदारों से लेते हैं और इस तरह सभ्य लोगों के एक वर्ग को खत्म करते हैं। यह जातीय नफरत हमारे सरकारी नियम के बिल्कुल विरुद्ध है। फिर हम यहीं पर बस नहीं करते, हम यह ज़मीन ज़मींदारों से लेकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके किसानों में बाँट देते हैं। ज़मीन का यह बारह-बट हमारी कृषि की पैदावार को और भी कम कर देता है। और उसके बाद जब हमें इसका अनुभव होने लगता है, तो हम कोआपरेटिव आंदोलन चलाते हैं, अर्थात् उस ज़मीन को जो भिन्न-भिन्न किसानों में टुकड़े-टुकड़े करके बाँटी गई थी फिर से इकट्ठा करते हैं। यह मूर्खता नहीं तो और क्या है? भई टुकड़े-टुकड़े करके फिर से इकट्ठा करने से तो यही बेहतर है कि जमीन जमींदारों के पास रहे। ज़मींदारी जो है वह गोया एक तरह का कोआपरेटिव सिस्टम ही होता है। मेरे मौज़ा धमालपुर ही को ले लीजिये, यह गांव कई पीढ़ियों से हमारा है। लेकिन हमारे मौज़े के सारे किसान इसमें

मिल के हल चलाते हैं, मिल के बीज बोते हैं, फसल उगाते हैं, फसल काटते हैं। यह कोआपरेटिव आंदोलन नहीं है तो और क्या है ? मेरे पिता खुद अपनी आँखों के सामने सब काम कराते थे, और जो बद-माश किसान चूं-चापड करता था, उसे तुरन्त बेदखल कर देते थे। आजकल अजीब हालत है, किसान कितना निकम्मा, फिसड्डी, काहिल और कामचोर क्यों न हो, कोई उसे उसकी जमीन से बेदखल नहीं कर सकता—हालांकि मेरे जैसे आला पोजीशन के मन्त्री से रोज़ जवाब-तलबी होती रहती है, तुमने अपने भाई को फलाँ जगह क्यों नियुक्त कर दिया, और अपने फलाँ भतीजे को फलाँ पोस्ट क्यों दे दी ? एक मन्त्री को किसी समय भी उसके मन्त्रित्व से बेदखल किया जा सकता है, लेकिन एक मूर्ख अनपढ़, मजहबी, बुराइयों में फंसे और अंध-विश्वास के मारे हुए किसान को कभी ज़मीन से बेदखल नहीं किया जा सकता—यह कोई इंसाफ है ?

"फिर देखिये जब से जमींदारों से ज़मीन छीनी जा रही है, खेती की पैदावार कम होती जा रही है। किसान पहले से अधिक निकम्मे और काहिल हो गये हैं, क्योंकि अब उनके सर पर जमींदार का डण्डा नहीं है, न सिर्फ़ कृषि-पैदावार कम हो गई है बल्कि अनाज की कीमतें बढ़ती जा रही हैं। ईमान की बात कहिये, धर्म की बात कहिये, ज़रा पच्चीस-तीस वर्ष बल्कि चालीस वर्ष पहले के ज़माने में जाइये, जब कि किसानों का यह गलत आंदोलन हमारे देश में न चला था, देखिये उस वक्त भी जमीन जमींदारों के पास थी, लेकिन हमारा देश किस कदर खुशहाल था। हमारे किसान किस कदर मज़े से रहते थे, अनाज किस अधिकता से पैदा होता था और कितना सस्ता बिकता था। चावल रुपये का सोलह सेर तो मैंने लेकर खायें हैं। मकई रुपए की सवा मन बिकती थी। तीन आने सेर दूध था। घी रुपये का छः सेर बिकता था। आटा रुपये का पंद्रह सेर मिल जाता था। आजकल आटा तो क्या लकड़ी का बुरादा भी इस भाव पर नहीं मिलता। अजी लकड़ी का बुरादा तो क्या अगर आप अपने

मकान के निर्माण के लिये बाहर से रेत लाने जायें तोवह भी इस भाव पर नहीं मिल सकती। मुझे मालूम है, मैं आजकल डिप्लोमेटिक कॉलोनी न्यू दिल्ली में अपनी कोठी बनवा रहा हूँ। मुझे मालूम है कि रेत किस भाव पर मिलती है। सीमेंट तो ख़ैर कोटा से मिल जाता है। सरकार अगर रेत का भी कोटा कर दे तो संभव है बात कुछ बने मगर केन्द्रीय सरकार को इसकी फ़िक्र क्या है। कल्चर के लिये मंत्रालय अलग बना लिया है। यह कल्चर-वल्चर सब बकवास है। मेरे ख़्याल में तो केन्द्र को जल्द-से-जल्द रेत का मंत्रालय खोल देना चाहिये। कब से मेरी कोठी का काम रेत के न होने से रुका पड़ा है!

"तो इसलिए रिपोर्टर साहब," अलगूराम राय धमालपुरी कृषि-मंत्री और जेलखाना व पट्टाखाना ने मेरी तरफ अपनी कंजी आँखें घुमाकर कहा—"इसलिये मैं यह कृषि-बिल आज असेम्बली में पेश कर रहा हूँ ताकि ज़मीन फिर से ज़मींदारों को मिल जाये और देश में अनाज सस्ता मिलने लग जाये, और हमारे किसानों के लिये वही ख़ुशहाली का दौर आ जाये, जो आज से चालीस बरस पहले इस देश में था।"

"हियर, हियर!" मैंने जोश में ताली बजायी। मंत्री का भाषण सचमुच युक्ति-युक्त और नये विषय का था। इसके बाद उसने असेम्बली में जो भाषण किया, वह उससे भी बेहतर था। मगर ठीक मौके पर जाने क्या हुआ कि चीफ मिनिस्टर, जिसने कृषि-मंत्री को सहायता का विश्वास दिलाया था, उसी का दल विरोधी दल से मिल गया और यह बिल पास न हो सका। चीफ मिनिस्टर को मंत्री मंडल में फेर-बदल करना पड़ा। जिसमें अब की उन्होंने अलगूराम राय त्रिपाठी को न लिया। त्रिपाठी जी ने दिल्ली में आकर बहुत से दरवाज़े खटखटाये, केंद्रीय सरकार से तिकड़म लड़ाने की बहुत सी कोशिशें कर डालीं, मगर कोई लाभ न हुआ। इस मंत्री मौजा धमालपुर भी इससे छिन गया। गोया यह मनुष्य अपने

मंत्रीपद से गया और अपने निजी पेशे से भी गया। अब आज आप इसे मामूली ढाबे में जली हुई तन्दूरी चपाती खाते हुए देख रहे हैं। ऐसे में अगर कोई विदेशी यात्री हमारे भूतपूर्व मंत्री को इस दशा में देख लें तो हमारी विदेश-नीति के बारे में क्या राय कायम करें ?

मगर असल में उस मंत्री का जो किस्सा आपको सुनाने लगा था, वह तो बिल्कुल ही भिन्न है। जी नहीं, वह स्टेनोग्राफर सुन्दरी का किस्सा भी इस समय नहीं सुनाऊँगा, उसके लिए शाम का वक्त बेहतर होगा—जब सुनहरी झाग वाली बियर स्वच्छ प्याले में छल-कती हो और नियान रोशनियों का प्रकाश किसी के सुनहरे बालों पर दमकता हो और कोई मृगनयनी दिल को रिझाने वाली मेरी बगल में बैठी हो और बिल आप अदा कर रहे हों, वह किस्सा इस समय सुनाने का नहीं है।

इस समय तो मैं आपको इस मंत्री की दूसरी मुलाकात का हाल सुनाता हूँ। अब अलगूराम राय मंत्रिपद से अलग कर दिया गया और दिल्ली पहुँचा और यहाँ कोशिश करने पर भी मंत्रीपद दुबारा प्राप्त करने में असफल रहा तो उसने नई दिल्ली में मंत्रियों का क्लब खोल लिया। जी हाँ—मंत्रियों का क्लब। इस नई दिल्ली में, वह जहाँ आरमीनियाँ होटल है ना, उसके बिल्कुल सामने की बिल्डिंग में खुला था। उस क्लब की कहानी भी बेहद दिलचस्प है। मैं अभी आपको सुनाता हूँ। जरा मेरे लिये आधी प्लेट मुर्ग का आर्डर कीजिये, मगर ख्याल रहे कि उसमें एक टुकड़ा तो मुर्ग की टाँग का हो, दूसरा टुकड़ा सीने का हो। मुझे मुर्ग की टाँग और उसका सीना बहुत पसन्द है। क्या कहा आपने ? पश्चिम में औरत को भी इसी नजर से परखा जाता है ? महाशय आप बहुत औरत-पसंद आदमी मालूम होते हैं। आपको मालूम होना चाहिये—यह हिन्दुस्तान है, जिसका पड़ोसी पाकिस्तान है, जिसका पड़ोसी अफगानिस्तान है। पश्चिम की गंदगी यहाँ मत बिखेरिये। हम लोग एक आध्यात्मिक देश के रहने वाले हैं। पश्चिम की विलासिता यहाँ न चलेगी—जो

मुर्ग और औरत को एक ही नज़र से परखती है—चलिये मुर्ग न सही गोश्त ही मंगाइये।

× × ×

हाँ, तो एक रोज़ मैं अपने अखबार के दफ्तर में बैठा हुआ प्रूफ पढ़ रहा था कि सहायक संपादक ने निमन्त्रण-पत्र मेरे हाथ में थमा कर कहा—"कनाट प्लेस में आज शाम को छः बजे मंत्रियों का क्लब खुल रहा है, आप रिपोर्ट ले आइये।" मैं बड़ा हैरान हुआ। यह मंत्रियों का क्लब क्या बला है! कार्ड देखा। सचमुच आज मंत्रियों के क्लब का उद्घाटन हो रहा था। श्री गुदगुदाचार्य केंद्रीय मन्त्रि-मण्डल के भूतपूर्व कामर्स मिनिस्टर उसका उद्घाटन कर रहे थे। मन्त्रियों का क्लब!—बात अचम्भे की थी, लेकिन जब से कार्ड के नीचे सेक्रेटरी का नाम पढ़ा तो चौंक गया—नीचे मोटे अक्षरों में लिखा था—आर० एस० बी० पी० सेक्रेटरी अलगूराम राय त्रिपाठी धमालपुरी, भूतपूर्व कृषिमन्त्री उत्तर-दक्षिण प्रदेश, रईसज़ादा

व (जेलयाफ्ता) : सत्रह बार। उस समय शाम के पाँच बज रहे थे और उद्घाटन छः बजे था। मैंने उसी वक्त साइकिल उठाई और मंत्रियों के क्लब में जा पहुँचा।

मन्त्रियों का क्लब बहुत उम्दा सजा हुआ था। पर्दे, गावतकिये, तख्तपोश, दीवाना, सोफ़े, देखकर ऐसा मालूम होता था, गोया हैंडलूम इंडस्ट्री की नुमाइश हो रही है। कागजी फूलों और रबड़ के गुब्बारों से सजे हुए केंद्रीय हॉल के एक तरफ नीरा-बार था—जहाँ सिर्फ नीरा मिलता था। धूम्रपान के कमरे में सिर्फ बीड़ी पी जा सकती थी। और खेलों के कमरे में सिर्फ शतरंज खेली जा सकती थी। बलगूराम राय मुझसे बड़े तपाक से मिला। अब की वह मंत्रियों का पहनावा यानि अचकन और चूड़ीदार पायजामा नहीं पहने हुए था। उसके सिर पर गांधी टोपी थी, लेकिन उसका रंग अब लाल था। मेरे पूछने पर उसने बताया—"मैंने अपनी पार्टी से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया है और अब सोशलिस्ट पार्टी से सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश कर रहा हूँ, अगर वहाँ सफल न हुआ तो कम्यूनिस्ट पार्टी में जाऊँगा। और अगर वहाँ भी कामयाब न हुआ तो अपनी पार्टी अलग बनाऊँगा। लेकिन इस अवसर पर तो मैंने मन्त्रियों का क्लब खोल लिया है। अब मुझे मन्त्रित्व से अलग किया गया तो मुझे कोई-न-कोई काम तो जरूर करना था, इसलिए सोच-सोच कर मैंने नई दिल्ली में मन्त्रियों का यह क्लब खोल दिया है। इसका वही व्यक्ति मेंबर हो सकता है जो कभी केंद्रीय मन्त्रि-मण्डल या प्रांतीय मन्त्रि-मण्डल में मन्त्री, सहायक मन्त्री, डिप्टी सहायक मन्त्री या सहायक डिप्टी ज्वाइंट मन्त्री रह चुका हो। इस क्लब का उद्देश्य है भूतपूर्व मन्त्री के अधिकारों की रक्षा और पुनर्वास। मैं कहता हूँ अगर हमारी हुकूमत शरणार्थियों को फिर से बसाने के लिए एक मन्त्रि-मण्डल कायम कर सकती है, तो भूतपूर्व मन्त्रियों के पुनर्वास के लिए अलग मन्त्रि-मण्डल क्यों नहीं कायम करती?

बलगूराम राय ने जोर से मेज पर मुक्का मार कर बड़ी कठोरता

से अंग्रेज़ी में कहा—There should be a separate ministery for the rehabilitaion of ministers.

"वेशक। वेशक" मैंने सर हिलाकर पेंसिल से अपनी नोटबुक पर लिखते हुए कहा। वह मेरे इस समर्थन से निहायत खुश हुआ, राज़दाराना स्वर में कोट का बटन पकड़ के कहने लगा—"मेरे क्लब के तीन सौ मेंबर बन चुके हैं और अगले साल दो ढाई सौ के करीब और मेंबर बन जायेंगे।" "और अगर तुम"—मैंने उसे परमार्श देते हुए कहा—"इस क्लब की एक शाखा पाकिस्तान में कायम कर दो और एक फ्रांस में तो कैसा मज़ा आये?"

"वाह! वाह!! तुमने क्या उम्दा बात सुझाई है मुझे।" अलगूराम राय ने मेरे कोट का बटन तोड़ कर अपनी जेब में डालते हुए कहा—"फिर हम भूतपूर्व मन्त्रियों की एक इंटरनेशनल कांफ्रेंस बुला सकते हैं पैरिस में—अरे सुनते हो पैरिस में?"

पैरिस का नाम आते ही अलगूराम राय की आँखें आनन्द से चमकने लगीं। कुछ क्षणों के लिए चुप रहा गोया दिल-ही-दिल में पैरिस की इंटर-नेशनल कान्फ्रेंस के मजे ले रहा हो फिर यकायक उसे कुछ याद आया, उसने अपनी घड़ी देखी, और जल्दी-जल्दी कहने लगा—"उद्‌घाटन का समय हो रहा है, श्री गुदगुदाचार्य आने वाले हैं, तुम भी चलो बड़े हॉल में।"

वह मुझे छोड़कर जल्दी से बड़े हाल की तरफ भागा। मैं भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। हाल में झुंड के झुंड भूतपूर्व मंत्री दाखिल हो रहे थे। हर प्रांत, हर नस्ल, हर रंग और कौम और हर भाषा के मंत्री थे। उत्तर के मंत्री, दक्षिण के मंत्री, पूरव के मंत्री, पश्चिम के मंत्री, दुबले मंत्री और मोटे मंत्री, लम्बे मन्त्री और छोटे मन्त्री, काले मन्त्री और गोरे मन्त्री और बीमार मन्त्री। मन्त्रियों का एक ताँता बँधा हुआ था। जब सारा हाल भूतपूर्व मन्त्रियों से भर गया अलगूराम राय त्रिपाठी ने सेक्रेटरी की हैसियत से अपनी रिपोर्ट की। मन्त्रियों के क्लब के नियम व उद्देश्यों का बयान कि जो

मैं आपको बता चुका हूँ। इसके अतिरिक्त उसने हुकूमत के काम की भी कड़ी आलोचना की जो हर मन्त्री, मन्त्री बनने से पहले और मन्त्रीपद छिन जाने के बाद किया करता है। लेकिन अलगूराम राय की आलोचना विध्वंसक न थी। मुझे उसमें दो-तीन बातें बहुत दिलचस्प और ध्यान देने योग्य मालूम हुईं। एक तो उसने पंचवर्षीय योजना की नुक्ताचीनी करते हुए बताया कि देश का और विदेशी मुद्रा विनिमय का करोड़ों रुपया फौलाद के कारखाने ढालने में बर्बाद किया जा रहा है। हालांकि हम बड़ी सरलता से कच्चा लोहा निकाल कर बाहर के देशों को बेचकर वहाँ से ढला-ढलाया फौलाद हासिल कर सकते हैं और उस फौलाद की मशीनें बना सकते हैं। इस तरह से हम उस करोड़ों बल्कि अरबों रुपये की रकम बचा सकते हैं जो यहाँ फौलाद के भिन्न-भिन्न कारखाने कायम करने के सिलसिले में बर्बाद किये जा रहे हैं। कृषि-सुधार के सिलसिले में भी उसने बेहद दिलचस्प बात कही। कृषि-बिल के असफल हो जाने के बाद अलगूराम राय ने भी एक हारे हुए आदमी की तरह अपना विश्वास बदल दिया था। अब वह यह न चाहता था कि ज़मीन किसानों में बाँट दी जाये, न यह चाहता था कि ज़मीन ज़मींदारों में बाँट दी जाये, अब वह सिर्फ यह चाहता था कि किसानों को ज़मींदारों में बाँट दिया जाय।

मैं खुशी से उछल पड़ा। उफ्फोह! किस कदर अनोखा और अछूता ख्याल है कृषि सुधार का। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे मन्त्री को अलग कर दिया गया है। लेकिन घबराने की कोई बात नहीं। हुकूमत को बहुत जल्दी अपनी गलती का अनुभव होगा और वह इसे फिर मन्त्री बनने का मौका देगी।

मैं अभी यही सोच रहा था कि सारा हाल तालियों से गूँज गया मालूम हुआ। अलगूराम राय का भाषण समाप्त हो चुका था और अब सैक्रेटरी के आग्रह पर श्री गुदगुदाचार्य स्टेज पर इस क्लब का उद्घाटन करने के लिए तशरीफ ले आये थे। श्री गुदगुदाचार्य को देखकर

न मालूम मेरे मन में क्यों हुदहुद या कलिंग चिड़िया की सूरत उभरने लगती है। हालाँकि इन दोनों पक्षियों का दूर-दूर तक ऐसे बुद्धिमान इन्सान से कोई सम्बन्ध नहीं है। श्री गुदगुदाचार्य ने स्टेज पर आकर दोनों हाथ जोड़ कर सबको नमस्कार किया। अपनी धोती का सिरा ठीक किया। अपने दाहिने हाथ को एक हवा में उछाल के कहा—"लेडीज़ एण्ड जैन्टिलमैन।"

वह इसके आगे कुछ कहने न पाये थे कि क्लब का एक चपरासी जो अपने अच्छे ज़माने में अपने दफ्तर का सुपरिंटेंडेट था यानि जब उसका चचा मन्त्री था। दौड़ा-दौड़ा स्टेज पर आया और जल्दी से उसने कागज़ का एक रुक्का श्री गुदगुदाचार्य के हाथ में थमा दिया। उसका साँस फूला हुआ था और वह बेहद घबराया हुआ दिखाई देता था। श्री गुदगुदाचार्य ने बड़े संतोष से अपनी ऐनक को नाक पर सरकाते हुए उस कागज़ के पुर्जे को देखा, फिर मुस्कराकर बोले—"लेडीज़ एण्ड जेंटिलमैन, पूर्व इसके कि मैं अपना भाषण शुरू करूँ एक ज़रूरी घोषणा है. उसे सुन लीजिये। केंद्रीय मन्त्री-मण्डल में बड़ा महत्वपूर्ण रद्दोबदल होने वाला है। भिन्न-भिन्न विभागों में फेरफार के बाद इस बात का अनुमान है कि प्रधान मंत्री केन्द्रीय मन्त्रि-मण्डल में एक नये मन्त्री को शामिल करेंगे। आज सात बजे प्रधान मन्त्री की कोठी पर—"

लेकिन इसके आगे किसी ने श्री गुदगुदाचार्य की घोषणा को न सुना। तमाम भूतपूर्व मन्त्री अपनी कुर्सियों से उठ खड़े हुए और केंद्रिय हाल के दरवाज़े की तरफ भागने लगे। वे एक दूसरे पर पिले पड़ते थे। हर मन्त्री यह चाहता था कि वह सबसे पहले हाल से बाहर निकल जाये। धक्कम-धक्का, धींगा-मुश्ती का वह आलम था कि मछली मार्कट का दृश्य दिखाई देता था। कई मोटे-मोटे तोंदियल मन्त्री पांव तले आके रौंदे जा चुके थे और ज़मीन पर पड़े चिल्ला रहे थे। और दया की प्रार्थना कर रहे थे।

"लेडीज एण्ड जेंटिलमैन!" दो तीन बार श्री गुदगुदाचार्य ने

चिल्ला के कहा—फिर यकायक उन्हें भी कुछ याद आया और वह भी स्टेज पर अपने भाषण का मसौदा फेंक कर, एक इतनी लम्बी छलांग मार कर जो इस उम्र के आदमी के लिए लगभग असंभव थी, हाल के दरवाज़े पर पहुँच गये और तीर की तरह तमाम मन्त्रियों के बीच से निकल गये।

थोड़ी देर बाद मैंने देखा मन्त्रियों के क्लब में सन्नाटा था, कुर्सियाँ टूटी पड़ी थी, सोफ़े औंधे थे। दो-तीन मन्त्री ज़मीन पर पड़े कराह रहे थे और अस्पताल की एम्बुलेंस का इन्तज़ार कर रहे थे और क्लब के बाहर सड़क पर मन्त्रियों का जमघट था, जो दोनों हाथ ज़ोर से झुलाता हुआ प्रधान मन्त्री की कोठी की तरफ़ दौड़ रहा था।

लीजिये गोश्त भी खत्म हो गया, और आपके पीछे बैठा हुआ अलगूराम राय भी खाना खाके चला गया। खैर इसकी बात तो खत्म ही थी, और यह कम्बख्त, इस वक्त यहाँ ढाबे में आ गया तो मुझे इसकी घटना याद आ गई, वर्ना वह घटना जो मैं आपको सुनाने वाला था—वह तो दूसरी ही है और बहुत महत्व की है। एक दिन की बात है कि मैं तपती दोपहर में इसी ढाबे की टीन की छत के नीचे बैठा हुआ—आप! आप किधर चले?—अरे बिल तो देते जाइये।

बचनसिंह

लिंकिंग रोड के अड्डे पर तीन टैक्सियाँ खड़ी थीं।

मैं उनकी तरफ़ गौर से देखता हुआ आगे बढ़ता चला आ रहा था और अभी फैसला न कर पाया था कि किसमें बैठूं कि इतने में एक आवाज़ आई, "इधर आओ जी, अपने बचनसिंह की टैक्सी में बैठो। उधर मुंह उठाये हुए कहां भागे जा रहे हो बादशाहो?"

मैंने पलटकर देखा, टैक्सियों के अड्डे के बिल्कुल सामने ईरानी रेस्तरां के बाहर एक दुबला-पतला तेज लहजे और शरीर आंखों वाला सरदार बचनसिंह मुझे अपनी टैक्सी से हाथ निकाले अपनी तरफ़ बुला रहा है और सफेद-सफेद दांतों से मुंह खोले हुए मुस्करा रहा है।

बचनसिंह की सूरत जानी-पहचानी मालूम हुई। बाज सूरतें ऐसी हैं कि चाहे ज़िन्दगी में आपने उन्हें पहले कभी न देखा हो, लेकिन पहली ही मुलाकात में ऐसा मालूम होता है मानो बरसों की मुलाकात है। मैं जल्दी से टैक्सी का पट खोलकर उसमें बैठ गया। मेरे बैठने से पहले बचनसिंह ने फ्लैग गिरा दिया था और मीटर चालू करके लिंकिंग रोड से घोडबन्दर रोड की तरफ़ रवाना हो चुका था।

"आप भूल गये मुझको? उस दिन आप मुझे भाण्डुप अपने घर से लेकर चिचपोकली आये थे? कोई तीन महीने की बात है।"

मुझे मालूम था कि मैं भाण्डुप नहीं रहता और न कभी चिचपोकली जाता हूँ मगर मुझे कहना ही पड़ा, "ओ-हां, याद आया, कहिये बचनसिंह जी मिजाज़ तो अच्छे हैं?"

"वाह गुरु की कृपा है। मगर आप तो मुझे भूल ही गये थे और

किसी दूसरी टैक्सी में बैठने वाले थे", बचनसिंह कुछ खफा होकर बोला, "मगर मैं तो अपने ग्राहकों को पहचानता हूँ। एक बार सूरत देख लूँ तो जिन्दगी-भर नहीं भूलता। याद है, आज से पाँच महीने पहले अगस्त की एक भीगती हुई शाम में आपने कुलाबे से एक लड़की उठायी थी, मिस लूनावाला उसका नाम था। रात के दो बजे मैं उसे आपकी मिस लूनावाला को, खड़ा पारसी के चौक में छोड़कर आया था, याद है ?"

अब मैं क्या कहता कि कुलाबे से लड़की उठाने की मुझे हसरत ही रही। इतने पैसे ही कभी जेब में न हुए और फिर मिस लूनावाला ? मेरी बीवी अगर कहीं सुन ले तो मार-मार कर मुझे जूतावाला बना दे। मगर बचनसिंह ने इस फर्राटे से गाड़ी घुमाकर एक ट्रक के करीब से निकाली कि मेरी साँस ऊपर-की-ऊपर और नीचे-की-नीचे रह गई।

कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद मैंने हाँफते हुए खिसियानी हँसी के साथ कहा, "क्या याददाश्त है आपकी बचनसिंह जी, कुछ भूलते ही नहीं हो, मगर गाड़ी जरा धीमे चलाओ।"

"भूलने के दिन तो बचनसिंह पैदा ही नहीं हुआ," बचनसिंह ने खुश होकर कहा और इस खुशी में गाड़ी की रफ्तार तेज कर दी। "और फिर वह चीज भी अच्छी थी," बचनसिंह ने अपने होंठों पर जबान फेरते हुए कहा, "भुने हुए तीतर की तरह खस्ता रही होगी, क्यों ?" कहकर बचनसिंह ने ऐसी शरीर निगाहों से मेरी तरफ देखा कि मैं झेंप गया और टैक्सी पेट्रोल से जाने वाली लारी से टकराते-टकराते बची। बचनसिंह लारीवाले को गालियाँ देने लगा, "देख कर नहीं चलते हैं ये हरामजादे, अभी तेरे पेट्रोल में एक तीली डाल के फूँक दूँगा, जाने किस अहमक ने तुझे लाइसेंस दे दिया है ?"

"मगर तुम तो खुद ही पीछे देख रहे थे, अपने ग्राहक से बातों में मशगूल थे।" लारी ड्राइवर बोला, "वह तो मैंने एक्सीडेण्ट बचा लिया नहीं तो···"

मगर बचनसिंह ने पूरी बात नहीं सुनी, गाड़ी बढ़ाकर आगे ले

गया और जाते-जाते मुझसे कहने लगा, "देख लिया आपने ? ये लारी वाले कितने हरामी होते हैं। बेतहाशा तेज़ रफ्तार से गाड़ी चलाते हैं, न आगे देखते हैं न पीछे और कसूरवार हम गरीब टैक्सी ड्राइवरों को ठहराते हैं।"

"बेशक बेशक, इसमें क्या शुबहा है ?" मैंने कमज़ोर लहजे में कहा। हालाँकि गलती उसी की थी लेकिन वचनसिंह को टोकने की हिम्मत मुझमें न थी।

"मगर मैंने भी साले की तबियत साफ कर दी। ओ बच मोड़ तूं बुड्ढे।" बचनसिंह ने एकदम ब्रेक लगाई, मगर फिर भी सामने से गुज़रता हुआ बुड्ढा उसकी टैक्सी से टकराते-टकराते बचा।

वचनसिंह गाड़ी को रेस करते हुए बोला, "अगर मैं गाड़ी होशियारी से न चलाता तो यह बुड्ढा तो अपने बाप के पास गया था, हा, हा, हा। कहाँ जाना है जी, आपको ?"

मेरा जी वहीं उतरने को चाह रहा था, मगर आस-पास कोई टैक्सी खाली न देखकर मुझे मजबूर होकर कहना पड़ा, "धोबी तालाब जाऊँगा, मगर गाड़ी ज़रा संभालकर चलाओ, वचनसिंहजी।"

वचनसिंह को मेरी सलाह पसन्द नहीं आई, बोला, "आप भी कमाल करते हो बाबूजी, एहतियात तो हर टैक्सी ड्राइवर के लिये ज़रूरी है। एक्सीडेन्ट हो गया तो आपका क्या जायगा, ज़्यादा-से-ज़्यादा एक टाँग टूट जायेगी। मगर मेरी तो टैक्सी टूट जायेगी और हज़ारों का नुकसान अलग होगा और लायसेंस अलग ज़ब्त होगा और रोज़गार से भी जायेंगे। अपने लिये तो बड़ी मुसीबत है। इसीलिये हमेशा टैक्सी बहुत संभालकर चलाता हूँ। ओहो, यह गुजराती सेठ का ड्राइवर बड़ा पाटेखां मालूम होता है। मेरी गाड़ी को आपके सामने, देखा आपने, ना, ना साफ कहिये, आपके सामने इसने ओवरटेक किया कि नहीं मेरी गाड़ी को ? मैं इसको ऐसे निकल जाने दूंगा साले को ? समझता क्या है वे तू, वचनसिंह से गाड़ी बढ़ाकर आगे ले जायेगा ?"

यह कहकर बचनसिंह ने एक्सीलेटर पर जो पाँव रखा तो जम से आगे बढ़कर गुजराती सेठ की गाड़ी के साथ-साथ आ गया। अब दोनों गाड़ियाँ साथ-साथ चल रही थीं—बचनसिंह की टैक्सी और गुजराती सेठ की गाड़ी। और बचनसिंह के मुँह से फूल झड़ रहे थे।

"क्यों बे मदरासी!" बचनसिंह गुजराती सेठ के ड्राइवर से कहने लगा, "तेरी फियट के मडगार्ड में त्रिचनापल्ली मारूँ, रॉंग साइड से ओवरटेक करता है?"

"क्या बकता है," दक्षिण भारत का रहने वाला ड्राइवर भी तैश खाकर बोला, "रांग साइड से तुम ओवरटेक किया मेरी गाड़ी को दो बार, और दो बार हम चुप रहा, मगर हम भी ड्राइवर है कोई हज्जाम नहीं है। ज्यादा लफड़ा करेगा तो तेरी मारिस का मुँह तोड़ के लुधियाना बना देगा।"

इसके बाद बचनसिंह ने निहायत नफीस पंजाबी में नोक पलक से दुरुस्त ऐसी गाली दी जो मद्रासी ड्राइवर के दिल में घुसकर उसकी सात पुश्तों पर हमला कर गई। जवाब में दूसरे ड्राइवर ने जो अपने मुँह की मशीनगन खोली तो दिल्ली से अमृतसर तक पूरी पंजाबी कौम का सफाया कर दिया। साथ-साथ दोनों ही गाड़ियों की रफ्तार भी तेज होती गई। बड़े मरजाकों से दायें बायें की गाड़ियों, लारियों, ट्रकों से बचते हुए ये दोनों ड्राइवर एक-दूसरे को गालियाँ देते साथ-साथ चलते रहे। दोनों गाड़ियों के बीच सिर्फ छः-सात इंच का फासला था। स्टीयरिंग-व्हील की एक जरा-सी गलत हरकत पर, पचास मील की रफ्तार पर चलने वाली गाड़ियाँ एक-दूसरे से टकरा सकती थीं।

उधर गुजराती सेठ का चेहरा फक था इधर मेरा दिल धक था और हम दोनों गाओस से एक-दूसरे का चेहरा देख रहे थे। बांद्रे का चौक गुजर गया। बांद्रे की मस्जिद गुजर गई। दोनों गाड़ियाँ माहिम चौक पर दौड़ती हुई नाके के करीब होती चली गयीं। नाके के बिल्कुल करीब आकर सड़क के दो हिस्से हो जाते हैं, एक हिस्से

पर सिर्फ प्राइवेट गाड़ियाँ गुज़रने की इजाज़त थी, दूसरे से लारियाँ, बसें और टैक्सियाँ गुज़रती थीं। मद्रासी ड्राइवर गालियाँ बकता हुआ अपने रास्ते पर चला गया।

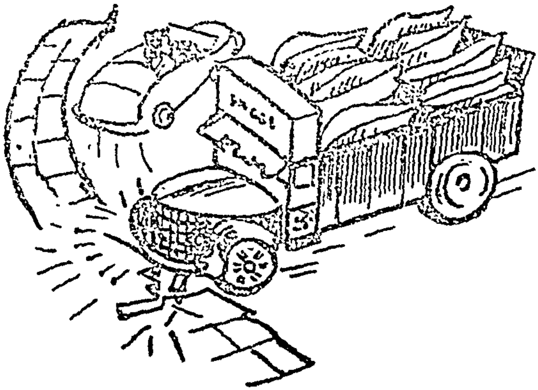

वचनसिंह ने टैक्सी स्लो करते हुए मुझसे कहा, "साला भाग गया देखा आपने?"

मैंने हँसने की कोशिश की लेकिन मेरे गले से एक ऐसी आवाज निकली जो सिर्फ मरने से पहले किसी आदमी के गले से निकल सकती है।

चेक नाके पर पुलिस के संतरी ने वचनसिंह से पूछा, "काय रे, वचनसिंह! क्या माल है तेरी गाड़ी में?"

"एक दर्जन बोतलें ठर्रे की डिक्की में रखी हैं," वचनसिंह कह-कहा मारकर बोला, "और एक नौ-टांक मेरे सेठ ने पी रखी है और दो नौ-टांक मैंने। यक़ीन न आये तो सूंघकर देख ले।"

संतरी ज़ोर से हँसा, "जा, जा मसखरी करता है, मगर कभी तू पकड़ा जायेगा, वचनसिंह।"

हाथ हिलाकर संतरी ने रास्ता दे दिया। वचनसिंह फर्राटे से

गाडी निकाल कर माहिम बाजार में ले आया और सीधा शिवाजी-पार्क जाने के बजाय खोदा गली मे घुस गया।

"इधर कहाँ जाता है ?" मैंने घबराकर पूछा।

"बस एक मिनट का काम है यहाँ।" बचनसिंह ने एक गंदे छपरे के क़रीब अपनी गाडी रोक कर उतरते हुए कहा।

गाडी से उतरकर उसने दो बार हार्न बजाया। छपरे में से बनियाइन और पतलून पहने हुए सफेद बालों वाला एक बुड्ढा निकला। उसके गले में एक छोटी सी सलीब लटकी हुई थी।

डिक्की खोलकर बचनसिंह ने उसके हाथ में भूरे रंग का एक बड़ा थैला थमाया। जब बूढ़े ईसाई ने उस थैले को अपने हाथ मे लिया तो थैले के अन्दर से बोतलों के टकराने की आवाज आई।

"पूरी बारह हैं।" बचनसिंह ने मुस्कराकर कहा।

बुड्ढे ईसाई ने अपनी जेब मे हाथ डाल कर बड़ी राजदारी से उसे बचनसिंह के हाथ की तरफ बढ़ाया। दोनों हाथ एक-दूसरे से पुराने दोस्तों की तरह बगलगीर हुए, फिर बचनसिंह का हाथ जल्दी से उसकी जेब मे चला गया और बुड्ढे ईसाई का हाथ पतलून के बाहर ही रहा। जल्दी से बचनसिंह ने गाडी में बैठकर उसे स्टार्ट किया और खोदा गली से दर्शन लेन से होकर कैडिल रोड पर होकर हरी-निवास से शिवाजी पार्क के चौक पर आ गया। दस मिनट का रास्ता था जो उसने दो मिनट मे तय किया होगा।

इसके बाद वह मुझसे बोला, "कभी-कभी सच बोलने से बड़ा फायदा हो जाता है। वह सिपाही मेरे सच को झूठ समझा और गच्चा खा गया, हा, हा, हा ! किधर से चलूँ, गुदादाद सर्कल से या पोर्चगीज चर्च मे ?" फिर मेरे जवाब का इन्तजार किये बिना खुद ही बोला, "उधर दादर से जे० जे० अस्पताल तक बड़ी गर्दी रहती है इसलिये पोर्चगीज चर्च से चलता हूँ, रास्ता भी सूना मिलेगा और—"

मैंने उसे टोक कर जरा सख्ती से कहा, "जिधर रास्ता खुला मिले उधर से चलो, मगर जरा संभाल कर चलो।"

"संभाल कर चलना तो ज़रूरी है," बचनसिंह बड़ी संजीदगी से बोला, "और टैक्सी तो मैं ऐसी संभाल कर चलाता हूँ कि दूसरे ड्राइवर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। बोलते हैं, तू तो बिलकुल चूहे की तरह डरपोक है।"

मैंने दिल में सोचा अगर यह ड्राइवर चूहा है तो शेरों की रफ्तार का क्या आलम होगा। मगर मैंने उससे कुछ नहीं कहा। बचनसिंह ज़रा संजीदा होकर चालीस की रफ्तार से टैक्सी चलाता रहा। इत्तिफाक से उसे रास्ते में कोई मोटर गाड़ी या लारी भी नहीं मिली जिसे वह ओवरटेक करने की कोशिश करता। उसने अपने दोनों हाथ कुछ देर के लिये स्टीयरिंग व्हील से उठा लिये और सामने के आइने को तिरछा करके उसमें से देखकर अपने दोनों हाथों से अपनी पगड़ी ठीक करने लगा। सामने से एक बड़ा ट्रक चला आ रहा था। करीब आ रहा था। करीब आ गया। बिल्कुल करीब आ गया।

अचानक मैंने चीख़ कर कहा, "अरे क्या करते हो? क्या करते हो?"

बचनसिंह ने बड़ी फुर्ती से व्हील घुमाया, ट्रक एक फुट के फासले पर दहाड़ता हुआ क़रीब से गुजर गया और सारी ज़मीन कांप उठी। मेरे चेहरे से पसीना फूट पड़ा। मैंने जेब से रूमाल निकाला और अपने चेहरे को साफ करने लगा।

बचनसिंह हँसकर बोला, और उसकी आवाज़ में थोड़ी हिकारत भी थी, "बाबूजी, आज मरना, कल मरना, फिर मरने से क्यों डरना? अगर आई होगी तो घर पर बैठे-बैठे मर जाओगे, नहीं तो यह टैक्सी तो क्या पहाड़ से कूद पड़ोगे तो भी बच जाओगे।" बचनसिंह ने यह कहकर गाड़ी की रफ्तार साठ मील कर दी और लहक-लहक कर गाने लगा—

"बंतो दा लक पतला"

मैंने दिल में सोचा सिर्फ बंतो की कमर पतली नहीं है, अपनी

किस्मत भी बिल्कुल पतली बल्कि न होने के बराबर दिखाई देती है। किसी तरह इस ट्रंक्सी ड्राइवर से जान बच जाये तो साईं बाबा के चरणों मे ग्यारह रुपये का चढ़ावा चढ़ाऊँगा।

अचानक बचनसिंह ने गाड़ी की रफ्तार एकदम हल्की कर दी। हैरत का एक दूसरा झटका मुझे लगा। वह मेरी तरफ मुड़कर बोला, "आपने देखा ?"

"क्या ?"

"वह ओल्ड मोबाइल जो पीछे रह गई उसमे ?

"क्या था ?"

"था नहीं, थी।"

"क्या थी ?" मैंने बिलकुल अनजान होकर पूछा। वैसे भी झटके खाते-खाते मेरे दिमाग में मौत के सिवा और किसी चीज का ख्याल बाकी न रह गया था।

"लड़की।" बचनसिंह ने मुझे आँख मारकर कहा, "देखिये, वह अब मुझे ओवरटेक करेगी, गौर से देखिये।"

मैंने गौर से देखा, एक लड़की थी, एक गाड़ी थी, दोनों एक दूसरे में गड्ड-मड्ड थे।

"उम्दा माल है," बचनसिंह ने खटखारा भरते हुए कहा, "नये मॉडल की शेवरलेट मालूम होती है।"

"तुम गाड़ी के बारे में बात कर रहे हो" मैंने पूछा।

"नहीं, मैं तो लड़की के बारे मे बोलता हूँ," बचनसिंह ने कहकहा

मारकर कहा। "मालूम होता है आपने ग़ौर से नहीं देखा। लीजिये, मैं फिर आपको दिखाता हूँ।"

यह कह कर वह गाड़ी को रेस करके फिर आगे ले गया।

अब उसकी गाड़ी लड़की की गाड़ी के साथ-साथ चल रही थी। लड़की ने एक क्षण के लिये सामने से निगाह उठाकर हमारी तरफ इस नखरे से देखा जैसे कोई बढ़िया नस्ल की पोमेरियन कुतिया गली के कुत्तों की तरफ देखती है फिर उसकी गाड़ी आगे निकल गई।

"है न फर्स्ट क्लास ?" बचनसिंह ने मुझसे पूछा।

"एकदम हाई क्लास," मैंने हामी भरी।

"इसके पीछे-पीछे चलें ?" बचनसिंह ने मुझे मशविरा दिया।

"अरे नहीं भाई," मैंने एकदम घबराकर कहा, "मुझे तो अभी स्माल-काजेज कोर्ट पहुँचना है,नहीं तो मकान मालिक कुर्की करा लेगा।"

बचनसिंह ने अपनी घड़ी देखकर कहा, "अभी तो कोर्ट खुलने में चालीस मिनट हैं, जब तक तो हम इस लड़की का घर मालूम करके वापस बोरीबंदर पहुँच सकते हैं, हिम्मत कर जाओ बाबू।"

"अरे नहीं भाई, तुम सीधे चलो इस वक्त," मैंने बिलकुल जिच होकर कहा, 'तुम्हें लड़की की पड़ी है, यहाँ जान पर बनी है। और देखो गाड़ी धीरे चलाओ, बिलकुल धीरे, मैंने कड़े लहजे में कहा, "चाहे अदालत में पाँच-दस मिनट देर से पहुँचेंगे मगर पहुँच तो जायेंगे।"

बचनसिंह को मेरी बुज़दिली पर बेहद कलक हुआ। धीरे से सर हिला कर बड़े अफसोस से बोला, "तुम्हारी मरजी सेठ, नहीं तो ऐसी लड़की बम्बई में तो अब नहीं मिलेगी। क्या स्ट्रीमलाइन बाड़ी है उसका, क्या पालिश है ? एक बार उठाकर गियर में डालो तो यहाँ से नारीमन प्वाइण्ट तक पेट्रोल के बिना चलती चली जाये।"

"मुझे किसी लड़की का पीछा नहीं करना है, बचनसिंह," मैंने झुंझलाकर कहा, "किसी तरह तुम मुझे वक्त पर स्माल काजेज कार्ट पहुँचा दो तो मैं तुम्हें दो रुपये इनाम दूंगा नहीं तो टैक्सी रोक कर यहीं मुझे छोड़ दो।"

"साहब आपका नमक खाया है कितनी बार, ऐसे कैसे छोड़ूँगा आपको ?" बचनसिंह ने बड़े भरोसे के साथ मुझसे कहा, "आपको रूमाल कालेज कोर्ट और फिर कोर्ट से घर छोड़ के आयेगा माटुंगा में।"

"मैं माटुंगा में नहीं रहता, मैं माटुंगा में नहीं रहता। मेरी सात पुश्तों में आज तक कोई माटुंगा में नहीं रहा," मैंने दाँत पीस कर कहा।

बचनसिंह ने एकदम मेरी तरफ से मुँह मोड़ लिया और गाड़ी की रफ्तार तेज करके लड़की की गाड़ी से आगे निकल गया और भायखला की तरफ जाते हुए उसने दर्जनों गाड़ियों, लारियों, ट्रकों को गर्द की तरह पीछे छोड़ दिया। एक बार भी उसने मुड़कर मुझसे बात नहीं की। अब वह यकीनन मुझसे नाराज था और मैं उससे। भायखला के करीब पहुँच कर मैंने टैक्सी स्टैंड की तरफ निगाह दौड़ाई, मगर मुझे कहीं टैक्सी नज़र न आई नहीं तो मैं फौरन उतर कर दूसरी टैक्सी ले लेता।

बदकिस्मती से उस वक्त सुबह का वक्त था, यानि दफ्तरों और कारखानों और अदालतों में जाने का वक्त था। ऐसे मौके पर दूसरी टैक्सी कहाँ से मिलती। मैं निराश होकर उसी टैक्सी के अंदर अनखा-भुनता टेक लगाकर बैठ गया।

भायखला के चौक पर बड़ी भीड़ थी। हमारी टैक्सी के आगे गाड़ियों और लारियों का एक हुजूम था। एक तरफ ट्राम का पट्टा था, दूसरी तरफ बैस्ट की बसों की एक लंबी कतार थी। बीच में रास्ते की एक पतली सी सुरंग सी बन गई थी, इतनी पतली कि उसमें से किसी छोटी से छोटी टैक्सी का गुजरना भी मुश्किल था। कुछ देर तक तो बचनसिंह आगे वाली टैक्सियों और गाड़ियों को हार्न पर हार्न देता रहा और अपनी सीट पर बैठे कसमसाता रहा, फिर उसने एकदम बड़ी फुर्ती और चतुराई से गाड़ी जरा घुमा कर और लाईन से बाहर निकाल कर सुरंग के अंदर डाल दी।

मेरे दोनों तरफ दायें-बायें भीमकाय ट्रामें और बसें खौफनाक

बिल्ली और वज़ीर

श्री उपाध्याय का इरादा कदापि मन्त्री बनने का नहीं था। वह गली शाहदरा में एक साधारण हकीम थे। गुलकंद, सिद्ध मकरध्वज, जहरमोहरा और कुश्ता बेचते थे, मगर किस्सा यह हुआ कि एक दफा चीफ मिनिस्टर के भानजे को, जिसका उसी गली में कोयलों का डिपो था, पेचिश हो गई और वह भी श्री उपाध्याय के इलाज से ठीक हो गया। उसने बातों ही बातों में चीफ मिनिस्टर से श्री उपाध्याय का ज़िक्र कर दिया। चीफ मिनिस्टर को बहुत दिनों से बवासीर की बीमारी थी और किसी तरह ठीक न होती थी। चीफ मिनिस्टर ने अपने भानजे के आग्रह पर श्री उपाध्याय को बुला भेजा। और उनका इलाज शुरू कर दिया। खुशकिस्मती से चीफ मिनिस्टर की पुरानी बवासीर छः महीनों में ही उपाध्याय जी के इलाज से ठीक हो गयी—अब क्या था, श्री उपाध्याय चीफ मिनिस्टर के खानदानी हकीम हो गए, और उनकी गिनती चीफ मिनिस्टर के अपने आदमियों में होने लगी। श्री उपाध्याय जी की हिकमत वह चली कि उन्हें एक साल के अरसे में ही अपने मरीज़ों को देखने के लिए एक गाड़ी खरीदनी पड़ी, घर से बंगले में रहना पड़ा, बंगले में टेलीफोन लगाना पड़ा, बैंक में एकाऊंट खोलना पड़ा, मतलब यह कि चीफ मिनिस्टर साहब की दोस्ती उनके लिए अच्छी-खासी मुसीबत बन गई।

लेकिन यह राजनीतिक आदमी आप तो जानते हैं एक दफा जिस के पीछे पड़ जायें, ज़िन्दगी भर उसे चैन नहीं लेने देते। एक दिन उपाध्याय जी को चीफ मिनिस्टर ने बुलाया और कहा—"उपाध्याय-जी! आप तो हमारे अपने ही आदमी हैं, आप जनता-मण्डल के सेक्रेटरी क्यों नहीं हो जाते।" उपाध्याय जी ने बहुत इन्कार किया, बोले

—"सरकार मैं आजकल माउल्लहम और द्राक्षासव को मिलाकर एक नई दवा बनाने में लगा हूँ, यों समझिये गोया हिकमत में वैद्यक का पैवन्द लगा रहा हूँ, देखिये अब इस मिलावट से कौन सी नई चीज़ निकलती है।"

"कौन सी निकलेगी ?" चीफ मिनिस्टर ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

"यह तो मुझे भी मालूम नहीं।"

इस पर चीफ मिनिस्टर ने और हैरान होकर पूछा—

"मगर यह दवा जो अभी आपको मालूम नहीं कि क्या होगी, किस मर्ज़ के लिए होगी ?"

'यह भी मालूम नहीं।" श्री उपाध्याय ने बड़ी स्पष्टता से कहा। "दरअसल बात यह है सरकार कि अंग्रेज़ी तरीके के इलाज में पहले बीमारी ढूंढी जाती है, बाद में उसका इलाज हाथ लगता है और हम लोग पहले दवा बना लेते हैं और बाद में उसके लिए बीमारी ढूंढते हैं।"

"तो बिल्कुल ठीक है।" चीफ मिनिस्टर ने सर हिलाकर कहा —"आप पहले जनता-मण्डल के सैक्रेटरी हो जाइये, बाद में आपके लिए काम ढूंढ लिया जायगा।"

चुनांचे श्री उपाध्याय जनता-मण्डल के सैक्रेटरी चुने गये, क्योंकि वह चीफ मिनिस्टर के अपने आदमी थे, फिर जब असेम्बली का चुनाव सर पर आ गया तो चीफ मिनिस्टर ने उन्हें फिर बुला भेजा और कहा—"उपाध्याय जी! मण्डल के लोग आपके काम की बहुत तारीफ करते हैं।"

उपाध्याय जी ने हैरान होकर कहा—"मगर सरकार मैं तो मण्डल में एक बार भी नहीं बोला।"

"यही तो तारीफ के लायक बात है।" चीफ मिनिस्टर ने सिर हिला कर कहा—"देखिये आजकल इलेक्शन सर पर आ रहे हैं, मेरे ख्याल में आप असेम्बली के लिए अपने क्षेत्र से मेंबरी की दरख्वास्त

दे दीजिये। आप अपने आदमी हैं और—"

"मगर जनाब।" श्री उपाध्याय ने बेहद परेशान होकर कहा—"मैं इन दिनों बहुत व्यस्त हूँ। आपके कामर्स डिपार्टमेंट के ज्वाइन्ट सेक्रेटरी श्री गरमा बरमानाथ का इलाज कर रहा हूँ।"

"उन्हें क्या बीमारी है?" चीफ मिनिस्टर ने दिलचस्पी लेते हुए पूछा।

"बीमारी तो उन्हें वह है जो मैं उनकी स्त्री को भी नहीं बता सकता, अब आप खुद ही समझ जाइये।"

चीफ मिनिस्टर की आँखों में एक शरारत की चमक प्रकट हुई, भेद-भरे लहजे में बोले—"तो आप उनका इलाज तो ठीक तरह से कर रहे हैं ना?"

"इलाज तो कर रहा हूँ," उपाध्याय जी रुक-रुक कर बोले—"लेकिन मुसीबत तो यह है कि समझ में नहीं आता कि क्या इलाज करूँ? वास्तव में इस बीमारी का सही इलाज संखिया है, अब मेरी समझ में नहीं आता उन्हें कितना संखिया खिलाऊँ जिससे उनकी बीमारी तो मर जाय, लेकिन वह खुद न मरें। अगर संखिया कम देता हूँ तो उनकी बीमारी नहीं जाती, ज्यादा देता हूँ तो वह खुद मर जाते हैं।"

"मरना जीना तो भगवान के हाथ में है," चीफ मिनिस्टर ने जम्हाई लेते हुए कहा—"मगर इलेक्शन तो अपने हाथ में है न, इसलिए आप बस देर न कीजिये, आप इसी इलेक्शन में खड़े हो जाइये, आप अपने आदमी हैं और—"

चुनांचे श्री उपाध्याय जी असेम्बली के मेम्बर हो गये, फिर जब चीफ मिनिस्टर साहब अपना मन्त्री-मण्डल बनाने लगे, तो उन्हें अपने आदमियों की जरूरत पड़ी, इसलिए उन्होंने श्री उपाध्याय जी को स्वास्थ्य विभाग का मन्त्री बना दिया, और जंगल का महकमा भी उन्हीं के सुपुर्द कर दिया कि हर तरह की जड़ी-बूटियों की खोज जंगल में ही होती है। श्री उपाध्याय जी ने मन्त्री बनने से बहुत

इन्कार किया, एक तो उनकी धर्मपत्नी ग्यारह बच्चों के बाद गर्भवती थी, फिर उन दिनों वह एक रईस और कारखानेदार की आज्ञा पर सच्चे मोती और जवाहरात वाला सिद्ध मकरध्वज बनाने में व्यस्त थे, मगर चीफ मिनिस्टर साहब ने उनकी एक न मानी, बोले—"आप यह भी तो सोचिये, अब तक इनमें से कोई ऐसा नहीं है, जिसे कोई-न-कोई बीमारी न लगी हो, किसी का सिर हिलता है, तो कोई दमे का शिकार है, किसी को प्रमेह है तो कोई हाई-ब्लडप्रेशर से ग्रस्त है, इसलिए भी मन्त्री-मण्डल में किसी न किसी हकीम या वैद्य का होना जरूरी है, आप अपने आदमी हैं और—"

"बेशक ! बेशक !!" चीफ मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी ने सर हिला कर कहा और श्री उपाध्याय जी मन्त्री बन गये।

श्री उपाध्याय जी मन्त्री तो बन गये, लेकिन वह इस पद पर खुश न थे, एक तो उन्हें अंग्रेज़ी अर्थात् अपने देश की असली राष्ट्र-भाषा आती न थी, फिर वह हिन्दी-उर्दू भी कामचलाऊ जानते थे, इसलिए मन्त्रालय का सारा काम उन्होंने विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेटरी को सौंप रखा था और खुद दूसरे मन्त्रियों के इलाज में लगे रहते थे। और सच बात तो है कि यह काम बजाय खुद इतना बढ़ा था कि उन्हें अपने विभाग की तरफ ध्यान देने की फ़ुर्सत भी कहाँ थी !

एक दिन दोपहर में आकाश का रंग गुलाबजल की तरह स्वच्छ था, और ज़मीन त्रिफला की तरह पीली और भूरे रंग की हो रही थी, श्री उपाध्याय अपनी खरल में अमल कुश्ता अम्बरी मरवाईवाला घोंट रहे थे।

चीफ मिनिस्टर का प्राइवेट सेक्रेटरी उनके पास आया और उनके कान में कहने लगा—"अभी चलिये, चीफ मिनिस्टर साहब ने बुलाया है, बेहद ज़रूरी काम है।"

"क्या उन्हें दिल का दौरा फिर पड़ गया ?" उपाध्याय जी चिंतित होकर बोल पड़े।

"नहीं दौरा नहीं है।" प्राइवेट सेक्रेटरी जल्दी से बोला।

"तो फिर मैं कौन सी दवा अपने साथ ले चलूं, जल्दी से बताइये उन्हें क्या बीमारी है?"

"कोई बीमारी नहीं है।" प्राइवेट सेक्रेटरी ने जरा परेशान होकर कहा—"एक सरकारी काम है।"

"सरकारी काम है तो मेरे विभाग के प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्री जितेन्द्रनाथ कुन्द्रा को बुला लीजिये, मेरे जाने की क्या जरूरत है, आप देखते नहीं मैं इस खरल मे कैसी कीमती दवा घोट रहा हूँ।"

चीफ मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी ने बड़ी खुशामद की। आखिर बड़ी मुश्किल से उपाध्याय जी जाने के लिए तैयार हुए।

जब उपाध्याय जी चीफ मिनिस्टर की कोठी पर पहुँचे तो वहाँ खुशामदियों की बड़ी भीड़ थी, बड़ी मुश्किल से चीफ मिनिस्टर साहब ने उनसे छुटकारा पाया और फिर श्री उपाध्याय की तरफ ध्यान देते हुए बोले—

"मन्त्री-मण्डल खतरे में है।"

"किसका?" उपाध्याय जी ने पूछा—"मेरा या आपका?"

"सबका!—और अगर इसी वक्त आपने मेरी मदद न की तो मैं मारा जाऊँगा।"

उपाध्याय जी ने हाथ जोड़ कर कहा—"मैं आपका अपना आदमी हूँ, किस दिन काम आऊँगा, उस कमबख्त का नाम आप बता दीजिये, जिसने आप को इस कदर परेशान कर रखा है मैं हर शहर के दो चार गुंडो को जानता हूँ, चाकू के एक ही वार से मैं—"

"नहीं, नहीं उपाध्याय जी आप! आप बात को समझे नहीं, यह गुंडों के किये से काम न होगा, यह काम तो आपको करना होगा।"

उपाध्याय जी काँप गये बोले—"यह काम तो मैंने आज तक कभी नहीं किया, आपके मुझ पर बड़े एहसान हैं, लेकिन किसी की जान लेना!"

'सात आदमियों की बचत से भला क्या होगा ?" चीफ मिनिस्टर साहब उदास होकर बोले—"और नीचे जाइये।" चीफ मिनिस्टर ने सुझाव दिया। उपाध्याय जी सेक्रेटरी के धरातल से नीचे उतर कर सोचने लगे, बोले—

"नौ महकमे के सुपरिन्टेन्डेन्ट आधे कर दीजिये, साठ के तीस रखिए।"

"तीस की बचत से भी क्या होगा? और नीचे जाइये, और नीचे—"

उपाध्याय जी और नीचे चले गये, क्लर्कों तक पहुँचे तो चीफ मिनिस्टर का दिल जरा खुश हुआ और जब चपरासियों पर पहुँचे तो चीफ मिनिस्टर की बाछें खिल गयीं, उन्होंने फौरन उपाध्याय जी को गले लगा लिया, बोले—"अब आप कुछ-कुछ मंत्री होते जा रहे हैं—दरअसल हम लोगों—हम मन्त्री लोगों को बहुत नीचे उतर कर आम लोगों की सतह पर सोचना चाहिए—आप एक काम कीजिये, मेरे ख्याल में अब आपका एक दौरा भी हो जाय।"

"दौरा। मुझे तो दिल का दौरा नहीं पड़ता, मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ।"

"मेरा मतलब इलाके के दौरे से है। आप तीन ताल का एक चक्कर लगा लीजिए। तीन ताल हरा-भरा सुन्दर पहाड़ी स्थान है और आपने अब तक अपने इलाके का एक दौरा तक नहीं किया, इससे दूसरे मन्त्रियों को आपसे शिकायत पैदा हो चुकी है, लिहाजा आप तीन ताल का दौरा कर आइए और वहाँ बैठकर राष्ट्रीय बचत के सिलसिले में अपनी योजना ठीक तरह से सोच लीजिए और अगर हो सके तो वहाँ के स्थानीय विभागों को देखकर उनमें भी बचत कर दीजिए मैं आपको पूरा-पूरा अधिकार देता हूँ इस सम्बन्ध में।"

बातें करते-करते दोपहर से शाम हो गई। जब उपाध्याय जी चीफ मिनिस्टर की कोठी से बाहर निकले तो उन्होंने तीन ताल जाने का और वहाँ जाकर राष्ट्रीय बचत करने का पक्का इरादा कर

लिया था, वह वेहद खुश होकर चीफ मिनिस्टर के वंगले से बाहर निकले, उस वक्त शाम हो चुकी थी, पश्चिमी आकाश में क्षितिज का रंग लाल तरबूज के शर्वत जैसा था और कहीं-कहीं आसमान पर तारे झरबेरियों की तरह निकले हुए थे।

जंगल विभाग के कंजरवेटर ठाकुर मनवन्तसिंह वड़े उम्दा शिकारी थे, पुराने अनुभवी थे, अंग्रेजों का जमाना देखे हुए थे, उन्होंने श्री उपाध्याय जी को हाथों-हाथ लिया। तीन ताल के वोट क्लब में उन्हें शानदार दावत दी, और उनकी तुलना भारत के प्राचीन वैद्यों —चरक और सुश्रुत से की। बांदीपुर की महारानी ने उनके सम्मान में नृत्य का आयोजन किया और महाराजा गोलमालपुर उन्हें झील पर मछली का शिकार कराने ले गए। जब यह राउन्ड पूरा हो चुका और श्री उपाध्याय ने तीन ताल के जंगलात देखने चाहे तो ठाकुर मनवन्तसिंह ने राजा आफ वांसीपुर से कह कर एक हाथी का वंदोबस्त किया और ठाकुर मनवन्तसिंह श्री उपाध्याय को एक हफ्ते तक तीन ताल के तराई के जंगलों में लिए फिरे ठाकुर मनवन्तसिंह को शिकार का वहुत शौक था। अंग्रेजों के समय में चीफ कंजरवेटर को जंगल की सवारी के लिए एक हाथी मिलता था, लेकिन राष्ट्रीय सरकार के आने से हाथी वचत में आ गया, इसका भी ठाकुर मनवन्तसिंह को वहुत गम था, मगर वह कुछ न कर सकते थे, दो-चार वार उन्होंने कोशिश की एक मर्तवा खुद चीफ मिनिस्टर से कहा, लेकिन हाथी वरावर घटाव में रहा।

श्री उपाध्याय को अलवत्ता शिकार से कोई दिलचस्पी न थी, इसलिए जंगल में घूमते-घूमते जव ठाकुर मनवंतसिंह, "हाय! वह चीता निकल गया।" कह कर हाथ मलते तो श्री उपाध्याय जोर से चिल्ला पड़ते—"अरे वह झाड़ी आपने देखी?"

"कौन-सी?" ठाकुर मनवन्तसिंह अपनी निराशा पर काबू पाते हुए पूछते।

"वह, जिस पर छोटे-छोटे सुनहरे रंग के फूल लगे हैं।" इस

बाद श्री उपाध्याय हाथी रुकवाकर नीचे उतरते और जंगल से बूटी तोड़कर ठाकुर मनवन्तसिंह को दिखाते और कहते—"देखिए हम लोग इसे कटपुकड़ी कहते हैं, प्राकृत में इसे पुडीकट कहते हैं, संस्कृत में यह रपर्डाकर्क है, यूनानी में यह बाग कलौला है।

"अजब झमेला है।" ठाकुर जी आश्चर्य से बोले—"मेरे ख्याल से यह आमले का पेड़ है।"

"जी हाँ। वही तो है, मगर बड़े काम की चीज है। इसके फायदे—'इसके बाद श्री उपाध्याय जी ने हाथी पर चढ़कर जो आमले के फ़ायदे गिनाने शुरू किये तो—"जो, जो, जी।" कह कर ठाकुर मनवन्तसिंह को कुछ नींद सी आने लगी, इतने में ठाकुर साहब ने झाड़ी के नीचे एक रीछ देखा और मारे खुशी के फिर अपनी रायफल सीधी की यकायक उपाध्याय जी ने जोरों से चिल्लाकर कहा—"हाथी रोकिये, हाथी रोकिये।" ठाकुर मनवन्तसिंह ने दाँत पीसकर अपनी रायफल नीचे कर ली और बोले—"नीचे तो रीछ है।"

उपाध्याय जी हँसकर बोले—"नही ठाकुर जी। नीचे एक बूटी है, बहुत ही उत्तम बूटी है, मुझे नजर आ गई है, देखिये यह—हाथी उतर कर आपको दिखाता हूँ।"

छ भाग गया था। ठाकुर साहब ने दिल ही दिल में कुछ कहा होगा, लेकिन प्रकट मे बड़ी सहनशीलता से हाथी रुकवाया। उपाध्याय जी नीचे उतरे और एक सूखी झाड़ी के पास रुक गये और बोले—"देखिए यह है बहुमूल्य बूटी। यह मुकुमारल बूटी है, जिसे प्राकृत में मुलमारल कहते हैं, संस्कृत में इकमारल, यूनानी मे चिकन खतूता। लाजवाब बूटी है, इसकी जड़ को तीन साल आमले के रस में भिगोकर क्षय के रोगी को खिलाया जाय तो वह दो दिन मे अच्छा हो जाय।"

ठाकुर मनवतसिंह के दिल में ख्याल तो आया कि तीन साल तक मानि जब तक यह बूटी आमले के रस में भीगती रहेगी, उस समय क्षय का रोगी क्या करेगा? मगर मन्त्रियो से इस तरह के

सवाल करना शिष्टाचार के खिलाफ है, बल्कि सवाल न करना एक तरह की राष्ट्रीय बचत ही है।

सात दिन के दौरे के बाद श्री उपाध्याय जी तराई के जंगलों से वापस आकर फिर तीन ताल में टिक गये, उनका स्वास्थ्य वेहतर हो गया था, इसके अलावा उन्होंने हल्दी, जीरा, आमला, बनफशा और इसी प्रकार की सौ डेढ़ सौ नायाब बूटियाँ इकट्ठी कर ली थीं। ठाकुर मनवंतसिंह का ट्रिप भी बुरा न था। स्वास्थ्य मन्त्री की वेजा रोक टोक के बावजूद उन्होने दो चीतों के शिकार कर लिये थे।

श्री उपाध्याय ठाकुर मनवंतसिंह के काम से अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले—"ठाकुर साहब आपको यहाँ किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं है ?"

ठाकुर साहब बोले—"श्रीमान जी। सब ठीक है, सब अच्छा है, बस एक ही तकलीफ है, और वह यह कि तराई के जंगल तो खुद आपने अपनी आँखो से देख लिए हैं. इन जंगलों में जब घोड़े पर सवार होकर दौरे को जाता हूँ तो सख्त तकलीफ होती है।"

"मगर मुझे तो कोई तकलीफ नहीं हुई।" उपाध्याय जी आश्चर्य से बोले।

"आप तो हाथी पर थे न।" ठाकुर मनवंतसिंह ने समझाया।

"तो आप भी हाथी पर जाइये, किसने आपको मना किया है ?" उपाध्याय जी फौरन बोले।

"कभी-कभार अपने मेल-जोल से किसी राजा-महाराजा का हाथी माँग लेता हूँ, मगर आप जानते हैं वे लोग अपनी मर्जी के मालिक हैं, कभी देते हैं, कभी नहीं देते, हाथी तो दरअसल सरकारी होना चाहिए।"

"आप बिल्कुल ठीक कहते हैं।" उपाध्याय जी सिर हिलाकर बोले—"इतने घने जंगलों में हाथी के बगैर जाना सरकारी कर्मचारी को मौत के मुँह में ढकेलना है।"

"बेशक। बेशक!" ठाकुर मनवंतसिंह अत्यन्त गम्भीर होकर

बोले।

"हाथी कितने का आयेगा ?" आखिर उपाध्याय जी ने सोच-सोच कर पूछा।

ठाकुर मनवन्तसिंह बोले—"अच्छा हाथी दस हज़ार में आयेगा, मगर इन दिनों इत्तफ़ाक़ से राजा आफ बाँसीपुर का एक हाथी पाँच हज़ार में मिल रहा है।"

"आप ले लीजिये, मैं मंजूरी दे देता हूँ।"

ठाकुर साहब कागज़ात तो पहले ही तैयार करके जेब में रखे हुये थे, फौरन आगे बढ़ा दिये, खुद अपना कलम पेश किया और एक क्षण में पाँच हज़ार का हाथी मंजूर हो गया।

फिर ऐसी दावतों, टी पार्टियों का सिलसिला चल निकला और कुछ इस तरह की व्यवस्था रही कि अगले दस रोज तक उपाध्याय जी को याद ही न रहा कि वह यहाँ किस सिलसिले में आये थे। यकायक रात को ध्यान आया कि वह तो यहाँ राष्ट्रीय बचत करने के सिलसिले में आये थे, सोचते ही उनके माथे से पसीने की धारें फूट पड़ीं क्योंकि आदमी सीधे थे और नेक दिल थे और नहीं जानते थे कि सरकारी काम कैसा मुश्किल होता है ? विवश होकर उन्होंने टेलीफ़ोन पर ठाकुर साहब को बुलाया और उनसे कहा—कि वह अपने स्थानीय विभाग के कर्मचारियों की सूची लेकर आयें, राष्ट्रीय बचत की जायेगी।

रात को ठाकुर साहब अपने विभाग की सूची लेकर पहुँच गये। श्री उपाध्याय जी ने सूची देखकर कहा—"आप मुझे ज़बानी समझाइये।"

"देखिये एक तो मैं हूँ" ठाकुर मनवर्तसिंह बोले—"आप मुझे निकाल सकते हैं।"

उपाध्याय जी मुस्कुराकर बोले—"चलिये-चलिये, एक आदमी को निकाल कर क्या होगा ?"

"मेरे दो आदमी, मेरे दो डिप्टी कंजरवेटर हैं, जो छः जंगलों

को सँभालते हैं।"

"वाप रे। फिर उनके पास वहुत काम होगा, आगे चलिये मेरा मतलव नीचे चलिये।"

"नीचे चार असिस्टेंट डिपुटी कंजरवेटर।"

"और नीचे।"

"वारह रेंज आफिसर।"

"और नीचे।"

"अट्ठाईस फारेस्ट आफिसर।"

"और नीचे।"

"साठ फारेस्ट गार्ड हैं।"

"और नीचे।"

"सात रेकार्ड क्लर्क।"

"और नीचे।"

"विल्ली का दूध नौ रुपये।"

उपाध्याय जी यकायक रुक गये, बोले—"हाय यह बिल्ली का दूध किसलिए ?"

ठाकुर मनवन्तसिंह ने बड़ी गम्भीरता से कहना शुरू किया—"हुजूर, हमारे रेकार्ड-आफिस में चूहे बहुत हैं, जो करीब के जंगल से आ जाते हैं और रेकार्ड बरबाद करते रहते हैं, इसलिए सरकारी तौर पर हमने एक बिल्ली पाल रखी है, जो उन चूहों से हमारे रेकार्ड को बचाती रहती है, उसके दूध पर नौ रुपये मासिक खर्च होते हैं, बस।"

उपाध्याय जी ने एकदम गुस्से से भड़क कर कहा—"मगर जब सात रेकार्ड क्लर्क, रेकार्ड को सुरक्षित रखने के लिए नियुक्त हैं तो फिर इस बिल्ली की क्या जरूरत है ? नौ रुपये।—नौ रुपये!!—हैरत है ठाकुर साहब। आप इतने बुद्धिमान और अनुभवी होकर यह नहीं देख सकते कि आपकी आँखों के सामने राष्ट्र की गाढ़ी कमाई का कीमती धन एक जंगली बिल्ली को दूध पिलाने में खर्च हो रहा है ?"

ठाकुर साहब ने शर्म से सर झुका लिया। उपाध्याय जी निर्णयात्मक स्वर में बोले—"मैं हुक्म देता हूँ कि इस बिल्ली को आज ही से डिसमिस कर दिया जाय।"

"बहुत बेहतर।" ठाकुर मनवंतसिंह फाइल को बन्द करते हुए बोले।

यकायक दरवाजे के करीब से एक आवाज़ आई और उपाध्याय जी अपनी कुर्सी से उछल पड़े—"म्याऊँ" दरवाजे पर एक बिल्ली खड़ी थी और आश्चर्यचकित नेत्रों से मन्त्री महोदय को देख रही थी।

पत्नी-प्रेम

मान्यवर सम्पादक जी !

क्षमा चाहता हूँ कि इस बार आपके दीपावली अंक के लिये लेख न भेज सका। बात यह हुई कि जब पहली बार आपका पत्र आया, जिसमें आपने लिखा था कि इस वर्ष आपने अपने कुछ पुराने लिखने वालों को एक ही विषय पर लेख लिखने के लिये राजी किया है। और वह विषय है, 'पत्नी अपने पति की दृष्टि में' तो मुझे सहसा हँसी आ गई। संयोग से मेरी पत्नी भी उस समय मेरी कुर्सी के पीछे खड़ी मेरे पत्रों की निगरानी कर रही थी। क्योंकि मुझे डाक से लड़कियों के बहुधा पत्र आते रहते हैं, इसलिये पत्नी द्वारा पत्रों की देख-भाल से मेरे लिये जान बचानी मुश्किल हो जाती है। खैर, वह एक अलग विषय है। उस पर कभी अवकाश मिलने पर बात होगी। इस समय तो मैं आपको यह बता रहा था कि आपका पत्र पढ़कर मुझे सहसा हँसी आ गई। तो मेरी पत्नी ने पूछा,

"क्यों हँसे ?"

मैंने कहा, "यह एक सम्पादक महाशय हैं जो पत्नी पर पति की दृष्टि से लेख माँगते हैं।"

किसकी पत्नी पर किसके पति की दृष्टि से लेख मांगते हैं ?" उसने तुरंत पूछा।

मैंने कहा, "यदि किसी दूसरे की पत्नी पर लेख माँगा होता—"

"जब तो तुम तुरंत लिख देते।" वह बीच ही में बात काट कर बोली, "जरा ठहरो। मुन्ना रो रहा है। मैं उसको दो तमाचे लगाकर अभी आकर तुमसे बात करती हूँ।"

जब यह वापस आई तो मैंने कुर्सी जरा परे खिसका ली। वह बोली, "हाँ अब बताओ?"

मैंने कहा, "वास्तव में मुझे तुम पर लेख लिखना है, अपने दृष्टिकोण से। इसलिये मैं हँस रहा था कि भलेमानस सम्पादक महोदय इतना भी नहीं जानते कि विवाह के पश्चात् पति का दृष्टिकोण भी वही हो जाता है जो पत्नी का होता है। फिर वह बेचारा जो कुछ भी देखता है, अनुभव करता है, बात करता है, आता है, जाता है, खाता है, पीता है, चलता है, बैठ जाता है, बैठ कर फिर चलने लगता है यह सब कुछ उसकी पत्नी के दृष्टिकोण से होता है। अलबत्ता विवाह के पश्चात् प्रायः समाप्त हो जाता है। केवल दृष्टिकोण रह जाता है, कुछ समय के बाद दृष्टि भी चली जाती है और केवल कोण रह जाता है।"

मेरी पत्नी ने बड़ी गंभीरता से पूछा, "क्या यह सम्पादक महोदय कुवारे हैं?"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "तुमने कैसे जाना?"

उसने मेरे प्रश्न का उत्तर न दिया। बोली, "शक्ल सूरत कैसी है?"

"देखने में तो अच्छा है। परन्तु—।"

"कमाता क्या है?"—वह मेरी बात अनसुनी करके बोली।

"तीन सौ रुपये मिलते हैं।

"तो बहुत हुए। तुमने तो किसी महीने मुझे ढाई सौ रुपये लाके नहीं दिये। तुम अपनी लड़की के विवाह की बात उससे क्यों नहीं करते हो?"

"भली मानस।" मैंने विस्मयपूर्वक कहा, "वह लेख माँग रहा है। मैं उसे अपनी लड़की दे दूँ। इस तरह से तो वह साल में तीन-तीन बार विशेषांक निकालेगा।"

"मजाक मत करो" वह गुस्से से बोली, "घर में जवान-जहान लड़की कुवारी बैठी है और तुम्हें उसकी सुध नहीं है। जब देखो बेकार

कलम चलाया करते हो। मेरे तो भाग्य ही फूट गये हैं।" वह अपने आँसू पोंछते हुए मेरे कमरे से बाहर चली गई।

दो तीन दिन तक मेरा मूड बिगड़ा रहा। कई बार आपका लेख लिखने को बैठा परन्तु कलम चली ही नहीं। चौथे दिन आपकी सहायक संपादिका मुझसे लेख माँगने आ गई। मेरी समझ में यह बात नहीं आती है कि जब आप एक नौजवान और सुंदर लड़की को सहायक संपादिका रखते हैं तो उसे विवाहित लेखकों के घर क्यों भेजते हैं? आपकी असिस्टेंट ने गहरे ऊदे रंग की कंजीवरम की बढ़िया साड़ी पहन रखी थी। हाथ में शांतिनिकेतन का चमड़े का बैग था। कानों में पुखराज के बुंदे थे। आप उसको वेतन क्या देते हैं?

मैंने लेख तो लिखा नहीं था, इसलिये वह बहुत समय तक मेरे पास बैठी रही और मैं बहुत देर तक उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसके भाग्य की लकीरें देखता रहा। आपको शायद मालूम नहीं है, मैं बहुत अच्छा ज्योतिषी हूँ और लड़कियों का हाथ तो बहुत अच्छा देखता हूँ।

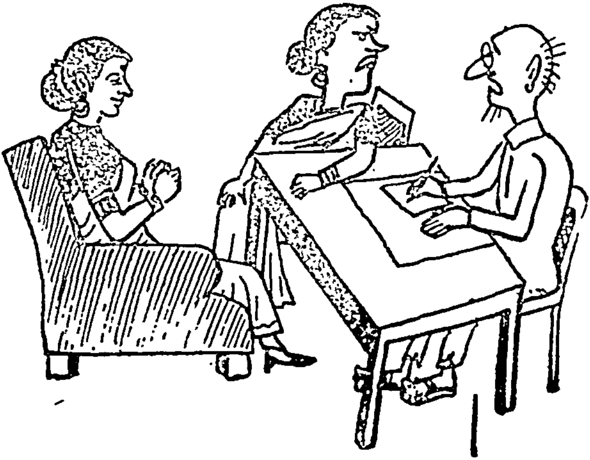

थोड़े समय बैठकर वह चली गई। इसी बीच मेरी पत्नी ने पर्दे के पीछे से तीन-चार बार झांक भी लिया था। जब वह चली गई तो उसने पूछा—"यह कौन थी? क्या थी? किस लिये आई थी?"

मैंने कहा, लड़की थी, सहायक सम्पादिका थी, वह लेख मांगने आई थी।"

"तुमने लिख कर दे दिया?"

"लिखा ही नहीं था, क्या देता?"

"हां, हां। तुम मुझ पर क्यों लिखोगे?" वह झल्लाकर बोली, "मैं तुम्हारी कौन होती हूँ। तुम बाहर की जाने कैसी-कैसी गई-गुजरी स्त्रियों पर लिखते रहते हो, परन्तु घर की स्त्री पर, अपनी पत्नी पर, तुमसे क्यों लेख लिखा जायगा? मैं सब समझती हूँ, आने दो उस चुड़ैल को दुबारा। मैं उसकी चुटिया न काट के फेंक दूं।"

वह जोर-जोर से रोने लगी। मैंने अपनी कुर्सी से उठकर उसे प्यार किया, बहलाया, पुकारा, सम्भाला। बड़ी मुश्किल से उसने अपने आंसू रोके। उन्हें पोंछते-पोंछते बोली—

"क्यों तुम मुझसे प्यार करते हो न?"

"संसार में सबसे ज्यादा।"

"मुझ पर लेख लिखोगे न?"

"अवश्य।"

"अच्छा-सा लेख?"

"बहुत बढ़िया लिखूंगा।"

अब वह आंसुओं के बीच मुस्करा दी। उनकी आंखें खुशी में चमकने लगीं। बोली—

"मेरा एक चित्र भी छाप देना।"

"चित्र?"

"क्यों?" वह एकदम भड़क कर बोली "क्या मैं तुम्हें अच्छी नहीं लगती हूँ?"

"बहुत अच्छी लगती हो डारलिंग।"

"तो फिर ?"

"बहुत अच्छा, चित्र भी छप जायेगा।" मैंने धीरे से कहा।

"तो चित्र खिचवाने कब चलोगे ?"

"आज ही चलूंगा।"

वह बहुत प्रसन्न हुई। फिर सहसा उदास हो गई। बोली, "लेकिन मेरे पास तो कोई साड़ी ही नहीं है।"

मैंने कहा—"अभी पिछले सप्ताह।"

वह बोली, "वह तो पिछले सप्ताह की है। नई तो नहीं है।"

"बेशक नई तो नहीं है" मैंने स्वीकार किया।

वह बोली—"मैं नई साड़ी में चित्र खिचवाऊँगी।"

मैंने उसे टालने के अभिप्राय से कहा, "इतना टन्टा क्यों करती हो ? वह अपना पुराना चित्र भेज दो न, जो बनारसी साड़ी में है।"

"वाह। वह तो विवाह का चित्र है। बाईस वर्ष हो गये। तुम भी क्या बात करते हो ?"

मैंने कहा "अच्छा तो बाजार से साढ़े सत्रह रुपए की वायल की साड़ी ले लेंगे। आजकल फूलदार वायल की बहुत बढ़िया साड़ियां आई हैं।"

वह चीख कर बोली, "मैं वायल नहीं लूंगी। मैं तो कंजीवरम की साड़ी लूंगी। वैसी ऊदे रंग की जैसी उस कलमुंही ने पहन रखी थी।"

"कंजीवरम की साड़ी ?"—मेरा हृदय अंदर ही अंदर बैठने लगा। घटिया से घटिया कंजीवरम भी अस्सी-नब्बे से कम नहीं आती है।

"हां कंजीवरम की साड़ी लूंगी और शांतिनिकेतन वाला वही बैग जो उस छिनाल ने ले रखा था। और वैसे ही सैंडिल और वैसा ही ब्लाऊज। और कान के वैसे ही बुंदे। और मैं टैक्सी में बैठकर चित्र खिचवाने जाऊँगी। अभी से कहे देती हूँ। बस मैं नहीं जाऊँगी। अभी से कहे देती हूँ। नहीं तो मेरे सारे कपड़े खराब हो जायेंगे, हां !"

इस घटना के तीन-चार दिन के बाद आपकी सहायक संपादिका एक नई पोशाक पहन कर मेरे घर आई, तो मेरी पत्नी ने कह दिया कि मैं घर पर नहीं हूँ। उसके तीन-चार दिन बाद जब वह फिर आई तो मैं पूना गया हुआ था। उसके बाद अहमदाबाद गया था, फिर नासिक गया था। उसके बाद वह नहीं आई। उसने सोचा होगा—नासिक जाके कौन लौटता है? तीर्थधाम है जो।

लेख तो मैं लिख नहीं सका। पत्नी का चित्र आपको भेज रहा हूँ। विज्ञापनों के किसी पृष्ठ पर छाप दीजियेगा। साथ ही बिल भी भेज रहा हूँ। विवरण यह है:

१—कजीवरम की साड़ी	—	एक सौ पचीस रुपये
२—पेटीकोट सिल्क	—	इक्कीस रुपये
३—सैंडिल	—	साढ़े पंद्रह रुपये
४—ब्लाऊज : बैंगलोर आर्ट	—	अट्ठारह रुपये, दस आने
५—बुन्दे	—	एक सौ पैंतीस रुपये
६—टैक्सी	—	नौ रुपये नौ नये पैसे
७—सिनेमा	—	छ रुपये
८—दही वड़े की चाट	—	डेढ़ रुपये
कुल टोटल	—	तीन सौ इकत्तीस रुपये-दस आने-नौ नये पैसे

बिल की अदायगी तुरत होनी चाहिये। क्योंकि मैंने ये रुपये एक पठान से कर्ज लिये हैं, वर्ना आपको मेरी मरहम-पट्टी का खर्चा भी देना पड़ेगा। इसलिये बिल तुरत भिजवा दीजिये और भविष्य में लेख माँगते समय लेखक की जेब का ख्याल रखिये।

केवल आपका

—कृष्णचन्द्र

हम तो मोहब्बत करेगा

शुरू से ही मुझे दो चीज़ें बहुत पसंद हैं, सुन्दर जूते और सुन्दर स्त्रियाँ। इन दोनों में ऐसा कौन-सा मनोवैज्ञानिक संबंध है कि यह दोनों चीज़ें मेरे मस्तिष्क में इकट्ठी आती हैं, यह तो मैं नहीं कह सकता, इतना जानता हूँ कि अगर मेरे पांव में खूबसूरत जूते न हों तो मुझे हरदम एक हीनता का अनुभव-सा होता है, और यदि मेरी बगल में खूबसूरत औरत न बैठी हो तो मुझे अपने चारों तरफ की दुनियाँ अंधेरी-सी मालूम होने लगती है।

लेक़िन यह तो कोई ज़रूरी नहीं है कि जो चीज़ आपको पसंद हो वह आपको मिल भी जाये। बहुत से लोगों को हवाई जहाज़ में यात्रा करना पसन्द होता है लेकिन ज़िन्दगी भर वे हवाई जहाज़ में यात्रा नहीं कर सकते। बहुत से लोगों को हीरे की अंगूठी पहनने का शौक़ होता है लेकिन उन्हें चाँदी का एक छल्ला तक नसीब नहीं होता। इसी तरह बहुत से लोग पाँव में जूता पहनना चाहते हैं, लेकिन वह जूता पड़ता उनके सर पर है। इसी का नाम दुनिया है और मैं इसी दुनिया में रहता हूँ और इसी वजह से अपनी मनचाही चीज़ कभी हासिल नहीं कर सकता।

लेकिन हासिल न करने पर भी पसंद तो अपनी जगह पर रहती है। और इसके लिये मनुष्य कोशिश भी करता है और यही कोशिश मुझे एक बार खींचकर श्री मदनगोपाल के घर ले गई। श्री मदन-गोपाल अधेड़ अवस्था के अंडर-सेक्रेटरी हैं। बारह-सौ रुपया तनख्वाह पाते हैं—पचास वर्ष की आयु होने को आई, लेकिन अभी तक शादी नहीं की इसीलिए हमेशा खूबसूरत जूते पहनते हैं और खूबसूरत

औरत के संपर्क मे रहते हैं। उनका घर चूंकि मेरी गली मे है और उनकी छोटी-सी आस्टिन गाडी अक्सर मेरे घर के पास खड़ी रहती है इसीलिए मुझे उनकी रंगीन-मिजाजी को देखने का तजुर्बा भी है और बहुत पास से है।

एक दिन मैं हिम्मत करके इतवार के दिन उनके घर चला ही गया और उनसे अपनी विपदा कह डाली। उन्होने बड़े ध्यान मे मेरी बात को सुना, फिर सोच-सोचकर बोले—

"मेरे ख्याल से आपको प्रेम करना चाहिए।"

"जूते से?"

"नहीं औरत से," वह मुस्करा कर बोले—"किसी भी सुन्दर औरत से प्रेम करना चाहिए।"

"मगर हमारे मुहल्ले मे तो कोई खूबसूरत औरत है नहीं।"

"आप समझे नही।" मदनगोपाल जी मुझे समझाते हुए बोले—"जब आप किसी औरत से प्रेम करने लगेंगे, फिर वही औरत आपको सुन्दर मालूम होने लगेगी।"

"मगर फिर इन जूतों का क्या होगा?"

वह बोले, "उसकी फिक्र न कीजिएगा—औरत के आने से जूते खुद-ब खुद आ जाते हैं।"

यह बात भी ठीक थी, लेकिन आज तक किसी ने मुझे समझाई नही थी। अब मदनगोपाल जी ने मुझे बताया तो मेरी समझ मे आया और मैंने उन्हे उस्ताद मान लिया। दूसरे ही दिन मैं एक सूद-खोर पठान से एक-सौ रुपया कर्ज लेकर आया। थोड़ी-सी मिठाई खरीदी, थोड़े-से फूल बनाये, यह सब-कुछ उनके चरणों मे रखकर बोला—

"आज मुझे अपना शागिर्द बना लीजिए और मुझे प्रेम करना सिखा दीजिए।"

मदनगोपाल जी ने मेरी भेंट स्वीकार कर ली, मेरे सर पर बड़े कृपापूर्वक हाथ फेरकर बोले—"बेटा, प्रेम भी एक पेशा है, जैसे

लोहार का एक पेशा है, मोटर मैकेनिक का एक पेशा है—प्रेम भी एक विद्या है, और प्रत्येक विद्या की दो डालें होती हैं : एक थ्योरी, दूसरी तजुर्बा। विद्या उस समय तक सम्पूर्ण नहीं होती जब तक मनुष्य उसकी थ्योरी न समझ ले और बाद में तजुर्बे से उसे परख न ले।"

"इसीलिए तो मैं आपके पास आया हूँ गुरुदेव। मुझे प्रेम का ज्ञान दीजिए।"

"सुनो।" मदनगोपाल जी बड़ी गंभीरता से बोले—"प्रेम करने की दो तरकीबें हैं, एक तो यह कि आपके पास पैसा हो तो प्रेम की बहुत सी कठिनाइयाँ अपने-आप हल हो जाती हैं—क्योंकि इस दुनिया में जितनी सुन्दर स्त्रियाँ हैं, बहुत ही कोमल और नाजुक हैं। और सुन्दर वस्तुओं का अनुभव खास तौर पर प्रकृति ने उनके मन में समा दिया है। प्रत्येक सुन्दर स्त्री सुन्दर वस्त्रों तथा वस्तुओं को पसंद करती है, जैसे जड़ाऊ सोने का हार—कैडिलैक की सुन्दर गाड़ी, उम्दा सजा-सजाया सुन्दर ड्राइंग रूम, सोने के तारवाली साड़ियाँ—अगर आप स्त्री को यह सुन्दरता दे सकें तो वह बहुत जल्दी आपकी हो जाएगी।"

"मदनगोपाल, जी" मैंने बड़ी निराशा के साथ कहा, "मैं एक गरीब लेखक हूँ। महीने में सौ-पचास रुपया मुझे पत्रिकाओं में लेख लिखकर मिल जाते हैं—इसके अलावा मैं एक अखबार का सहकारी संपादक भी हूँ। एक-सौ-बीस रुपए मुझे वहाँ से मिलते हैं, इस पर मेरी बूढ़ी माँ है, तीन कुंवारी बहनें हैं, दो विधवा मौसियाँ हैं,—जिनके सात नन्हें-नन्हें बालक हैं—कुछ समझ में नहीं आता। एक साड़ी तक तो खरीद नहीं सकता, मोटर गाड़ी कहाँ से खरीदूँगा?"

मदनगोपाल जी ने धीरे से सोच-सोचकर सर हिलाया, फिर बड़े गंभीर स्वर में बोले, "तब तो तुम्हारी तरकीब ठीक रहेगी।"

"वह क्या है?"

"इसे प्रेम की दूसरी तरकीब कहते हैं। जन-साधारण की परि-में इसे बिना-पैसे-का प्रेम कहा जाता है—लेकिन इसमें बड़े

अभ्यास की आवश्यकता है और बराबर तजुर्बा करते रहने की जरूरत है।"

"मैं दिन रात मेहनत करने के लिए तैयार हूँ। आप तरकीब तो बताइए।"

"इस तरकीब की थ्योरी यह है कि स्त्रियाँ सुन्दर आभूषणों, सुन्दर स्वभाव रखने वाले मर्दों को भी पसंद करती हैं। इसके अलावा यदि वह पुरुष खुद भी सुन्दर हो तो क्या कहना? मगर मैं देख रहा हूँ कि आपका साँवला चेहरा, चेचक के दाग, गंजा सिर और ठिगना क़द इस सिलसिले में आपके लिये बहुत सी कठिनाइयाँ पैदा कर देंगे।"

मैंने कहा—"मैं किसी ठिगनी कदवाली स्त्री से प्रेम कर लूँगा। मगर आप तरकीब तो बताइए?"

मिस्टर मदनगोपाल ने अपनी आँखें बंद कर ली, कुछ मिनट तक वे किसी गहरे ध्यान में डूबे रहे। जब उन्होंने आँखें खोलीं तब उनके चेहरे पर मुस्कराहट पैदा हो गई थी। प्रसन्न होकर बोले—"तरकीब समझ में आ गई है, मेरे ख्याल में आप मिस विमला से प्रेम कर दीजिए।"

"वह जो कालेज में पढ़ती है और बेहद नफासत-पसंद है।"

"जी हाँ, आपने गौर नहीं किया होगा, वह उम्दा खुशबू की प्रेमी है। वह पैरिस की उम्दा से उम्दा खुशबूएँ इस्तेमाल करती है। मगर मैं जानता हूँ उसकी मनपसंद खुशबू क्या है—ईवनिंग-इन-पैरिस। इस सैंट पर तो वह जान देती है। आप ऐसा कीजिए कि कल बाजार से यही सैंट लाइए, उसे अपने रूमाल पर लगाइए और रूमाल को जेब में रखकर गली के नुक्कड़ पर उसका इन्तज़ार कीजिए। जब वह कालेज जाने के लिए गली से निकले तो आप उसकी तरफ देखकर मुस्कुराइए; हो सकता है वह न मुस्कुराए, बहरहाल आप उसकी परवाह न कीजिए। आप मुस्कुराकर उनके पास से निकल जाइए और आगे निकल कर जाइए। कुछ कदम आगे चलकर अपना

रूमाल जेब से निकाल कर जमीन पर गिरा दीजिए। इस तरह गिरा-इए जैसे आपने जान-बूझकर रूमाल नहीं गिराया, बल्कि···खुद गिरा है। रूमाल को गिरता देखकर मिस विमला यकीनन आपका रूमाल उठा लेगी, और सुगंध उसके नथुनों में पहुँचेगी। आप जरा ठिठक कर खड़े हो जाइए—वह आपको आवाज़ देगी, 'मुड़कर देखिए तो, आपका रूमाल···ले लीजिए'। नफासत-पसंद भद्र महिला जरूर आपसे प्रश्न करेगी—क्या आपको भी इवनिंग इन पैरिस पसंद है? इस पर खुशबुओं पर बहस चल निकलेगी और रूमाल की खुशबू से बढ़ते-बढ़ते मामला दिल की खुशबू तक पहुँच जाएगा।"

मैंने खुशी से उछलकर मदनगोपाल जी का हाथ पकड़ लिया और उसे चूमते हुए बोला—"वाह-वाह, उस्ताद—क्या तरकीब बताई है, मैं कल सुबह ही इस पर अमल करूँगा।"

"और कल शाम ही को मुझे इसकी रिपोर्ट दे देना, फिर मैं तुम्हें आगे की तरकीब बताऊँगा।"

दूसरे दिन शाम को जब मैं मदनगोपाल जी के घर पहुँचा, तो उन्होंने मेरे चेहरे ही से अन्दाज़ा लगा लिया कि कहीं पर कोई-न-कोई गड़बड़ है। मेरे अन्दर आते ही उन्होंने पूछा—

"क्या हुआ? मुस्कुराना भूल गये थे?"

"जी नहीं, मुस्कुराया तो था—मगर मालूम नहीं क्या हुआ। संभवतः कुछ ऐसी झिझकती हुई रोनी-सी मुस्कराहट होगी कि उसे देखकर मिस विमला को गुस्सा आ गया। उन्होंने नफरत से मुँह फेर लिया और जल्दी-जल्दी आगे निकल गयीं।"

"मूर्ख, मैंने तुम्हें आगे निकल जाने को कहा था।"

"सुनिये तो, वह इतने तेज-तेज कदम उठाने लगीं कि मुझे उनका पीछा करना दुश्वार हो गया। खैर, साहब, ज़िन्दगी में मैं भी इस प्रकार तेज़ कब को चला था? किसी न किसी तरह भाग-दौड़कर उनके सामने से निकल गया और फिर बड़ी होशियारी से मैंने अपना रूमाल भी ज़मीन पर गिरा दिया और उन्होंने रूमाल को गिरते देख-

कर उसे उठा भी लिया !"

"शाबाश !" मदनगोपाल जी मेरी पीठ ठोककर बोले "शाबाश !"

"सुनिये तो, उसके बाद—उन्होंने मेरे रूमाल को एक पल भर के लिए देखा और जल्दी से मुँह बनाकर उसे जोर से पास की गंदी नाली में फेंक दिया !"

"एँ—यह क्यों ? तुमने खुशबू नहीं लगाई थी ?"

"खुशबू तो लगाई थी, जनाब, मगर दरअसल मुझ में यह बुरी आदत है कि मैं रूमाल में ही थूकता हूँ। और उसी में अपना बलगम साफ करता हूँ। मिस विमला के हाथ में मेरा बलगम लग गया था—उस पर उन्होंने मुझे गालियाँ सुनाई—गधा, मूर्ख, बदतमीज ! और जाने क्या-क्या कहा, मैं तो वहाँ से भाग आया।"

मदनगोपाल ने अपना माथा पीट लिया। "मुझे क्या मालूम था कि तुम अपने गन्दे रूमाल में खुशबू लगाओगे। अनाड़ी हो न आखिर —खैर, अब क्या हो सकता है ? मिस विमला तो तुम्हारे हाथ से गई—अब तुम जिन्दगी भर उससे प्रेम नहीं कर सकते।"

मैंने मदनगोपाल जी के पैर पकड़ लिये।

"नहीं, ऐसा मत कीजिये, मैं तो प्रेम करूँगा, भगवान के लिये मेरी हालत पर रहम कीजिए, मुझे प्रेम करना सिखा दीजिये।"

मदनगोपालजी ने जब मुझे इस तरह गिड़गिड़ाते हुए देखा तो उन्हें शायद मेरी हालत पर दया आ गई। अपने गुस्से पर काबू पाकर बोले—"खैर, कोई बात नहीं, अब मैं प्रेम करने की तीसरी तरकीब बताता हूँ।"

"प्रेम की तीसरी तरकीब ? जल्दी बताइये, उस्ताद। और तरकीब के इस्तेमाल की विधि भी बताइये।"

मदनगोपाल जी बोले, "इस तरकीब को फूलों वाला प्रेम कहते हैं, अर्थात् इसमें फूलों के जरिए प्रेम किया जाता है। इसके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम पहले एक जगह तलाश करो जहाँ औरत

अकेली बैठी हो और सामने फूलों की क्यारी खिल रही हो या आस-पास कहीं पर फूल हों औरत बिल्कुल अकेली हो तथा अपने ध्यान में मग्न हो। उस समय तुम फूलों की क्यारियों से एक फूल तोड़कर उसके पास ले जाओ और उसे पेश कर दो। बड़ी कोमलता के साथ और बहुत ही इज़्ज़त तथा रख-रखाव के साथ। फूल पेश करते समय कोई सुन्दर-सा वाक्य कहो—।

जैसे—जैसे—'लीजिए, फूल के लिए फूल हाज़िर हैं'। मतलब यह कि कोई अच्छी बात कहिये—जिससे फूलों के साथ-साथ स्त्री की सुन्दरता की बड़ाई का पहलू भी निकलता हो। औरत शर्माएगी, मुस्करायेगी, लेकिन आपका शुक्रिया ज़रूर अदा करेगी। बस—वहां से बात चल निकलेगी, मौका मुनासिब समझकर बात को आगे बढ़ा ले जाओ और ठंडी-ठंडी आहें भरना शुरू कर दो। जब लड़की आपसे आपकी ठण्डी आहों की वजह पूछे, तो उसे साफ बता दो कि उसकी वजह "सिर्फ तुम हो। सिर्फ़ तुम हो और सिर्फ तुम्हीं से मुझे प्रेम है।"

"आ हा हा हा, क्या अच्छी तरकीब बताई है मदनगोपाल जी न गाड़ी की जरूरत न साड़ी की, केवल कुछ फूल और कुछ मीठी बातें ! अब की मैं जरूर ही कामयाब हो जाऊँगा अपने प्रेम में, देख लीजिएगा। अब आपका चेला असफल नहीं लौटेगा। मैं कल ही इस तरकीब को आजमाता हूँ। मगर—"

"मगर क्या—?"

मेरा चेहरा एकदम उदास हो गया, मैंने धीरे से कहा, तरकीब बताई है तो लड़की भी तो बताइये। जिस पर मैं इसे आजमाऊँ।'

खूब सोच समझ कर मदनगोपाल जी ने मुझे बताया—"वह रेलवे गार्ड की लड़की मेरी डिसोजा है ना, बड़ी चपल और शोख है, हर समय अपने कटे हुए बालों में फूल लगाये रहती है। बड़ी रोमांटिक लड़की है। यह तरकीब तुम उस पर आजमाओ और कल शाम को मुझे इसकी रिपोर्ट दो।"

मैं अपने उस्ताद के हाथ चूमकर जल्दी से उधर रवाना हो गया।

लेकिन दूसरे दिन जब मैं शाम को मदनगोपाल जी के घर पहुँचा तो वह मेरा उदास और उतरा हुआ चेहरा देखकर खुद भी उदास हो गये। बड़ी ही बेदिली से पूछने लगे—"क्या हुआ ? लड़की अकेली नहीं मिली ?"

"जी नहीं, मेरी डिसोजा बिल्कुल अकेली बैठी थी—और अपने मकान के पिछवाड़े। तीसरी पहर का सुहावना समय था और वह बिल्कुल अकेली थी। वहाँ पर गन्दे, मोर्चा लगे हुए टीन के डिब्बे, पुराने ड्रम, लोहे के सड़े-गले पाइप···और बहुत-सा कूड़ा कर्कट जमा था। वातावरण एकदम मनमोहक और तरह-तरह की खुशबुओं से भरा हुआ था।"

"तो फूल न होंगे वहाँ पर, पिछवाड़े में फूल कहाँ से आयेंगे ?"

"जी नहीं, फूल भी थे। पिछवाड़े की दीवार से लगी एक झाड़ी पर बहुत से सफेद लम्बे-लम्बे बिलमनुमा फूल थे।"

"फिर तुमने क्या किया ?"

"फिर क्या हुआ ?"

"कुछ नहीं, वह चुपचाप बैठी रही। कभी पैर पटकती थी, कभी बाल झिटकती थी। जब मेरी समझ में कुछ न आया तो मैंने ठण्डी-ठण्डी आहें भरना शुरू कर दिया। इस पर उसने घबरा कर मेरे चेहरे की तरफ देखा। उसने मेरे चेहरे पर दुख की छाया को देखकर पूछा—

"क्यों जी, क्या आपके पेट में दर्द होता है ?"

मैंने घबराकर कहा—"जी हाँ।"

इस पर वह बोली, "मेरे ख्याल से आप फौरन एक जुलाब ले लीजिये।"

यह कह कर वह ज़ोर-ज़ोर से हँसी और हँसते हुए अपने घर के अन्दर भाग गई, उस्ताद !

यह कहते समय उसके चेहरे पर ऐसी घृणा थी कि मैं तो ज़िन्दगी भर उस से आँख न मिला सकूँगा, मैंने शर्म से अपना सर झुका लिया।

"चले जाओ !" मदनगोपाल जी गुस्से से बोले "मेरी आँखों से दूर हो जाओ !"

"नहीं, उस्ताद ! भगवान के लिए मुझे बचा लीजिये, किसी भी तरकीब से मुझे प्रेम करना सिखा दीजिये नहीं तो मैं तो मर जाऊँगा।" यह कह कर मैं दहाड़ें मार-मार कर रोने लगा।

मुझे रोते देखकर उनके दिल में फिर दया आई—मेरे आँसुओं को पोंछ कर बोले—"अब मैं तुम्हें प्रेम करने की चौथी तरकीब बताता हूँ। मगर खबरदार, जो तुमने अब की इसमें ज़रा भी गलती की।"

मैंने अपने कानों को हाथ लगाया, "अब कभी गलती न करूँगा उस्ताद। मेरी गर्दन काट लेना अगर रत्ती भर इधर से उधर हो जाऊँ। जिस तरह तुम कहोगे, उसी तरह करूँगा—बिल्कुल उसी तरह।"

मदनगोपाल जी बोले, "यह प्रेम की चौथी तरकीब है और इसे शक्तिशाली प्रेम कहते हैं।"

"शक्तिशाली प्रेम ?"

"हाँ, इसमें मनुष्य को अपनी बुद्धि से कोई काम नहीं लेना पड़ता, तुम्हारे लिए यह तरकीब सबसे अच्छी रहेगी।"

"जल्दी बताइये, जल्दी बताइये मेरे माननीय गुरु, मेरे पूज्य उस्ताद।"

"इसमें चिन्ता की अधिक ज़रूरत नहीं है। एक लड़की छाँट लो जो तुम्हें सबसे अधिक पसन्द है, उसे अकेला कहीं देखो फिर उस के पास जाकर बड़ी दिलेरी से उसका हाथ पकड़ लो, यदि वह हाथ छुड़ाये तो तुम दोनों हाथों से कस कर पकड़ लो, और अगर इस पर भी वह तुम्हारी जकड़ से निकल जाने की कोशिश करे तो उसे ज़ोर

के साथ अपने सीने से चिपका लो। इस पर अगर वह चीखे-चिल्लाये तो अपने होंठ उसके होंठ पर रख कर उसका मुँह बन्द कर दो। इस पर भी यदि वह बाज न आए और अपने बचाव की कोशिश करे तो जोर से एड़ी मार कर जमीन पर धम्म से गिरा दो। बस, प्रेम तुम्हारा कामयाब है। क्योंकि हर औरत मर्दानगी को पसन्द करती है—"

क्या यह बताने की जरूरत है कि मैंने यह तरकीब भी आजमा देखी। और अब मैं यह कहानी जेल की सलाखों के पीछे से लिख रहा हूँ। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। मेरा इरादा है कि मैं छः माह की कैद काट कर फिर अपने उस्ताद की सेवा में उपस्थित होऊँगा और उनसे प्रेम करने की पाँचवीं तरकीब अवश्य पूछूँगा।

हमारे लोकप्रिय उपन्यास

	कृश्न चन्दर
हम तो मोहब्बत करेगा	ओमप्रकाश शर्मा
सांझ का सूरज	अल्वर्टो मोराविया
यौवन की प्यास	अल्वर्टो मोराविया
रोम की नगरवधू	क्षितीश
स्वेतलाना	गुलशन नन्दा
घाट का पत्थर	कुशवाहा कान्त
मदभरे नयन	कुशवाहा कान्त
जवानी के दिन	कुशवाहा कान्त
नागिन	गुरुदत्त
अवतरण	गुरुदत्त
आखिरी किस्त	दत्त भारती
आकाश खाली है	कुप्रिन
ये चकले वालियां	यशपाल
मनुष्य के रूप	शंकर
एक दो तीन	मुंशी प्रेमचन्द
वरदान	शौकत थानवी
नीलोफर	जैनेन्द्र व ऋषभचरण जैन
तपोभूमि	भगवतीप्रसाद वाजपेयी
मुझे मालूम न था	आचार्य चतुरसेन
नवाब ननकू	उपेन्द्रनाथ अश्क
एक रात का नरक	के० एम० मुंशी
लोपा मुद्रा	शंकर सुल्तानपुरी
पत्थर के सनम	माणिक बन्द्योपाध्याय
स्वयंसिद्धा	

सुबोध पॉकेट बुक्स

४४०८ नई स ... ल्ली-६